बालब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज कृत

हिन्दी भाषानुवाद सहित.

# निशीथ सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता-दक्षिण हैदराबाद निवासी.

राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के [illegible] पूज्य श्री खूबा ऋषिजी [illegible] श्री केवल [illegible]

[illegible] के पूज्य [illegible]



परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य-पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज !

आपश्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वी-कार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर-सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महा-त्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

[illegible]-अमोल ऋषि

**आभारी-महात्मा**

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!
इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री शारीरिक शुद्ध भाग, ईटी.एटका और समय देकर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे.

आपका अमोल ऋषि

**हिन्दी भाषानुवादक**

बालब्रह्मचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बड़े साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले काम का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषा सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुये हम आप के बड़े आभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

आपश्री प्रमो ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल्ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाको बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, सर्वगीसे वार्तालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से उत्तक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बहल हक मुनिवरों का भी बड़ा उपकार है.





पंजाब देश पावन कर्ता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी.तपस्वीजी माणकचन्दजी,कवीवर श्री अमी ऋषिजी.सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी.पं.श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी.प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी.गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी योगजी सवित्र भंडार, भीना सरवाले कनीराम्जी बहादरमलजी बाँठीया, कीवडी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

सपाडेज्ज वा, साइज्जइ ॥२॥ जे भिक्खू अंगादाणं-संवाहिज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा, संवाहंतं वा, पलिमद्दंतं वा साइज्जइ ॥३॥ जे भिक्खू अंगादाण-तेल्लेण वा, घएण वा, वसा-एण वा, णवणीए वा, अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगंतं वा मक्खंतं वा साइज्जइ ॥४॥ जे भिक्खू अंगादाण-कक्केण वा, लोद्धेण वा, पउमचुण्णेण वा, ण्हाणेण वा, सिणाणेण वा, चुण्णेहिं वा, वण्णेहिं वा, उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा, उव्वट्टंतं वा, परिवट्टंतं वा साइज्जइ

या छोत अंदर प्रवेश कर, अंगुलीयों से ग्रहण कर या अंगुली अंदर प्रवेश कर, लोह प्रमुख की नली में प्रवेश कर या ऐसा प्रकार की दूसरी अंदर प्रवेश कर, मसलावे-हलावे, दूसरा हलाता हो उसे अच्छा जाने * ॥ २ ॥ जो साधु अंगादान का मर्दन करे वारम्वार मर्दन करे, मसलते मर्दन करने को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु अंगादान को पुरुष के चिन्ह को लेकर, घृत कर, चर्बी कर, मक्खन कर अभ्यं-गन करे मसले, मसलकर, मर्दन करे, ऐसे करते दूसरा करता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु अंगादान को लोद्रक कर लोद्र कर पद्मचूर्ण कर नया केशर कर. पीठी करे स्नान करावे पकावे, सुगंधी चूर्ण का अबीरादि वर्ण का उगटना करे, दूसरा करता हो उगटना करता हो उसे अच्छा जाने

* [illegible] इस प्रकार, वे सब काम करने से हस्त कर्म के दोष होते हैं.

सूत्र

॥ ५ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोइज्ज वा, उच्छोलेतं वा, पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-णिच्छलेइ, णिच्छलंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-जिग्घइ, जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयगंसि अणुप्पविसित्तए सुक्कपोग्गले णिग्घाएइ, णिग्घायंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू सचित्तंगइं जिग्घइ जिग्घंतं, वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जेभिक्खू सचित्तं

अर्थ

॥ ५ ॥ जो साधु अंगादान को अचित्त शीतल पानी ( धोवनादि ) कर. अचित्त गरम पानी कर धोवे, बहुत धोवे, धोते धोते को बहुत धोते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु अंगादान के ऊपर की त्वचा दूरकर-ऊपर कर अन्दर का भाग उघाडा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु अंगादान को घ्राणेन्द्रिय कर सूंघे-हाथ मे मसल नाक को लगावे, दूसरा सूंघता हो उसे अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अंगादान को अन्य-कोई अचित्त श्रोत छिद्र हो उस में प्रक्षेप कर शुक्र के पुद्गलों निकाले, अन्य शुक्र पुद्गल निकालनेवाले को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु सचित्त पुष्पादि सुगंधी वस्तुको सूंघे, अन्य सूंघते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त द्रव्य पर रक्खा हुवा सुगंधी द्रव्य को सूंघे, सूंघते को

सूत्र

॥ ५ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं–सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोइज्ज वा, उच्छोलेतं वा, पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-णिच्छेलेइ, णिच्छलंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं–जिग्घइ, जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अंगादाणं-अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयगंसि अणुप्पविसित्तए सुक्कपोग्गले णिग्घाएइ, णिग्घायंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू सचित्तंगद्धं जिग्घइ जिग्घंतं, वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जेभिक्खू सचित्तं

अर्थ

॥ ५ ॥ जो साधु अंगादान को अचित्त शीतल पानी ( धोवनादि ) कर, अचित्त गरम पानी कर थोडा धोवे, बहुत धोवे, थोडे धोते को बहुत धोते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु अंगादान के ऊपर की त्वचा दूरकर-ऊपर कर अन्दर का भाग उघाडा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु अंगादान को घ्राणेन्द्रिय कर सूंघे-हाथ से मसल नाक को लगावे, दूसरा सूंघता हो उसे अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अंगादान को अन्य कोई अचित्त श्रोत्र छिद्र हो उस में प्रक्षेप कर शुक्र के पुद्गलों निकाले, अन्य शुक्र पुद्गल निकालनेवाले को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु सचित्त पुष्पादि सुगंधी वस्तुको सूंघे, अन्य सूंघते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त द्रव्य पर रक्खा हुवा सुगंधी द्रव्य को सूंघे, सूंघने

सूत्र

पइठिय गंधं जिघइ, जिघंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू पदमगं वा, संकामं वा अवलंबणं वा, अणउत्थिएणं वा गारत्थिएणं वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू दगवीणियं अणउत्थिएहिं वा गारत्थिएहिं वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जेभिक्खू सिकुगं वा, सिकुगणंतं वा, अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू सोतियं वा, रज्जूयं वा, चिलमिलि वा, अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जेभिक्खू सूचीए, उत्तरकरणं,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु जिस रास्ते में कीच आदि से पांव को बचाने पाषाणादि की स्थापना तथा ऊंचेस्थान पर चढने के लिये अवलंबन डोरी सीढी आदि की स्थापना, किसी अन्य तीर्थिक तापसादि के पास अथवा गृहस्थ श्रावकादि के पास करावे. करावे को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु पानी भरा हो उसे निकलने की मनाली या नाली ( गटर ) अन्य तीर्थिक व गृहस्थ श्रावक के पास करावे. कराते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु सूत की डोरी, ऊनका नाडा, सणकी रज्जु-रसी, और चिलमिली आहार करने शयन करने के लिये वस्त्र की कोटडी ) खीला डोरी सहित. अन्य तीर्थिक या गृहस्थ-श्रावक के पास करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु छींका अथवा छींके का अच्छादन अन्य तीर्थिक ग्रहस्थ के पास करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु सूई को

मूल

अणउत्थिएणवा, गारात्थएण वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जेभिक्खू पिप्पलगस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएणवा, गारत्थिएणवा करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जेभिक्खू णक्खच्छेयणगस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं अणउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अणट्ठाइं सूइं जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ एवं पिप्पलगं ॥ २१ ॥ एवं णक्खच्छे-

अर्थ

तीक्ष्ण साफ सीधी. पश्चात् भाग टूटे तो बराबर अन्यतीर्थिक या ग्रहस्थ के पास करावे कराने को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु पिपलिका (कैंची-कतरनी) को तीक्ष्ण अथवा पश्चात भाग बराबर अन्यतीर्थिक के पास तथा ग्रहस्थ के पास करावे, कराने को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु नख काटने की-नेहरनी की तीक्षणधार अथवा टूटी हो तो पीछे का भाग बराबर अन्यतीर्थक तथा ग्रहस्थ के पास करावे तथा कराने वाले को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु कान में से मैल निकालने की कान सोधनी चाटूडी को अन्यतीर्थक या ग्रहस्थ के पास समरावे- साफ करावे कराते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु विना कारन सूई की याचना करे याचना करने वाले को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु विना कारन पिपीली (कतरनी) की याचना करे करने वाले को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु नख छेदन की

सूत्र

सणयं ॥ २२ ॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अविहिए सुइं जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ २५ ॥ एवं णक्खच्छेयणयं ॥२६॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो एगस्स अट्ठाए सूइजाइत्ता अण्णमण्णस्स अणुप्पदेइ, अणुप्पदेंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ २९ ॥ एवं णक्खच्छेयणयं ॥ ३० ॥ एवं कण्णसोहणयं ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं

अर्थ

नेहरनी की बिना कारन याचना करे करने वाले को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु कर्ण सोधनी की बिना कारन याचना करे करते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु विधि रहित अर्थात् पडीहारी (पीछी देना ) ऐसा कहे बिना सुइ याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ ऐसे ही अविधी से पिपली, कैंची याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ ऐसे ही अविधी से नख छेदन-नेहरनी याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ ऐसे ही अविधी से कान सोधनी-साहूडी याचे याचने को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अपने अकेले के लिये सुई याचकर लाया और वह परस्पर आपस में अन्य साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ ऐसे ही अपने लिये पिपली-कैंची लाया वह अन्य साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ ऐसे ही अपने लिये नहरनी लाया वह अन्य को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ ऐसे ही अपने अकेले के लिये कर्ण सोधनी लाया वह आपस में दूसरे साधु को देवे देते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु पाडिहारी [ काम कर पीछी दूंगा ऐसा कह कर ] सुई की याचना करे और

सूत्र

सुयंजाइत्ता वत्थसिविस्सामित्ति, पायंसिवेइ, सिवंतंवा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं पिप्पलयं जाइत्ता वत्थंछिंदिस्सामित्ति, पायंछिंदइ छिंदंतंवा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं णहच्छेयणय जाइत्ता णहंछिंदिस्सामित्ति, सल्लुद्धरणं करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं कण्णसोहणयं जाइत्ता, कण्णमलं णिहरिस्सामित्ति, दंतमलं वा, णखमलं वा निहरइ, निहरावंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खु अविहीए सूइ पच्चप्पिणइ, पच्चप्पिणंतंवा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ एवं पिप्पलयं ॥ ३७ ॥ एव णहच्छेयणयं ॥ ३८ ॥ एवं कण्णसोहणयं

अर्थ

कहे कि मैं इस से वस्त्र सींवूंगा. फिर उस से पात्रा आदि अन्य सींवे सींवने को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ ऐसे ही पाडीहारी कतरनी लाया और बोले कि मैं इस से वस्त्र कतरूंगा और फिर उस से पातरा वगैरह अन्य कतरे, कतरते को अच्छा जाने ॥३३॥ ऐसे ही नख छेदूंगा.ऐसा कहकर नेहरनी लाया और फिर उस से कांटा निकाले निकालने को अच्छा जाने ॥३४॥ ऐसे ही कान का मैल निकालूंगा. ऐसा कहकर पाडीहारी कर्ण सोधनी लाया और फिर उस से दांत का तथा नखादि का मैल निकाले निकालने को अच्छाजाने ॥३५॥ जो साधु अविधी से सूई पीछी देवे अर्थात् हाथोहाथ हाथ में देवे तथा फेंक देवे.ऐसे ही अविधी से देवे को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ ऐसे ही अविधी से कैंची पीछी देवे देते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ ऐसे ही अविधी से नेहरनी पीछी देवे, देते को अच्छा जाने. ॥ ३८ ॥ ऐसे ही अविधी से कर्ण सोधनी पीछी देवे देते को

॥ ३९ ॥ जे भिक्खू लाउपायं वा, दारुपायं वां, मट्टिपायं वा अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा, परिघट्टावेइ वा, संठावेइ वा, जंमावेइ वा, अलंमप्पणो करणयाए सुहुममवि णोकप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरेइ, वियरंतंवा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू दंडयं वा, लट्ठियं वा, अवलेहणियं वा, वेणुसूइं वा, अणउत्थिएण वा.गारत्थीएण वा परिघट्टावेवइ वा सो चेव मगिलओ गमओ अणुगंतव्वो जाव साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पायस्स एकंतुडियं तुडेइ. तुडंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥

अच्छा माने ॥ ३९ ॥ जो साधु—१ तुम्बे का पात्रा, २ लकडे के पात्रा, ३ मट्टी के पात्रा, अन्यतीर्थिक–अन्यमती तपसादि के पास तथा ग्रहस्थ श्रावक के पास. घसा पूंछा कर साफ करावे, बिगडा हुवा विभाग सुधरावे, समरावे, किंचित भी विषम होवे उसे समकरावे. नये तैयार करावे, तथा अपना सूक्ष्म थोडासा भी कोई भी काम करावे, करातेको अच्छा जाने ॥४०॥ जो साधु दंडा[धनुष्य प्रमाण] लाठी (शरीर प्रमाण) कर्दम फेरनी (चौमसे आदि में कर्दम से पांव भरावे उसे पूंछने की लकडी के बांस के सलाईये) इन को अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ के पास सुधरावे समरावे यावत् सब उक्त, प्रमाने करना यावत् अच्छा माने ॥ ४१ ॥ जो साधु पात्रेको एक थीगला लगावे अर्थात् पात्रा फूटे विना शोभा

जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं पडियाणियं, देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू अविहीए वत्थंसिवइ, सिवंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स एगंफालियं गंठियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं फालियं गंठियाण करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स मेगं.विफालियंदेइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू वत्थस्स परंतिण्हं विफलियं गंठियं देइ,

॥ ४९ ॥ जो साधु वस्त्र चदर (पछोडी)आदि को तीन थेगले (कारी-पेवन) उपरांत लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु विना विधी से वस्त्र सींवे अर्थात् जिस प्रकार ग्रहस्थ शोभा के निमित्त जाली कंगूरे वगैरे करते हैं, वखीया आदि डालते हैं तथा लेंगे या अंगरखे में घेर रखते हैं इत्यादि प्रकार के वस्त्र की सम्यक् प्रकार भांति लेखना न हो ऐसे अविधी से वस्त्र सींवे सीवते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु शोभा के निमत्त वस्त्र को एक फलित के [ पल्ले के ] एक गंठा दे देते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु वस्त्र को तीन फाली-तीन गांठ उपरांत देवे देते को अच्छा जाने ( यह ग्रन्थी जीर्ण वस्त्र को विशेष काल चलाने दी जाती है ) ॥ ५३ ॥ जो साधु वस्त्र को विफलित विनाकारण ममत्व भाव कर गांठ देकर बंध रखे. रखते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु वस्त्र को विफलित विनाकारण

साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू वत्थं अविहीए गंठइ, गंठतंवा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू वत्थं अइजाएणं गहेइ, गहंतं वा साइज्जइ ॥५७॥ जे भिक्खू अइरेग गहियं वत्थं परंदिवढाओ मासाओ धारेइ, धारंतंवा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू गिहं धुमं अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ, परिसाडावंतंवा साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खू पूइकम्मं भुंजंतंवा साइज्जइ ॥ ६० ॥

अर्थ

तीन गांठ उपरांत देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो कोई साधु वस्त्र को अविधी से गांठ देवे जो भनेभनीक क्रेग ऐसी गांठ देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु वस्त्र श्वेत रंग सिवाय तथा जो सूताई पांच प्रकार के वस्त्र सिवाय अन्य जाति के वस्त्र ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने॥५७॥ जो साधु मर्यादित काल-अधिक लिया वस्त्र डेढ (१॥) महिने उपरांत रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु जिस घर मे रहा उस घर में धूंवा जमा हो उसे अन्यतीर्थिक या ग्रहस्थ के पास साफकरावे, करते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ और जो साधु पूतीकर्म आहार अर्थात् निर्दोष आहार में सदोष आहार किंचित मात्र भी मिला हो उस निर्दोष आहार को भोगवे ॥ ६० ॥ यह ६० बोलों कोइ इन में किसी भी बोल का सेवन करने वाले साधु को गुरु मासिक प्राय...

माणे आवज्जइ मासियं परिहारठाणं, अणुग्घाइयं ॥ निसीहिज्झयण पढमे उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ * * * * *

अर्थात् इन साठ ही बोल में से अलग २ कोई भी बोल सेवन करे तो गुरु मासिक प्रायश्चित्त आताहै, परवश्यता से तथा विना उपयोग से सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम, १५ उत्कृष्ट ३० नीवीका प्रायश्चित्त. आतुरता से उपयोग सहित सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट ३० आयंबिल का प्रायश्चित्त. और मोहनीय कर्मोदय से मूर्च्छा भाव से सेवन किया होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट ३० उपवास का प्रायश्चित्त. तत्त्व गुरुगम्य. इति नीसित सूत्रका प्रथम उद्देशा संपूर्ण ॥ १ ॥

## ॥ दूसरा उद्देशा ॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणं करेइ, करंतंवा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुछणं गिण्हइ, गिण्हंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुच्छणयं धरेइ, धरंतंवा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं वियरेइ ॥ ४ ॥ एवं परिचाएइ ॥ ५ ॥ एवं परिभुंजइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुछणयं परं दिवढ्ढाओ

अर्थ—जो भिक्षु-निर्ग्रंथ भिक्षावृत्ति से उपजीविका तथा अष्टकर्मों का छेदन करने वाले साधु [यहां उपलक्षण से भिक्षुणी-साध्वी भी ग्रहण करना] लकड़ी की दंडीवाला रजोहरण नसीतिया (कपड़ा) चढाये विना बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु लकड़ी की दंडी का रजोहरण नसीतिया विना ग्रहन करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु लकड़ी की दंडी का रजोहरण नसीतिया विना का रखे रखते को अच्छा जाने ॥३॥ ऐसे ही रजोहरण को लेकर विचरे अर्थात् ग्रामानुग्राम विहार करे, विहार करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ ऐसे ही रजोहरण दूसरे को रखने की अनुज्ञा देवे देते को अच्छा जाने ॥५॥ ऐसा ही रजोहरण आप भोगवे उपयोग में लेवे भोगवते को अच्छा जाने ॥६॥ जो साधु कदापि लकड़ी की दंडी का रजोहरण विना नसीतिये का विना कारण डेढ(१॥) मांहने उपरांत रखे रखते को अच्छा

मासाओ धरेइ धरंतंवा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जेभिक्खु दारुदंडयं पायपुच्छणयं विसुयावेइ विसुयावंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खु अचित्त पइठियं गंधंजिग्घइ जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू पदमग्ग वा, संकामं वा, अयलंवणं वा, सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ एवं दगवीणियं ॥ ११ ॥ एवं सिक्कगंवा, सिक्कगणंतगं वा ॥ १२ ॥ एवं सोतियं वा, रज्जूए वा, चिलमिली वा ॥ १३ ॥ जे भिक्खू सूचिए उत्तरकरणं सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥१४॥

जाने ॥७॥ जो साधु लकडी की दंडी का रजोहरण दंडीफल आदि (शोभा के लिये) धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ * जो साधु निर्जीव मातिपु गंध अर्थात् चंदन अतरादि किसी अचित्त स्थान व भाजन में हो उसे शोक निमित्त सूंघे सूंघाते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु कर्दम के पंथ में तथा चढने उतरने के स्थान में काष्ठ पत्थर मट्टी वगैरह डाले पगथिये अवलम्बन आप बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥१०॥ ऐसे ही आप पानी निकलने को मोरी लगावे नाली बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ ऐसे ही छींका लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ ऐसे ही सूत की डोरी अथवा जाली नाडी निवार चिलमिली आदी बांधने की आप बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु सूई को स्वयमेव सुधारे काठ लगा हो

* दारु दंड रजोहरण का अर्थ मुंज का रजोहरण भी किया है मूंज जो पानी के अन्दर पास होता है उस की. होती है

सूत्र

... लिखरतं ॥ १५ ॥ एवं णहच्छेयणगरस ॥ १६ ॥ एवं कण्णसोहणगरस
॥ १७ ॥ जे भिक्खू लहूसगं फरुसवयइ, वयंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे
भिक्खू लहूसगं मुसंवदेइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू लहूसगं
अदत्तं आदियइ, आदियंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू लहूसगं सीउदग
वियडेणवा, उसिणोदग वियडेण वा, हत्थाणि वा, पायाणि वा, कण्णाणि वा, अच्छिणि
वा, दंताणि वा, णहाणि वा, मुहं वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा, उच्छोलंतं वा
पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू कसिणाणि चम्माइं धरेइ, धरंतं वा

अर्थ

वह दूर करे बाँकी को सीधी करे, करने को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ ऐसे ही पिच्छी-कतरनी को
सुधारे ॥ १५ ॥ ऐसे ही नेहरनी को सुधारे ॥ १६ ॥ ऐसे ही कर्ण सोधनी को सुधारे ॥ १७ ॥
जो साधु थोड़ासा भी कठोर अमनोज्ञ वचन अन्य को बोले बोलावे बोलते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥
जो साधु थोड़ा सा भी मृषावाद झूठ बोले बोलावे बोलते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु थोड़ीसी भी
चोरी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अचित ठंडा पानी ( धोवन पानी ) कर, अचित
गरम पानी कर-हाथ, पांव, कान, आंख, दांत, नख मुख धोवे वारम्वार धोवे, एकवार अथवा वारम्वार
धोते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु चसंड चर्म . चमड़ा ) रखे रखने को अच्छा जाने. ( ...

सूत्र

मासाओ धरेइ धरंतंवा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जेभिक्खु दारुदंडयं पायपुच्छणयं विसुयावेइ विसुयावंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खु अचित्त पइठियं गंधंजिग्घइ जिग्घंतंवा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जेभिक्खू पदमग्ग वा, संकामं वा, अवलंवणं वा, सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ एवं दगवीणियं ॥ ११ ॥ एवं सिक्कगंवा, सिक्कगणंतगं वा ॥ १२ ॥ एवं सोतियं वा, रज्जूए वा, चिलमिली वा ॥ १३ ॥ जे भिक्खू सूचिए उत्तरकरणं सयमेव करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥१४॥

अर्थ

जाने ॥७॥ जो साधु लकडी की दंडी का रजोहरण दंडीफल आदि (शोभा के लिये) धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ ✽ जो साधु निर्जीव मातिपु गंध अर्थात् चंदन अतरादि किसी अचित्त स्थान व भाजन में हो उसे सोक निमित्त सूंघे सूंघाते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु कर्दम के पंथ में तथा चढने उतरने के स्थान में काष्ट पत्थर मट्टी वगैरह डाले पंक्तिये अवलम्बन आप बनावे.बनाते को अच्छा जाने ॥१०॥ ऐसे ही आप पानी निकलने को मोरी लगावे नाली बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ ऐसे ही छींका लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ ऐसे ही सूत की डोरी अथवा जाली नाडी निवार चिलमिली. आदी बांधने की आप बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु सूई को स्वयमेव सुधारे काठ लगा हो

✽ दारु दंड रजोहरण का अर्थ मुंज या रजोहरण भी किया है मुंज जो पानी के अन्दर पास होता है उस की. होता है

सूत्र

एवं पिप्पलगस्स ॥ १५ ॥ एवं णहच्छेयणगस्स ॥ १६ ॥ एवं कण्णसोहणगस्स ॥ १७ ॥ जे भिक्खू लहुसगं फरुसं वयइ, वयंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू लहुसगं मुसं वएइ, वयंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू लहुसगं अदत्तं आदियइ, आदियंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू लहुसगं सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, हत्थाणि वा, पायाणि वा, कण्णाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, णहाणि वा, मुहं वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू कसिणाणि चम्माइं धरेइ, धरंतं वा

अर्थ

वह दूर करे बाँकी को सीधी करे, करने को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ ऐसे ही पिप्पली-कतरनी को सुधारे ॥ १५ ॥ ऐसे ही नेहरनी को सुधारे ॥ १६ ॥ ऐसे ही कर्ण सोधनी को सुधारे ॥ १७ ॥ जो साधु थोडासा भी कठोर अमनोज्ञ वचन अन्य को बोले बोलावे बोलते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु थोडा सा भी मृषावाद झूठ बोले बोलते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु थोडीसी भी चोरी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अचित्त ठंडा पानी ( धोवन पानी ) कर, अचित्त गरम पानी कर-हाथ, पांव, कान, आंख, दांत, नख मुख धोवे बारम्बार धोवे, एकवार अथवा वारम्वार धोते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अखंड चर्म -चमडा ] रखे रखते को अच्छा जाने. [ बृहत्

सूत्र

साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू कासिणाइं वत्थाइं धरइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अभिन्नाइ वत्थाइ धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू लाउपायं वा, दारूपायं वा, मट्टीयापायं वा, सयमेव परिघट्टेइ वा, संट्ठवेइ वा, जंमावेइ वा, परिघट्टंतं वा, संट्ठवंतं वा, जंमावंत वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ एवं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा, वेणुसूइयं वा, जाव जंमाइवंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू णियगं गवेसियगं, पाडिग्गहगं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

कल्प में नमडाएक रात्री कारण सिर रखने का कहा है॥२२॥जो साधु वस्त्र का स्थान अखंड रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु विना फाडा पछोडी चोलपटादि का वेत विना किया वस्त्र रखे रखनेको अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु तुम्बे के पात्र, काष्ट के पात्र, मट्टी के पात्र, स्वयंमेव शोभा के लिये खराब होवे उसे अच्छा करे, मुख पोंदादी संस्थारे, बराबर जमावे, दूसरा अच्छा करता हो सुधारता हो जमाता हो उसे अच्छा जाने ॥ २५ ॥ इस ही प्रकार शोभा निमित्त दंडे को लकडी को वांस की खापटी को, घांस की शलाका को, कॉंटे निकालने के हिंगोरादि के कॉंटे को, आप सुधारे अन्य सुधारते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु गुरु आज्ञा विना अपना स्वयं का याचना किया हुवा पात्र रखे, रखते को अच्छा

सूत्र

परगवेसियगं पडिग्गहगं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ॥२८॥जे भिक्खू वरगवेसियगं पडिग्गहगं धरेइ, धरंतंवा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू बलगवेसियगं, पडिग्गहगं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू लवगवेसियगं, पडिग्गहगं धरेइ, धरंतंवा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू नितियं अग्गपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ

अर्थ

जाने॥२७॥जो साधु गुरु की आज्ञा विना दूसरे ने लाकर दिया पात्र रखे रखते को अच्छा जाने ( तथा अकल्पनीक जाति का पात्रा रखे)॥२८॥ जो साधु मनुष्य का गवेषा हुवा पात्र रखे. अर्थात् वह मुझे नहीं देता है इस लिये बडे मनुष्य को बीच में रखे जिस से उस की शरम से वह देवे, ऐसा पात्रा रखे रखते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु बलत्कार कर याचना कर पात्रा रखे. अर्थात् अपना तपादि का बल बताकर या राजा आदि का डर बताकर जबरदस्ती से पात्र ग्रहण कर रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु पात्रे के मालक को दान के फल बतला कर उस से पात्रा याच कर रखे रखते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु सदैव अग्रपिंड भोगवे * तथा भोगते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो

* जो प्रथम रोटी उतारते है तथा हंडी के उपर के चांवलादि होते हैं उसे अग्रपिंड कहते है. वह बहुत से स्थान दान में ही दिये जाते है. तथा देवादि को चढाये जाते हैं वह साधु को लेना उचित नहीं है. क्यों कि दूसरे के अंतराय लगे.

॥ ३२ ॥ जे भिक्खू णितियं पिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू णितियं अवड्ढभागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू णितियं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू णितियं उणड्ढं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू णितियं वासंवसइ, वसंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू पुरे संथवं वा पच्छा संथवं वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे

साधु सदैव एक ही घर का आहार पानी भोगवे, भोगते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु नित्य सदैव अर्ध भाग भोजन अर्थात् कितनेक स्थान बनाया भोजन का या भाने में लिया भोजन का आधा हिस्सा दान में देने निकाला जाता है पुण्य निमंत रखा वह अर्ध भाग भोजन आप भोगवे तथा भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३४ ॥ जो साधु सदैव भाग का भोजन अर्थात् बने भोजन में से जो कुछ हिस्सा दानार्थ निकाल के रखा हो वह भोजन का भाग आप भोगवे तथा भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३५ ॥ जो साधु पुण्यार्थ निकाले भोजन में का कुछ भी भाग भोगवे भोगवते को अच्छा जाने. ॥ ३६ ॥ जो साधु मास कल्प तथा वर्षा ऋतु की मर्यादाका भंग करे [ बिना कारण ] सदैव एक ही स्थान रहे रहते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु दानदिये पहिले तथा दानदिये पीछे दातार की प्रसंशा करे.

---

✿ इस प्रकार के भोजन भोगवने से अन्य जीवों को अंतराय भी लगती है और उद्देशिक आधाकर्मी अज्झोयर स्थापना वगैरे दोषो भी लगते हैं.

सूत्र

भिक्खू सममाणे वा [illegible] पुरेसंथुयाइयाणि वा, पच्छा संथुइयाणि वा कुलाइं पुव्वामेवा अणुपविसित्ता पच्छा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥३९॥ जे भिक्खू अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा, परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावइ कुलं पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ वा णिक्खमइ वा, अणुपविसंतं वा णिक्खमंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अणउत्थिए वा गारत्थिए वा, परिहारिओ अपरिहारिएणं सद्धिं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खम-

अर्थ

करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु वृद्धावस्थादि कारण बिना सशक्त शरीर होते, शीतकाल उष्णकाल में मास कल्प और चौमासा के काल उपरांत रहता हुवा तथा ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा, पूर्व परिचित संसार में जिनके साथ विशेष परिचय था, और पश्चात परिचित सो दीक्षा लिये बाद जिन से विशेष परिचित हो उन गृहस्थ के घरों में तथा पूर्व परिचित माता पिता भाइ बेनों के घरों में और पश्चात परिचित सासू सुसरे साले पुत्र पुत्रवधू के घरों में भिक्षा का काल होने पहिले ही तथा भिक्षा का काल हुवे बाद प्रवेश करे, प्रवेश करते हुवे को अच्छा जाने. ॥ ३९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक के साथ गृहस्थ श्रावकादि के साथ, परिहारिक-सदोषी साधु के साथ, अपरिहारिक मूल गुण में दोषित पासत्थादि के साथ गृहस्थ के घर में आहार पानी आदि के वास्ते प्रवेश करे निकले, प्रवेश करते निकलते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक, गृहस्थ, परिहारिक साधु, अपरिहारिक
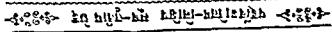
वा परिता वा, निरखमेनं वा पधिसंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू अणउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिएओ अपरिहारिणं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जइ, दुइज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू अण्णयरं भोयण जाइं पडिगाहित्ता सुब्भि २ भुंजइ दुब्भि २ परिट्ठवेइ परिट्ठावंत वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू अण्णयरं पाणग जाइं पडिगाहित्ता पुप्फयं २ आइयंति, कसाइं २ परिट्ठवेइ, परिट्ठवेतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू मण्णुणे भोयण जायं पडिगाहित्ता, बहु परियावण्णं अदूरे तत्थ साहम्मियो संभोइया समणुणा अपरिहारिया संता परिवसंति तेण पुच्छिय

साधु के साथ थंडिल की भूमी में स्वाध्याय की भूमी मे जावे जाते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक, गृहस्थ, परिहारिक साधु, अपरिहारिक साधु के साथ ग्रामानुग्राम विचरे. विचरते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु अनेक प्रकार के भोजन ग्रहण कर उस में से अच्छा २ भोजन तो खा जावे और खराब २ परीठा देवे. ऐसे काम करते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु आहार पानी ज्यादा ले आया हो, खाये बाद बहुत बचा हो, उस वक्त नजीक में कोई स्वधर्मिक शुद्धाचारी संभोगी निर्दोष योग्य शांत परिज्ञात साधु हे

सूत्र

अणिमंतियं परिट्ठावेई, परिट्ठावंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू सागारिय पिंड गिहण्इ गिण्हंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू सागारिय पिंड भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खु सागारियं कुल अजाणिय; अपुच्छिय; अगवेसिय पुव्वामेय पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू सागारिय णिस्साए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू उडुबंद्धियं सिज्जा संथारयं परं पज्जोस

अर्थ

उन को पूछे बिना उन की आमंत्रणा किये बिना, जो परिठादेवे, ऐसे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु शैय्यातर (मकान में उतरने की जिसकी आज्ञा ली हो उस के) घर का आहार पानी ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥४६॥ जो साधु शैय्यातर के घरका आहार आदि भोगवे, भोगवतेको अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु शैय्यातर का घर को बिना जाने बिना पूछे बिना गवेषना किये पहिले आहार पानी लेने के वास्ते प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु शैय्यातर के नेश्राय से अर्थात् शैय्यातर दर बता कर दलाली कर दिलावे ऐसा आहार पानी खादिम स्वादिम याचे, याचना करते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु चौमासे में वर्षा ऋतु में पर्युसन तक भोगवन के लिये पाट

सूत्र

पणाओ उवायणावेइ, उवायणावंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू वासावासियं सिज्जा संथारयं परं दसराय कप्पाउ उवायणावेइ, उवायणावंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू उडुबद्धियं वा वासावासियं वा सिज्जासंथारयं उवरिसिज्जमाणं पेहाए णओसारेइ, णओसारंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सिज्जासंथारय दोच्चंपि अणुण्णवेता बाहिं णीणेइ, णीणंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू सागारियं सातियं सेज्जा संथारयं दोच्चंपि अणुणविया बाहिंणि णेइ, णीणंतं वा साइज्जइ ॥५४॥

अर्थ

पाटले लाया हो उन को अधिक काल बक-पर्यूषन-संवत्सरी उपरांत भोगवे भोगवने को अच्छा जाने ॥५०॥ जो कोई साधु चौमासे में संवत्सरी तक भोगवने पाट पाटले लाये हैं उन में भीव जंतु हो इस लिये वे संवत्सरी बाद दश रात्रि रखने कल्पते हैं दश रात्रि उपरांत रखे रखते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु पाट पाटला सेज्या संथारा लाया हो वह वर्षा ऋतु में वर्षा कर भींजता हो उसे वर्षाद में से उठाकर अलग नहीं रखे, नहीं रखने को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु काल की मर्यादा बंध कर सेज्या संथारा लाया है उस को काल मर्यादा पूर्ण हुवे बाद भोगवे भोगवने को अच्छा जाने अथवा एक स्थानक छोड दूसरे स्थानक में जावे अन्य ग्राम जावे दूसरी वक्त मालक की आज्ञा लिया बिना साथ लेजावे, ले जाते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ जो साधु शैय्यांतर के पाट पाटले सेजा संथारा हो उसे दूसरे स्थानक में जाते शैयांतर की दूसरी वक्त आज्ञा मांगे बिना ले जावे, ले जाते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु

जे भिक्खू पडिहारियं वा सागारियं संतिय सेज्ञा संथारगं दोचंपि अणुणविता बाहिं णिणइ णीणंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्ञा संथारगं आयाए अपडिहट्टु संपव्वयइ, संपव्वयंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू सागारियं संतियं सेज्ञा संथारयं आयाए अधिकरणकट्टू अणुपणिता संपव्वयइ संपव्वयंतं वा साइज्जइ ॥ ५७ ॥ जे भिक्खू पडिहारियं वा सागारियं संतियं वा सेज्ञा संथारयं विप्पणट्ठं न गवेसेइ, न गवेसंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू

कितनेक शैयांतर के शैय्या संथारे और कितनेक दूसरे के शैय्या संथारे बाहिर अन्य स्थान जाने दोनों की आज्ञा मांगे विना मकान के बाहिर निकाले निकालते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु पडिहारिय शैय्या संथारा लाया हुवा पीछा विना दिया ही विहार कर जावे, जाते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु शैय्यांतर के तथा दूसरे के पाट पाटले शैय्या संथारा लाया है पाटादि बिछाये. संथारा संथारा पटदादि बंधा इत्यादि अधिकरण [ दिनेरा ] किया है उसे विना समेटे विहार कर जावे जाते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ जो साधु परिहारीये शैय्यांतर के शैय्या संथारे नष्ट हुवे. याद चाहिये सो दूसरे नहीं गवेषे नहीं गवेषते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु पास उपधी है. उस में से किंचित मात्र भी विन

## ॥ तीसरा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अनउत्थियं वा गारत्थियं वा-असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ, तं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ कुलेसु वा, परिया वसहेसु वा, अणउत्थियाओ वा गारत्थियाओ वा-असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासियं २ जायइ जायंतं वासाइज्जइ ॥२॥ जे भिक्खू आगंता-

जो कोई साधु साध्वी जिस स्थान में मुसाफर लोक आकर उतरे उस मुसाफरखाने में, २ आराम बगीचे में, गृह बनाकर कोई गृहस्थ रहा हो ऐसे बगीचे के घर में, ३ गृहपति-गृहस्थी रहता हो उस घर में, ४ परिव्राजिक-सन्यासी वगैरह रहते हों उन के मठ में, ५ कोई अन्य तीर्थिक-अन्यमतावलम्बी साधु गृहस्थ हो तथा गृहस्थ श्रावक जन हो उस से (एक वचन) अन्न-अन्न की जाति-चावल गेहूंआदि, पानी-दूध धोवनादि, खादिम-मिष्टान्न पकवानादि, और स्वादिम चूरण-सोपारी आदि. यह चारों प्रकारका आहार मोर २ से पुकार २ कर मांगे या मांगने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु मुसाफरखाने में बगीचे के बंगले में, गृहपति के घर में, परिव्राजिक के मठ में, अन्य तीर्थिकों अथवा श्रावकों गृहस्थी हो उन से (अनेक वचन) अन्नादि चारों प्रकार का मोर २ से पुकार २ कर

## ॥ तीसरा-उद्देशा ॥

सूत्र — जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामगारेसु वा, गाहावइफुलेसु वा, परिवसहेसु वा, अणउत्थियं वा गारात्थियं वा-असणं वा पाणं वा खाइयं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ, तं वा साइज्जई ॥ १ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ फुलेसु वा, परिया वसहेसु वा, अणउत्थियाओ वा गारत्थियाओ वा-असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमंवा ओभासियं २ जायइ जायंतं वासाइज्जइ ॥२॥ जे भिक्खू आगंता-

अर्थ — जो कोई साधु साध्वी जिस स्थान में मुसाफर लोक आकर उतरे उस मुसाफरखाने में, २ आराम बगीचे में, गृह बनाकर कोई गृहस्थ रहा हो ऐसे बगीचे के घर में, ३ गृहपति-गृहस्थी रहता हो उस घर में, ४ परिव्राजिक-सन्यासी तापसादि रहते हों उन के वास में, ५ कोई अन्य तीर्थिक-अन्यमतावलम्बी तापस गृहस्थ हों तथा गृहस्थ-श्रावक जन हों उस से [एक वचन] अशन-अन की जाति-चांवल गेहूवादि, पाणी-कृष्ण धोवनादि,खादिम-मिष्टान्न पकान्नादि, और स्वादिम चूरण-सोपारी आदि. यह चारों प्रकारका आहार जोर २ से पुकार २ कर याचे. या याचते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु मुसाफरखाने में बगीचे के बंगले में, गृहपति के घर में, परिव्राजिक के वास में, अन्य तीर्थिकों अथवा श्रावकों ग्रहस्थी हो उन से (अनेक वचन) अशनादि चारों प्रकार का जोर २ से पुकार २ कर याचे. याचते को अच्छा

इत्तरियंसि उग्गहि पाडिहारिए पाडिहारियं वा साइज्जइ ॥५९॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥६०॥ निसीह ज्झयणं बीओ उद्देसो सम्मत्तो॥२॥*

माग लेवी-बिना पडिलेही रखे. बिना पडिलेही उपधी रखने वाले को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ यह ५९ बोल में का किसी एक बोल का—दोष का कोई भी साधु अथवा साध्वी सेवन करे तो उस को लघु मासिक का प्रायश्चित आवे, अर्थात् वक्त काम औ परवशपने बिना उपयोग से हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासने का प्रायश्चित. आतुरता से इच्छा कर हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायश्चित. और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्छाभाव से किया हो तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७,उपवासका प्रायश्चित इति नीशीथ सूत्रका दूसरा उद्देशा संपूर्णम् ॥२॥

इत्तरियंसि उवहि णपडिलेहइ णपडिलेहंतं वा साइज्जइ ॥५९॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥६०॥ निसीह ज्झयणं बीओ उद्देसो सम्मत्तो॥२॥०

बिन लेखी-बिना पडिलेही रखे. बिना पडिलेही उपधी रखने वाले को अच्छा जाने ॥ ६०॥ यह ६० बोल में का किसी एक बोल का—दोष का कोई भी साधु अथवा साध्वी सेवन करे तो उस को लघु मासिक का प्रायश्चित आवे, अर्थात् वक्र काम भी परवशपने बिना उपयोग से हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासने का प्रायश्चित्त. आतुरता से इच्छा कर हुवा होतो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायश्चित्त. और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्छाभाव से किया हो तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, उपवास का प्रायश्चित्त इति नीशीथ सूत्रका दूसरा उद्देशा संपूर्णम् ॥२॥

...वण चत्तारिगामा ॥ ८ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा जाव ... अणउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा ४, अभिहडं आहट्ट दिज्जमाणं पडिसेहित्ता तमेव अणुवत्तियं तमेव अणुवत्तियं परिवेढिय २ परिजविय २ ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥९॥ एवं एतेणं चेव चत्तारिगामा ॥१२॥ जे भिक्खू गाहवइकुलं पिंडवाय पडियाए पविट्ठे पडियाइक्खित्तेसमाणे दोचंपि तमेवकुलं अणुप्पविसइ,

अर्थ कौतुक आश्रिय भी उक्त प्रकार चार आलापक कहना (यथा-१ एक अन्य तीर्थिक, तथा गृहस्थ, २ बहुत अन्य तीर्थिक, तथा बहुत गृहस्थ, ३ एक अन्य तीर्थिकनी तथा एक गृहस्थनी, और ४ बहुत अन्य तीर्थिकनीयों तथा गृहस्थनीयों. यों चार २ आलापक आगे भी जानना) ॥८॥ जो साधु साध्वी को मुसाफरखाने में से यावत् तापस के आश्रम में से अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थी अशनादि चारों आहार सन्मुख लाकर देवे उस को निषेध करे की यह आहार मुझे नहीं कल्पता है. यों कहे से वह पीछाले जाने तब उस को सात आठ पांव गये बाद साधु उस के पास जाकर उस को चारों तरफ घेर लेवे. और वचन कला केवल कर यों कहे कि यह जो तुम हमारे लिये लाये नहीं होतो तो हम लेते हैं, इस प्रकार याचना करे याचना करते को अच्छा जाने ॥९॥ जैसा यह एक का आलापक कहा एसे ही उक्त प्रकार चारों चार आलापक सन्मुखलाने आश्रिय कहना ॥ १२ ॥ जो साधु साध्वी गृहस्थ के घर में आहार के लिये प्रवेश करते हुवे घर का मालिक निषेध करे कि घर में मत आवो. तो उसी वक्त फिर जावे. ...

रेसु वा आरामागारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावहेसु वा अणउत्थिणी वा गारत्थिणी वा असणं वा ४, उभासिय २ जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामगारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अणउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा असणं वा ४, उभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइकुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणउत्थिउ वा गारत्थिउ वा कोउहल पडियाए पडियागयं समाणं असणं वा ४, उभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं एतेणं

जाने ॥ २ ॥ जो साधु मुशाफरखाने में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थी के घर में, तपस्वीयों के वास में अन्य तीर्थिका स्त्री से अथवा गृहस्थनी से [ एक वचन ] पुकार २ कर याचे, याचते को अच्छा जाने॥३॥ जो साधु मुशाफरखाने में, बाग के बंगले में, गृहस्थी के घर में, परिव्राजिक के मठ में बहुत अन्य तीर्थिकाओं व बहुतसी गृहस्थनीयों को पुकार २ के याचे, याचते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ [ यह चार अलापक सहज याचने के कहे ] जो साधु साध्वी मुशाफरखाने में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थी के घर में, तपस्वीयों के आश्रम में, एक अन्य तीर्थिक, एक गृहस्थी कौतुक के लिये आया हो उस से अशनादि चारों आहार पुकार २ कर याचे, याचना करनेवाले को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ यह एक आलापक हुवा ऐसे ही

अणुप्पविसंते वा साइज्जइ॥१३॥जे भिक्खू संखडि पलोयणाए असणं वा४.पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू गाहावइकुलं पिंडवाए पडियाए अणुपविट्ठेसमाणे परंतिघरंतराओ असणं वा ४, अभिहंड आहट्टुदिज्जमाणं, पडिगहेइ, पडिगाहंतंवा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए आमज्जेज्जवा पामज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पामज्जंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए संवहेज्जवा पलिमदेज्ज वा, संवाहंतं वा पलिमद्दंते वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू

काम औपपादि का होवे तो दूसरी वक्त मालिक की आज्ञा मांगे विना प्रवेश करना कल्पे नहीं, और जो विना आज्ञा प्रवेश करे, तथा प्रवेश करते को अच्छा जने ॥ १३ ॥ जो साधु साध्वी जिस स्थान जेमन वार हो वहां देख. २ कर अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु गृहस्थ के घर में आहार पानी ग्रहण करने के लिये प्रवेश करे उस घर में तीन घर [द्वार] के अन्दर आहार रखा हो उस घर में से सन्मुख लाकर अशनादि चारों आहार देवे उसे ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु साध्वी अपने पांवों को शोभा के लिये प्रमार्जे ( पूंजे-झट के ) साफ करे, शोभा निमित्त प्रमार्जते साफ करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु अपने पांव को दबावे. वारम्वार दबावे. दबाते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु साध्वी

अप्पणोपाए-तेल्लेण वा, घएण वा, वासाएण वा, णवणीएण वा, मंखेज्ज वा, भिलंगेज्ज वा, मंखंतं वा, भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खु अप्पणो पाए, लोद्देण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा, पउमचुण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा उवट्टेज्ज वा, उल्लोलंतं वा उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए सीउदगवियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अप्पणोपाए-फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, मंखेज्ज वा, फुमंतं वा, रएतं वा, मखंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो

अर्थ

[ विना कारन ] अपने पांव को तेल घृत चरबी मक्खन एक वक्त लगावे तथा वारम्वार लगावे. एकवक्त या वारम्वार लगाने को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु अपने पांव को लोद्रक कोष्टकद्रव्यक चूर्णक चूर्ण अबीरादिक एकवार लगावे उगटना (पीठी) करे वारम्वार पीठी करे ऐसा करतेको अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु अपने पांव को अचित्त ठंडेपानी कर, अचित गरम पानी कर, एक वक्त धोवे वारम्वार धोवे. धोतेको अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु साध्वी अपने पांव को. लखाइ आदि रस लगावे, अलतादिरंग कर रंगे, रंगतेको अच्छा जाने ॥ २१ ॥ (यह पांव के ६ सूत्र हुवे-१ मेल उतारे, २ मसले, ३ तेल्यादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे, और ६ रंगे)

कायं-आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ एव एतेणं अभिलावेणं सो चेव गमो भाणियव्वो जाव रयंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ एव कायस्स वणेवि तं चेव ॥३२॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा, पलियं वा, अरियं वा, असियं वा, भगंदलं वा, अण्णयरेणं वा तिक्खेणं सत्थ जाएणं अच्छिदे-ज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा अच्छिदंतं वा विच्छिंदंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कयंसि-गडं वा, पलियं वा, अरियं वा, भगंदलं वा, अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदेत्ता विच्छिंदेत्ता पूयं वा, सोणियं वा निहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा,

जो साधु अपनी काया को मसल कर मैल उतारे, वारम्बार मैल उतारे, उतारते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ यों उक्त प्रकार ६ अभिलापक काया आश्रिय भी कहना ॥ २७ ॥ और उक्त प्रकार ही छ सूत्र शरीर में कोई गड गुम्बडादिक होवे उस आश्रिय भी कहना ॥ ३३ ॥ जो साधु अपने शरीर को गुम्बडे हुवे हो उसे, दद हुई हो उसे, फुनसी आदि हुई हो उसे, मस्सा-हर्ष रोग हुवा हो उसे, भगंदर का रोग हो उसे, इन सिवाय और भी इस प्रकार के रोग हुवे हो उसे तीक्ष्ण शस्त्र कर एक वक्त छेदावे, वारं-वार छेदावे छेदाते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु अपने शरीर को गुम्बडा-गुम्बडा, फुनसीयों, मस्सा, भगंदर, और इस प्रकार का रोग हो उस को तीक्ष्ण

निहरंतं वा विसोहंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि-गंडतं वा, पलियंतं वा, अरियं वा, असियं वा, भगंदलं वा, अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता, पूयं वा सोणियं वा निहरेत्ता विसोहेत्ता, सीउदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा उच्छोलिज्ज वा, पधोविज्ज वा, उच्छोलंतं वा, पधोवंतं वा, साइज्जइ ॥ ३६ ॥ एवं अण्णयरेणं आलेवण जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा, आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ एवं अण्णयरेणं आलेवणजाएणं अब्भंगेज्ज वा मंखेज्ज वा, अब्भंगेत वा मखंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ एवं एतेणं

अर्थ

बारम्बार छेदकर पीब-पीब रक्त निकाल कर विशुद्ध करावे, विशुद्ध कराने को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु अपनी काया के गंडमाल, मेद, फुन्सीयों, हर्स, भगंदर आदि अन्य भी रोगों को तीक्ष्ण शस्त्र जाती से छेदन भेदन कर पीब रक्त निकालकर विशुद्ध कर अचित्त ठंडे पानी कर अचित्त गरम पानी कर एक दफे धोवे बारम्बार धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ ऐसे ही अन्य किसी प्रकार के मल्हम आदि का लेपन करे बारम्बार विलेपन करे, लेपन करते को बारम्बार विलेपन करने को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ ... अभ्यंगन-मर्दन करे, बारम्बार अभ्यंगन मर्दन करे, अभ्यं...

सूत्र

गमेणं धुवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा, धूवंतं वा पधूवंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पालु किमियं वा, अप्पणो अंगुलिए निवेसिय २ णिहरइ, णिहरंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाओ णहसीओ कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं वत्थीरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं चक्खूरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा

अर्थ

मर्दन करते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ ऐसे ही गड गुम्बडादि को धूप देवे, वारम्वार धूप देवे, धूप देते को अच्छा जाने* ॥ ३९ ॥ जो साधु अपने गुदा में क्रिमीयों की उत्पत्ति हुइ हो, कूक्षी में क्रिमीयों की उत्पत्ति हुइ हो, उन को अपनी अंगुली अन्दर प्रवेश कर निकाले, निकालते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु अपने दीर्घ-लम्बे नख हुवे हों उनको ( शोभानिमित ) छेदे साफ करे-सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु अपने लम्बे बढे हुवे गुप्त स्थान के बालों को छेदन करे साफ करे सुधारे, सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे आंखों के भांपने भूंवाओं के बाल

* उक्त प्रकार गुम्बडादि का उपचार कराने से कदाचित घात होवे, असमाइ होवे, रोग विस्तार पावे तो संयम की विराधना होवे, इत्यादि दोष जानकर प्रायश्चित का स्थान कहा है.

सूत्र

साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइं जंघरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कक्खरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं मंसुरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइं केसाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा, संठवंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कण्णरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा, कप्पंतं संठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू-

अर्थ

को छेदे साफ करे, छेदन करते साफ करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे जंघा के रोम को छेदे सुधारे, छेदे सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे कांख के रोम को छेदे सुधारे छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु अपने लम्बे बढे दाढी मूछ के रोम बाल को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु साध्वी अपने लम्बे केसों को ( मस्तक के बालों को ) छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे कान के बालों को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥४८॥ जो साधु अपने लम्बे हुवे

अर्थ

एवं नासरोमामाइ ॥ ४९ ॥ जेभिक्खू अप्पणोदंतं आघसेज्ज वा, पघसेज्ज वा, आघसंतं वा पघसंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते सीउदग वीयडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, फुमंतं वा रएतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू अप्पणो उठे अमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ एवं उठे पायगओ भाणियव्वो जाव फुमेज्ज वा, रएज्ज वा, फुमंतं वा रयंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं उत्तरोठाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा कप्पंतं वा, संठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ५९ ॥ एवं दीहाइं अत्थिरत्ताइं जाव साइज्जइ ॥ ६० ॥

नाक के बालों को छेदे सुधारे, छेदते सुधारते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु साध्वी अपने दांतों को दांतनकर घसे अथवा वारम्वार घसे, घसते को अच्छा जाने ॥५०॥ जो साधु साध्वी अपने दांतोंको अचित ठंडेपानी कर, अचित गरम पानी कर एकवक्त धोवे, वारं वार धोवे, धोतेको अच्छा जाने ॥५१॥ जो साधु अपने दांत खटाइ कर पट्ट करे रंग लगावे, खटाइ देते रंगते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु अपने होटों को एक वक्त घसे वारम्वार घसे, घसने को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ ऐसे ही होठ का सभी कहना, २ मैल निकाले,

जे भिक्खू अप्पणो अत्थिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा, णहमलं वा, णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णिहरंतं वा विसोहेंतं वा, साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायाओ सेयं वा, जल्लं वा, पंकं वा, मलं वा, णिहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णिहरंतं वा विसोहेंतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू गामाणुगामं दूइज्जमाणे-अप्पणो सीसदुवारिया करेइ करतं वा साइज्जइ ॥ ७१ ॥ जे भिक्खू सणकप्पासाओ वा, उणकप्पासाउ वा, पोटकप्पासाओ वा, अमिलकप्पसाओ वा, वसीकरणसुताइं

जो साधु अपने आंखों के मैल को, कान के मैल को, दांत के मैल को, नख के मैल को, [शोभा के लिये] निकाले, विशुद्ध करे निकालते को अच्छा जाने ॥६९॥ जो साधु अपनी कायाका स्वेद [ पसीना ] विशेष पसीना, मैल, जमा हुवा मैल निकाले, विशुद्ध करे, निकालते शुधकरते को अच्छा जाने ॥७०॥ जो साधु ग्रामानुग्राम विचरते हुवे रस्ते में चलते हुवे वस्त्रादि कर मस्तक ढके, ढकते को अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ जो साधु साध्वी सण का दोरा, कपास का दोरा, ऊन का दोरा, वन ( नंदन वन के ) कपास का दोरा, (इस कपास का बडा झाड होता है ) मिलक ( आकादि के ) कपास का दोरा, इत्यादि का दोरा वशीक-

यह सूत्र पाठ साधु आश्रिय जानना, क्यों कि साधु शिर ढक कर रास्ते में चलते विप्रीत दिखाता है, कोई रोगादि उत्पन्न हो तो आगार है. साध्वी को तो उघाडे सिर रहना योग्य ही नहीं है.

करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू गिहंसि वा, गिहमुहंसि वा, गिहदुवारंसि वा, गिहपडिदुवारंसि वा, गिहेलुयंसिं वा, गिहंगणंसि वा, गिहवच्चंसि वा, उच्चारं वा पासवर्णं वा परिट्ठवेइ परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ॥७३॥जे भिक्खू मडग गिहंसि वा, मडग छारियंसि वा, मडग थूभियंसि वा, मडग सयंसि वा, मडग लेणंसिं वा, मडग थुभिलंसि वा, मडग वच्चंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतंसि वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू अंगाल दाहंसि वा, खार दाहंसि वा, गाय दाहंसि वा, तुस दाहंसि वा, भुस दाहंसि वा,

इत्यादि के बड़ बड़ के बाल्ने आप करे, अन्य करने को अच्छा जाने ॥ ७२ ॥ जो साधु साध्वी घर में, घर के द्वार में, घर के प्रतिद्वार में, ( घर के अंदर के द्वार में ) घर की पोल में, घर के अंगन में, घर के लघुनीत बड़ी नीत के स्थान में, जो बडीनीत (दिशा) या लघुनीत (पेशाब) परिठावे परीठावे को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु साध्वी मुरदे के घर में [ मशान में ] मुरदे की राख में, मुरदे की स्तूप बनाइ हो वहां, मुरदे का विश्राम देते वहां, मुरदों की पंक्ती बैठावे हो वहां ( अथवा मुरदों की कबरादि की पंक्ती हो वहां ) मुरदों की छत्री प्रतिमा आदि होवे वहां, मुरदों जलाने का खास कोई स्थान होवे वहां बडी नीत लघुनीत परिठावे, परिठावते को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु साध्वी अंगार करने की ( कोयले बनाने की ) जगह में, खारी आदिक क्षार करने की जगह में, गौ आदि पशु को रोगादि हुवे जिस स्थान

सूत्र

वा, सालि वणंसि वा, कुसुभ वणंसि वा, कप्पास वणंसि वा, उच्चार पासवणं …४१२ परिट्ठवंतं साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू मडाग वचंसि वा, साग वचंसि वा, मूलग वचंसि वा, कोत्थुभरि वचंसि वा, खार वचंसि वा, जीरिय वचंसि वा दमणय-वचंसि वा, मंरुग वचंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू असोग वणंसि वा, सत्ति वणंसि वा, चंपग वणंसि वा, चुय वणंसि वा, अण्णयरेसु तहप्पगारेसु पत्तोवएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु उच्चार-पासवणं परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू सपायंसि वा,

अर्थ

में, कपासादि उत्पन्न होने के स्थान में, बडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७९ ॥ जो साधु मडाग वनस्पति के स्थान में, शाक हो ऐसी वनस्पति के स्थान में, मूला वनस्पति के स्थान में, बहुबीज वनस्पति के स्थान में, धनिये खार होता हो ऐसे स्थान में, जीरा होता हो, ऐसे स्थान में दमनक वनस्पति के स्थान में मरोचन वनस्पति के स्थान में बडीनीत लघुनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु साध्वी अशोक वृक्ष के वन में, सप्तपर्ण वृक्ष के वन में, चंपा के वन में, चूत वृक्ष के वन में, और भी इस प्रकार के वृक्षों के वन में, जो पत्र सहित, फूल सहित, फल सहित, छाया सहित हो वहां लघुनीत बडीनीत परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ८१ ॥ जो साधु साध्वी अपनी नेश्राय के लघुनीति करने के पात्र में, अन्य

## ॥ चौथा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू रायं अत्तिकरेइ, अतिकरंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू रायं अच्चिकरेइ, अच्चिकरंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू रायं अच्छिकरेइ, अच्छिकरंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू रायं अत्थि करेइ, अत्थिकरंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ एवं रायं रक्खियं ॥ ८ ॥ एवं णगर रक्खियं ॥ १२ ॥ एवं णिगम रक्खियं ॥ १६ ॥ एवं सव्वा रक्खियं ॥ २० ॥ जे भिक्खू कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ,

अर्थ

जो साधु साध्वी राजा को अपने वशकरे, वश करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी राजा की अर्चा-पूजा करे, अर्चा-पूजा करते को अच्छा जाने. ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी राजा की अच्छा करे, द्रव्य से वस्त्र भूषणादि कर भाव से गुणागुणादि कर. अच्छा करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु राजा के अर्थी होवे, अर्थी होते को अच्छा जाने. ॥४॥ उक्त राजा आश्रिय चार सूत्र कहे यथा—१ वश्यमे करे, २ अर्चा करे, ३ अच्छा करे और ४ अर्थी बने. यही चार सूत्र राजरक्षक प्रधानादि आश्रिय कहना. ॥ ८ ॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र नगर रक्षक-कोटवालादि आश्रिय कहना. ॥ १२-॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र निगम रक्षक [ ठाकूरादि ] आश्रिय कहना. ॥ १६ ॥ उक्त प्रकार ही चार सूत्र ग्रामादि सब के रक्षक-फोजदार आदि आश्रिय कहना ॥ २० ॥ जो साधु साध्वी अखंड औषधी ( बिना पीसे अन्न ) का आहार करे अर्थात् सचित्त अन्न आदि को भोगवे, भोगवे

आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू आयरिय अदिन्नं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू आयरियं उवज्झाएहिं अविदीणं त्रियगयं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू ठवणाकुलाइं अजाणियं अपुच्छियं अगवेसियं पुव्वामेव पिंडवाय पडियाए अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं उवस्सयांसि अविहाए अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू णिग्गंथीणं आगमणं पहंसि दंडगं वा, लट्ठियं वा,

भक्ष की जाति रोटी आदि आवे जिसे खोले विना पुड उघाडे विना अंदर से मति लेखन किये विना खावे ऐसे खाते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु साध्वी आचार्य उपाध्याय को विना दिये चारों प्रकार के आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु साध्वी आचार्य उपाध्याय को विना दिये दूध दही घृत तेल मिष्टान आदि विगय का आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु साध्वी गृहस्थ के घर में आहार आदि साधु को देने योग्य वस्तु स्थापन कर रखी हो उस को अनजाने अनपूछे विना गवेषना किये पहिले ही आहार के लिये प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु-साध्वी के उपाश्रय में अपना आगम जनायें विना [ खांसी आदि किये विना] प्रवेश करे, प्रवेश करने को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु साध्वी के आने के रास्ते में दंडा लकडी

मूल

रयहरणं वा मुहपत्तिं वा अण्णयरं वा उवगरणजायं ठवेइ, ठवंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू णवाइं अणुप्पणाइं अहिगरणाइं उप्पाएइ, उप्पायंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू पोराणाइं अहिगरणाइं खामियं विओसमियाइं पुणो-उदीरेइ, उदीरंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू मुहविफालिय हसइ, हसंतं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडियं देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडियं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ

अर्थ

रजोहरण मुहपति आदि उपकरण स्थापन करे ( मस्करी के वास्ते ) स्थापन करे तो अच्छा जाने ॥२६॥ जो साधु साध्वी नये क्लेश-झगडे की उदीरणा करे, नया झगडा उत्पन्न करने को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु साध्वी प्रथम क्लेश-झगडा हुवा था उस को खमत खामना कर शांति करदी, फिर उस क्लेश की उदीरणा करे, करने को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु साध्वी मुख फाड फाड कर हंसे, हंसने को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु साध्वी पासत्थे-शिथिलाचारी को मदद देवे तथा उन का संघाडा बिगाडे-अपने शिष्यादि उन के साथ देवे, देवे को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु साध्वी पासत्थ साधु साध्वी के पास की मदद की आप इच्छा करे तथा उन के संघाडे की आप स्वयं इच्छा करे, अपने में उन को मिलादेवे, मिलाने को अच्छा जाने

॥ ३१ ॥ एवं उसण्णस्स ॥ ३३ ॥ एवं कुसिलस्स ॥ ३५ ॥ एवं णितियस्स ॥ ३७ ॥ एवं संसत्थस्स ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू उदओलेण वा संसणिद्धेण वा हत्थेण वा मत्थेण वा, दव्वीएण वा, भायणेण वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिगाहेइ, पडिगाहंतं वा, साइज्जइ ॥ ४० ॥ एवं १ उदउल्ले, २ ससणिद्धे, ३ ससरक्खे, ४ मट्टिया, ५ ओसा, ६ लोणेय ७ हरियाल, ८ मणिसिल, ९ वणि, १० गेरु, ११ सेढिय, १२ हिंगलुए, १३ अंजन, १४ लोद्धे,

॥ ३१ ॥ इस प्रकार उसन्न (ज्ञानादि के विराधक) साधु के दो सूत्र कहना-१ उन को चद्दर लेवे तथा अपने शिष्यादि देवे उन को अपने में शामिल ॥ ३३ ॥ ऐसे ही कुशील-भ्रष्टाचारी साधु के भी उक्त दो आलापक कहना ॥ ३५ ॥ ऐसे ही नित्य प्रतिसेवी-सदैव दोष लगानेवाले साधु के दो आलापक कहना ॥ ३७ ॥ ऐसे ही संसर्ग अवनीत मर्यादा भंजक के दो आलापक कहना ॥ ३९ ॥ जो साधु पानी से भींजे हुवे अथवा पूरे सूके न हो ऐसे हाथादि अंग, पात्रादि उपकरण, कुडछी आदि द्रव्य तपेलादि भाजन से अशनादि चार प्रकार का आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ ऐसे ही २१ आलापक कहना उन के नाम-१ पानी से, २ स्निग्ध (पूरा सूका न हो) ३ सचित्त रज से, ४ सचित्त मट्टी से, ५ ओस के पानी से, ६ निमक से, ७ हरताल से, ८ मणसिल से

१५ कुक्स, १६ पिठ्ठ, १७ कंद, १८ मुल, १९ सिंगवेरय, २० पुफुक, २१ कंकुस्डे, एकवीसं भेवे हत्था, पडिगाहिइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ एवं एकवीसं हत्था भाणियव्वा ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू गामरक्खियं अत्तिकरेइ, अत्तिकरंतं वा साइज्जइ ॥ एवं सोचेव रायगमओ णेयव्वो ॥८४॥ एवं देसरक्खियं• ॥८८॥ एवं सीमरक्खियं ॥९२॥ एवं रन्नो रक्खियं ॥९६॥ एवं सव्वरक्खियं ॥१००॥

९ थानी (पीली मट्टी) से, १० गेरू से, ११ खडी से. १२ हिंगलू से, १३ अंजन से, १४ लोद से, १५ कुक्स से, १६ सचित्त आटे से अर्थात् तुर्त के पीसे हुवे आटे से.१७कंद से,१८मूल से, १९ अद्रक से २० फूल से, और २१ कोष्टक से इन २१ प्रकार की सचित्त वस्तु से भाजन भरा होवे उस भाजन से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे करते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥ उक्त २१ प्रकार की वस्तु से हाथ भरे होवे उस मे लेवे लेते को अच्छा जाने ॥ ८१ ॥ जो साधु साध्वी ग्राम का अधिकारी पटेलादि पालक होवे उस को अपना करे. अपने करते को अच्छा जाने. यों जिस प्रकार राय के उद्देशे की आदि में चार गमे करे ऐसे ग्राम अधिकारी के भी कहना ॥८४॥ ऐसे ही देश रक्षक (फोजदार आदि) के भी चार गमे कहना ॥८८॥ ऐसे ही सीम रक्षक-नाकादार आदि के भी चार गमे कहना ॥ ९२ ॥ ऐसे ही जंगल के रक्षक के भी चार गमे कहना ॥९६॥ ऐसे ही सब रक्षक के भी चार गमे कहना ॥१००॥ जो साधु साध्वी

सूत्र

थंडिलंसि उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ १५९ ॥ जे भिक्खू उच्चार पासवणं अविहीए परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥ १६० ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिठवेचा णपूच्छइ णपूछंतं वा साइज्जइ ॥ १६१ ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेचा कट्ठेण वा कविलेणवा अंगुलियाए वा, सिलागए वा, पूच्छइ पूच्छंतं वा साइज्जइ ॥१६२॥ जे भिक्खू उच्चार-

अर्थ

में वडीनीत लघुनीत परिठावे. परिठाने को अच्छा जाने ॥ १५९ ॥ जो साधु साध्वी अविधी से वडीनीत लघुनीत परिठावे अर्थात स्थान की दिशा की प्रति लेखना नहीं करे. देखे बिना जीवादि होवे पूंजे बिना परिठावे. ऊंची नीची खड्डे वाली फटी तराडो वाली जमीन पर परिठावे. एक स्थान डाल्दे. अर्थात् लघुनीत को छोटा २ नहीं परिठावे. ऐसे अविधी से परिठाव, परिठाते को अच्छा जाने ॥ १६० ॥ जो साधु साध्वी वडीनीत लघुनीत परिठाने की जगह जिस धनी की होवे उस को पूछे बिना वहां परिठावे. बिना पूछे परिठाते को अच्छा जाने ॥ १६१ ॥ जो साधु साध्वी वडीनीत लघुनीत परिठा कर अपान द्वार ( गुदे ) को काष्टकर वांस की खपाटी कर अंगुलीयों कर लोहादि की सलाका कर पूंछे पूंछते को

छोटे स्थान में सग्रह होकर रहने से जीवोत्पत्ति जीव घात होवे. जलदी नहीं सूकने से दुर्गंधादि उत्पन्न हो नजीक वाले को ग्लानी पेदा करे. आस पास हरीजीवादि होने से उन पर जाने से जीव घात होवे. इत्या दोषोत्पत्ती होती है.

पासवणं परिट्ठविचा णायमइ णायमतं वा साइज्जइ ॥ १६३ ॥ जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेता तत्थेव आयमंति आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६४ ॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता अइदूरे आयमइ, अइदूरे आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६५॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता, परितिण्हं नावा पुसाणं आयमइ, आयमंतं वा साइज्जइ ॥ १६६ ॥ जे भिक्खु अपरिहारिएणं परिहारियं वएज्जाएहि अज्ञातुमं

अच्छा माने * ॥ १६२ ॥ जो साधु साध्वी बडीनीत लघुनीत परिठावे बाद. शुची नहीं करे. शुची नहीं करते को अच्छा जाने. + ॥ १६३ ॥ जो साधु साध्वी जिस स्थान लघुनीत बडीनीत परिठाइ उस स्थान शुची करे आचीर्ण लेवे, लेते को अच्छा जाने ※ ॥ १६४ ॥ जो साधु साध्वी बडीनीत लघुनीत परिठाकर बहुत दूर जाकर शुची करे. शुची करते को अच्छा जाने ॥ १६५ ॥ जो साधु बडीनीत लघुनीत परिठाकर तीन पसली [ खोबे या अंजली ] पानी से अधिक पानीले शुची करे करते को अच्छा जाने ॥ १६६ ॥ जो साधु साध्वी अपरिहारिक किसी भी प्रकार के प्रायश्चित को प्राप्त नहीं हुवा ऐसा

* क्यों कि उस से कृमि आदि जीवकी घात हो जावे तथा कापादि ग्रहण करते अदत्तादान लगे. इस लिये वस्त्र के खांडवे से प्रथम शुद्ध करे.

+ अशुची रहने से असज्झाइ होवे तथा प्रवचन की हीलना होवे. आदि दोषोत्पन्न होवे.

※ अर्थात् जरा इधर उधर सरकर शुची करने से समूर्छिम की वृद्धि नहीं होवे. हाथ वस्त्रादि भी भरा वे नहीं.

सूत्र

च आहं च एगओ असणं वा पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा पडिगाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं २ भोक्खामो वा पाहामो वा, जोतं एवं वदइ, वंदतं वा साइज्जइ ॥१६७॥तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥ निसीयज्झयणस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ * * * * *

अर्थ

शुद्धाचारी साधु परिहारिक करता पांच दिन से छ मासादि प्रायश्चित्त को. प्राप्त हुवा वह प्रायश्चित्त युक्त है अर्थात् उस का प्रायश्चित्त पूरा उतारा नहीं होवे. वह सदोषी साधु निर्दोषी साधु से इस प्रकार कहे कि अहो आर्य ! तुम और हम दोनों एक स्थान सामिल अशनादि चारों आहार ग्रहण करें अर्थात् वेहर कर लावें. फिर लाये बाद अपन अलग २ करके आहार आदि भोगवेंगे, पानी आदि पीवेंगे. जो शुद्धाचारी साधु उस के वचन को अंगीकार करे. अथवा अंगीकार करते को अच्छा जाने ॥ १६७ ॥ यह सब १६७ बोल हुवे. इसमें से एकही बोल सेवन करनेवाले साधु साध्वीको लघुमासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त १६७ दोष परवशपने बिना उपयोग से लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासना का प्रायश्चित्त. आतुरता से उपयोग पूर्वक लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, आयंबिल का प्रायश्चित्त और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छाभाव से लगावे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ उपवास का प्रायश्चित्त आता है. यों जितने दोष लगावे उतने अलग २ प्रायश्चित्त मानना. इति निशीथ सूत्र का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ ० ० ०

## ॥ पांचवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठाणं वा, सिज्जं वा, णिसीहियं वा, चेएइ, चेएइतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा, पलोएज्ज वा, आलोयंतं वा, पलोयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा असणं वा ४ आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्खमूलंसि ठिच्चा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठावेइ, परिट्ठावेतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्त रुक्ख मूलंसि ठिच्चा सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं समुद्दिसइ, समुद्दिसंतं वा

अर्थ

जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर कायोत्सर्ग करे, बिछोना करे, बैठे, इतना काम स्वयं करे, अन्य करने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर खड़ा रहकर इधर उधर अवलोकन करे, देखे विशेष देखे ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी सचित्त वृक्ष के मूल पर खड़ा रहकर अशनादि चारों प्रकार का आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु सचित्त वृक्ष के मूल पर खड़ा रहकर लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाने को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त वृक्ष के मूल पर खड़ा रहकर स्वाध्याय करे करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ ऐसे ही नया ज्ञान पढावे पढाते को अच्छा

मूल

अवलेहणियं वा, वेणसुइयं वा, एवं वि दोवि चेव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं पे-यव्वो ॥ २१ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा संथारयं पच्चप्पिणत्ता दोच्चंपि अणुणविय अहिठेइ, अहिठंत वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू पाडिहारीयं सागारिय संतियं वा सेज्जा संथारयं पच्चप्पिणिचा अणुणविय अहिठति अहिठंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू सणकप्पासोओ वा, उणकप्पासोओ वा, पोडकप्पासोउ वा, आमिलकप्पाओ वा, दीहसुत्ताइ करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥२४॥

अर्थ

दंडा, लकडी, बांस की खपाटी, बांसादी की सूई, इन को पडिहारी ग्रहण करके लावे जिस के भी दो आलापक अन्य गृहस्थ आश्रिय और दो आलापक शैय्यान्तर आश्रिय, यों चार आलापक कहना ॥२०॥ जो साधु पडिहारीया शैय्या-स्थानक संथारक-बिछाने का पाटपाटादि पीछा दे दिया हो उसे दूसरी वक्त मालिक की आज्ञा बिना ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु शेय्यान्तर के घर के शैय्या संथारक पीछे दे दिये हों, उन को पीछे ग्रहण करती वक्त शैय्यान्तर की आज्ञा बिना लिये लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु सण का डोरा, ऊन का डोरा, वन के कपास का डोरा, आमिक कपास का डोरा लम्बा बनावे बनाने को अच्छा जाने॰ ॥ २४ ॥ जो साधु सचित्त लकडी का दंडा,



---

● लम्बे डोरे को बनाने दूर दूर फिरते पानी आदि गिरने सूखे इत्यादि सामग्री का व्याघात होने दोष लगता है.

सूत्र

जे भिक्खू सचित्ताइ-दारु दंडाणि वा वेणुदंडाणि वा, वेतंदंडाणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ एवं धरेइ, धरतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ एवं चित्ताइ दारु दंडाणि वा, वेणु दंडाणि वा ॥ ३१ ॥ एवं विचित्ताणि वा, दारु दडाणि वा जाव साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू णवेसंसि वा, गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा ४ पडिग्गहेइ ? पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू णवेसंसि वा,

अर्थ

दान का दंडा वेन का दंडा [ छडी ] स्वयं बनावे अन्य बनाते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ ऐसे ही सचित्त दंडा स्वयं रखे रखने को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ ऐसे ही सचित्त दंडा स्वयं वापरे अन्य वापरते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ ऐसे ही चित्राम युक्त लकडी के बांस के बेंत के दंड के तीन सूत्र कहना ( १ बनावे २ रखे, ३ वापरे ) ॥ ३० ॥ ऐसे ही विविध प्रकार के रंग रंगित दंड के तीन सूत्र कहना ॥ ३३ ॥ जो साधु नवे स्थापन किये हुवे ग्राममें यावत् सन्नीवेसमें प्रवेशकर असनादि चारों प्रकार के आहार ग्रहण करे, ग्रहन करते को अच्छा जाने + ॥ ३४ ॥ जो साधु नवी खोदी हुई लोह की खदान में, तांबे की खदानमें, तरवे

+ राजादि की सेना के पडावादि के कारन से नवीन ग्रामादि की स्थापन हुइ हो उस में जो साधु जावे तो शत्रु को हेर चोर जान कर पकडे, अपशकुन जमझ हल्ला करे, इत्यादि दोष उत्पन्न होवे, इसलिये निषेध किया है.

सूत्र

अयआगरंसि वा, तंबआगरंसि वा,तओआगरंसि वा, सिसआगरंसि ता, हिरणागरंसि वा, सुवण्णागरंसि वा रयणागरंसि वा, वइरागरंसि वा, अणुप्पविसित्ता असणं वा४, पडिग्गहेइ, पडिग्गहेतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू मुहवीणीयं करेइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू दंतवीणीयं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू ओठ वीणीयं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खू णास वीणियं करेइ, करेतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू कंख वीणियं करइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू हत्थ वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ

अर्थ

की खदान में शीशे की खदान में, चांदी की खदान में, सुवर्ण की खदान में,रत्न की खदान में, वज्ररत्न की खदान में, प्रवेश कर असनादि चारों प्रकार का आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने* ॥३५॥ जो साधु मुख को वेणा ( वादित्र ) जैसा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ दांत को वीणा जैसा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ होठ को वेणा जैसा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ नाक को वेणा जैसा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ कांख को वेणा जैसी बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ हाथ को वेणा जैसा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ नख को वेणा

* इस में प्रवेश करने का अर्थ पास का जाना उक्त सूत्र में कहे दोनों का समर है.

॥ ४१ ॥ जे भिक्खू नक्ख वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पत्तवीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खु पुप्फ वीणियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खु फल वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू वीयं विणीयं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खु हरीय वीणियं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू मुहे वीणियं वाएइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥४८॥ जे भिक्खू दंत वीणियं वाएइ, वायंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ एवं उट्ठ वीणियं ॥ ५० ॥ एवं णास विणीयं ॥ ५१ ॥ एवं कंख विणीयं ॥ ५२ ॥ एवं हत्थ वीणियं ॥ ५३ ॥ एवं नक्ख वीणियं ॥ ५४ ॥ एवं पत्त वीणियं ॥ ५५ ॥ एवं पुप्फ वीणियं ॥ ५६ ॥ एवं फल

बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ पत्र की, फूल की, फल की, बीज की, हरित काय की, वीणा बनावे, बनाने को अच्छा जाने ॥ ४२-४७ ॥ जो साधु मुख को वीणा नामक वादित्र जैसा बनाकर बजावे, बजाने को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ ऐसे ही–दांत को, होठ को, नाक को, कांख को, हाथ को, नख को, वीना की तरह बजावे, बजाने को अच्छा जाने ॥ ४२-५४ ॥ ऐसे ही पत्ते की, फूल की,

वीणियं ॥ ५७ ॥ एवं बीय वीणियं ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू हरीय वीणियं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ॥५९॥एवं अण्णयराणि वा तहाप्पगाराणि वा अणुदिन्नाइं सद्दाइ उदीरेइ, उदीरंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिक्खू सपाहुडियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू सपरिकम्मं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू णत्थि संभोगवत्तिया



फल की, बीज की. वीना बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ५६-५८ ॥ जो साधु हरित काय को, वीना को बजावे, बजाते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ इस प्रकार ही अन्य २ प्रकार के शब्द वादित्रों के जानवरों के वगैरे तरह २ के शब्द की उदीरणा करे. तथा मोहनीय कर्म जो उपशांत पाया है उस की अनेक प्रकार के शब्दो कर उदीरणा करे, उदीरणा करते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥ जो साधु साध्वी के लिये उद्देश कर शैय्या स्थानक बनाया उस में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु निमित्त मकान साफ कराया द्वार खिडकी बनाइ लिपाया छवाया हो उस में रहे. रहते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु मूलगुण उत्तरगुन की घातकारी आरंभ का उत्पादक. या साधु के लिये उसमें कुच्छ भी निकालना धरना कराया हो उसमकान में प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने॥६३॥ जो साधु जिन साधुओं के साथ अपना संभोग न हो-आहार पानी सामिल न हो ऐसे विरुद्ध समाचारी वाले

सूत्र

पकिरियाति वदेइ वदंतं वा साइज्जइ॥६४॥जे भिक्खू वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा पायपुंछणं वा, अलं थिरं धुवं धाराणिज्जं, पलिछिंदियं परिट्ठावेइ, परिट्ठावेतं वा, साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जे भिक्खू लाउयपायं वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा, अलं-थिरं धुवं धाराणिज्जं,पलिछिंदियं२परिट्ठावेइ, परिट्ठावेंतं वा साइज्जइ ॥६६॥ जे भिक्खू दंडगं जाव वेणुसुयणं वा पलिछिंदियं २ परिट्ठावेइ,परिट्ठ वेतं वा साइज्जइ ॥६७ ॥ जे भिक्खू अइरेयपमाणं रयहरणं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

वाले साधु के साथ संभोग करने का कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु साध्वी वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण, जो परिपूर्ण है, दृढ है, निश्चल बहुत काल तक चले ऐसा है. रखने योग्य है उस को भांग तोड टुकडे कर परिठावे. परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु तुम्बे का पात्र, लकडे का पात्र, मट्टी का पात्र, मजबूत स्थिर बहुत काल चलने जैसा रखने योग्य उसे भांग तोड टुकडे २ कर परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु दंडे को यावत् बांस की खपाटी पूर्ण स्थिर चलने योग्य है उस को भांग तोड परिठावे परिठाते को अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु प्रमाण से उपरांत रजोहरण रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु साध्वी बहुत सूक्ष्म पतली फलीयों का रजो-

वरंड हुवे भी या हुवता नहीं पंड सुख से प्रमार्जन हो सके वह प्रमाणोपेत, इस से कमी ज्यादा हो वह प्रमाण रहित

मूल

गुडुमाई रयहरणं सीमाई करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू रयहरणस्स एक्कं बंधेइ, देतं वा साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू रयहरणस्स परं तिणिबंधगे देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥७१॥ जे भिक्खू रयहरणे अविहिए बंधण बंधइ, बंधतं वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू रयहरणं कट्ठसग बंधणं बंधइ बंधतं वा साइज्जइ

अर्थ

रण बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु रजोहरण के ऊपर नशीथिया के डोरे का एक ही बंधन-एक ही मांठ देकर बंधे, बंधते को अच्छा जाने ॥७०॥ जो साधु रजोहरण के निशीथिया के ऊपर के डोरे के तीन बंधन से ज्यादा देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ जो साधु रजोहरण को अविधी से बंधी ज्यादा उपर नीचे ढीला नीचे मग जावे और छूट जावे ऐसा बंधे, बंधते को अच्छा जाने॥७२॥ जो साधु रजोहरण को बहुत कठन बंधन से बंधे. सब रजोहरण बंध दे जिस से पुंजा नहीं जावे. अथवा एक भाग सूत का एक भाग ऊन का एक भाग सन का यों अलगर भाग का रजोहरण बनावे.

[illegible] २०० [illegible]

[illegible] न हो.

● [illegible]

॥ ७३ ॥ जे भिक्खू रयहरणं वोसट्ठं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू रयहरणं अणसिट्ठं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू रयहरणं अदिट्ठं, अदिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥ ७६ ॥ जे भिक्खू रयहरणं ओसीसे मूले ठवेइ ठवंतं वा साइज्जइ॥७७॥ जे भिक्खू रयहरणं तुयट्टेइ तुयट्टंतं वा साइज्जइ ॥७८॥ तं सेवमाणे आवज्जइ, मासियं परिहार ठाणं ओग्घाइयं॥निसीथज्झयणस्स पंचमोदशो सम्मत्तो ॥ ५॥

तरह २ रंग रंग तरह २ के डोरे कर बंधे बंधते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु रजोहरण को अपने मे बहुत दूर ( ५ हाथ से ज्यादा ) रखे रखते को अनुमोदे तथा रजोहरण विना गमनागमन करे करते को अच्छा जाने ॥७४॥ जो साधु तीर्थंकर की आज्ञा से विरुद्ध, तथा मालिक का विना दिया रजोहरण रखे रखते को अनुमोदे ॥ ७५ ॥ जो साधु रजोहरण पर बैठे बैठते को अच्छा जाने ॥ ७६ ॥ जो साधु रजोहरण को मस्तक के नीचे तकीया रूप, रखे, रखते को अनुमोदे ॥ ७७ ॥ जो साधु रजोहरण पर शयन करे शयन करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ यह ७८ प्रकार के दोषों के सेवन करनेवाले साधु को अलग २ लघु मासिक प्रायःश्चित परवशपने उपयोग विना दोष लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७, एकासने का प्रायःश्चित आता है यथा-आतुरता से तथा उपयोग सहित दोष लगे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ आयंबिल का प्रायःश्चित, और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से दोष लगावे तो जघन्य ४, मध्यम १५, उत्कृष्ट २७ उपवास का प्रायःश्चित आता है. इति नीसीथ सूत्र का पांचवा उद्देशा ॥ ५ ॥

सूत्र

करेतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स, मेहुण वडियाए-कलहेकुज्जा, कालहेबूया, कलंहवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-लेहंलिहइ, लेहलिहावेइ, लेह वडियाए वहियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू माउमग्गस्स मेहुण वडियाए-पिठुंतं वा सोयंतं वा, पोसंतं वा पोसंमिवा भल्लीएण उगाएइ, उगायंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-पिठुंतं वा, सोयंतं वा, पोसंतं वा, पोसंसिं वा

अर्थ

दूर कर नग्न बने, निर्लज्ज वचन बोले, ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से क्लेश करे, क्लेशकारी वचन बोले, वस्ती छोड गमन करे, ऐसा करने को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर विषय भाव के लेख लिखे, अन्य के पास लिखावे, लेख लिखने को बाहिर जावे, ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियोंवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा से पृष्टांतर (मलद्वार) में, श्रोतांतर (योनि) में इन्द्रिय को पोंछे, जिस कर इन्द्रिय सचल बने, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर पृष्टांतर (गुदा) में श्रोतांतर (योनि) में इन्द्रिय का शोषन होगा ऐसा जान औषधादि मर्दन कर मद उत्पन्न करे, आचेण

जाएणं अट्ठमंगेन वा मखंतं वा साइज्जइ ॥ १७॥ एवं जहा तइया उद्देसए गंडाइंपि जो गमओ सोचेव इहंपि णेयव्वो जाव धूवेज वा, पधोएज वा धूवंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कसिणाए वत्थाइं धरेइ, धरेंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ एवं अहियाए वत्थाइं धरेइ, धरेंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ एवं धोत रत्ताइं वत्थाइं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ चित्ताए मलिणाइं, एवं विचित्ताइं वत्थाइं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स

अर्थ प्रकार के पदार्थ कर औषध मलम का लेप करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ यों जैसे तीसरे उद्देशे में गड गुम्बडादि के गमे कहे हैं वे सब यावत् धोवे विशेष धोवे धोने को अच्छा जाने वहां तक के यहां कहना ॥ १८ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर संपूर्ण वस्त्र (अखंड थान) रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ ऐसे ही मर्याद उपरांत वस्त्र रखे ॥ २० ॥ ऐसे ही धोये हुवे रंग हुवे वस्त्र धारण करे, धारण को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अपने दोष ढाने एक रंग वस्त्र रखे, मलीन वस्त्र रखे, तथा मोह उपजाने विचित्र रंग के वस्त्र रखे, ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों वाली स्त्री से मैथुन के लिये अपने पांव मसले विशेष मसले यों तीसरे उद्देशा के १६ वे सूत्र से लगा कर यावत् ७१ वा सूत्र ग्रामानुग्राम

आहारं आहारेइ,आहारंतं वा साइज्जइ॥७९॥तंसेवमाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ २३ ॥ निसीह ज्झयणस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥६॥ * *

तथा ४ महिने का छेद और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा मात्र से करारे तो जघन्य ४ अष्टम(तेले) पारने में आयंबिल तथा ६० दिन का छेद, मध्यम१५अष्टम पारने में आयंबिल, तथा ३० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास. पारने में आंबिल, [तथा मूल से दीक्षा.] इति निशीथ का छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ ३ ॥

सूत्र

## ॥ सातवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-तण मालियं वा, मुंज मालियं वा, भिडिं मालियं वा, मणय मालियं वा, पिच्छ मालियं वा, दंत मालियं वा, सिंग मालियं वा संख मालियं वा, हड मालियं वा, भंड मालियं वा, कट्ठ मालियं वा, पत्त मालियं वा, पुप्फमालियं वा, फलमालियं वा, वीयमालियं वा, हरियमालियं वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ एवं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ एवं पिणद्धेइ, पिणद्धंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू माउ-

अर्थ

जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारन करनेवाली स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर, वारणादि तृणों की माला, पानी में घास ऊगे उस मुंज की माला, भिडी वनस्पति की माला, मयन [ मोम ] की माला, पक्षी के पांखों की माला, हस्ति आदि के दांतों की माला, श्रृंग की माला, शंख की माला, हड्डीयों की माला, मट्टी की माला, लकड की माला, पत्ते की माला, फूल की माला, फल की माला, बीज की माला, हरी की माला, बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा करके रखे रखते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा से पहने, पहनने को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ उक्त प्रकार की मालाओं उक्त प्रकार की इच्छा से वारम्वार भोगवे,

गामस्स मेहुण वडियाए-आयलोहाणि वा, तंबलोहाणि वा, तओलोहाणि वा, सीसलोहाणि वा, रुप्पलोहाणि वा,, सुवण्णलोहाणि वा, करेइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं धरेइ, धरतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-हाराणि वा, अद्धहाराणि वा, एकावली वा, मुत्तावलि वा, कणगावली वा, रयणावली वा, कडगाणी वा, तुडियाणि वा, केउराणी वा, कुंडलाणी वा, पट्टाणी वा, मउडाणी वा, पलंबसुत्ताणी वा, सुवण्णसुत्ताणी वा, करेइ, करतं साइज्जइ ॥ ८ ॥

मोगरे को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा करके लोहे का संचय करे, तांबे का संचय करे, कथीर (कथीर) का संचय करे, सीसे का संचय करे, रूपे का संचय करे, सुवर्ण का संचय करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ उक्त वस्तुओं धारन करे धारन करते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ उक्त वस्तु को वारम्वार भोग में लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारन करनेवाली स्त्री से मैथुन की इच्छा करके हार १८ सरा, अर्धहार ९ सरा, एकावली, मुक्तावली, कनकावली, रत्नावली, कड़े बाहुबन्ध, तोडा, कुंडल, पाटमुकट, लम्बसूत्र, सुवर्णसूत्र बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ उक्त साधु

सूत्र

एज धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं साइज्जइ ॥१०॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-आयणाणि वा, आइणपावाराणि वा, कंबलाणि वा, कंबलपावाराणि वा, कायराणि वा, कायरपावाराणि वा, कालमियाणि वा, णीलामियाणि वा, गोरामियाणि, वा, सामाणि वा, महासामाणि वा, उट्टाणि वा, उट्टलेसाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, परवगाणि वा, सिहणाणि वा, सिहणपावाराणि वा, खोमाणि वा, दुगल्लाणि वा, मोरिडरहणाणि वा, पत्तुलाणि वा, सामाआवरंत्ताणि वा, चीणाणि वा, अंसुआणि

अर्थ

॥ ९ ॥ उक्त भूषण वारम्वार भोगवे वारम्वार भोगवते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर अजीर्ण-कमाया हुवा चर्म, चर्म के ओढने के वस्त्र, कम्बल का खंड, कम्बल ओढने के लिये, कायर जाति का वस्त्र खण्ड, कायर वस्त्र ओढने को, कृष्ण मृग का चर्म, कृष्ण मृग चर्म ओढने के लिये, श्वेत मृग का चर्म, श्वेत मृग का चर्म ओढने के लिये, श्याम वस्त्र खंड, बड़ा श्याम वस्त्र, ऊंट का चर्म, व्याघ्र का चर्म, बडे वाघ का चर्म, साप का चर्म, सिंह का चर्म, सिंह का चर्म ओढने जैसा, कपास का वस्त्र, दुकल-वांक के वस्त्र, तिरड वृक्ष की छाल के वस्त्र, तंतूवे पाट समान उन के वस्त्र, मानदेश के वस्त्र, चीनदेशोत्पन्न वस्त्र, सूक्ष्म ( पतले ) वस्त्र, सुवर्ण के तार के वस्त्र,

मूल

वा, कणगकंताणि वा, कणगखंसियाणि वा, कणगचित्ताणि वा, कणगविचित्ता-णि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥११॥ एवं धरेइ, धरंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ एवं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए- अंखिसि वा, उरांसि वा, उदरांसि वा, थणंसि वा, गहाय संचालेइ, संचालंतं वा, साइज्जइ॥१४॥ जे भिक्खू माउ-ग्गामस्स मेहुण वडियाए-अण्णमण्णस्सपाए, अमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा, पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥१५॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए–अण्णमण्णस्स पाए

अर्थ

सुवर्ण के पत्र के वस्त्र. सुवर्ण के चित्र फूलादि. किये वस्त्र. सुवर्ण के विचित्र प्रकार बनाये वस्त्र. आभरण-भूषण मंडित वस्त्र. विचित्र प्रकार के आभरण से मंडित वस्त्र. बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ उक्त प्रकार के वस्त्र धारन करे. धारन करने को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ उक्त प्रकार के वस्त्रोंको भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रिय की धारन करने वाली स्त्री से मैथुन की इच्छा कर, आंखों, जंघा, पेट, स्तन, हाथ में ग्रहण कर संचलन करे करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारन करनेवाले स्त्री से मैथुन की इच्छा कर परस्पर एकेक के पांवों को पूंजे झाडे विशेष पूंजे पूंजते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की

संबाहेज्ज वा, पलिमंदेज्ज वा, संबाहंतं वा पलिमंदंतं वा साइज्जइ ॥६९॥ एवंतइओ उद्देसो जो गमओ सोचेव इहंवि णेयव्वो जाव जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणं वडियाए गामाणुगामं दुईज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेइ, करेंतं वा, साइज्जइ ॥७०॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए अणंतरहियाए पुढवीए निसीयावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेंतं वा, तुयट्टावेंतं वा साइज्जइ॥७१॥एवं ससणिद्धं वा पुढवीए॥७२॥ एवं ससरक्खाए पुढवीए-मट्टिया-कडाएपुढवीए-चित्तमंताए सिलाए-चित्तमंताए लेलुए-

धारक स्त्री से मैथुन की इच्छा कर परस्पर एकेक के पांव मसले, वारम्वार मसले, मसलते को अच्छा जाने ॥ यों जिस प्रकार तीसरे उद्देश में कहा है १६ वे सूत्र से ७१ वे सूत्र तक सब ५५ सूत्र यहां कहना यावत उस का अन्तिम सूत्र जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा करता हुवा परस्पर एकेक का मस्तक ढके ढकते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा कर सचित्त पृथ्वी ( जो पानी शस्त्रादि अग्र परिणमने से अचित्त नहीं बनी हो, उस पर बैठे, शयन करे, बैठते शयन करतेको अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ ऐसे ही सचित्त पानी से भीजी पृथ्वी पर बैठे शयन करे करते को अच्छा जाने॥ ७२ ॥ ऐसे ही सचित्त रज से भरी हुई पृथ्वी पर बैठे शयन करे, करते को अच्छा जाने ॥७३॥ ऐसे ही मट्टी के

सूत्र

कोलावासंसि वा- दारुप जीवपइट्ठए-सअंडे, सपाणे-सबीए-सहरिए, सओसे-सउतिंग-पणग-दग,मट्टिय,मकडा-संताणगंसि णिसियावेज्ज वा, तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावंतं वा, तुयट्टावंतं वा, साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए आगंतारेसु वा, जाव परियसहेसु वा, णिसीयावेज्ज वा,तुयट्टावेज्ज वा. निसीयावंतं वा तुयट्टावंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-आगंतारेसु वा, जाव

अर्थ

इन पर ऐसे ही ऊपर किंचित अचित हुई है परंतु ऊपर धक्का लगने से अन्दर के जीवों की उपघात होती हो ऐसी कच्ची पृथ्वी पर. सचित्त शिला पर, सचित्त कंकरों पर, लकडी के जाले उदाइ के घर करोली के खाड वगैरह बहुत जीवों का स्थान हो वहां तैसे ही सडे हुवे लकड पर. जिस स्थान शयनासन में अंडे होवे. बेइन्द्रियादि प्राणी होवे, गेहूं चनादि बीज होवे, हरित काय होवे, चींटियों दीमक के नगरे होवे, फूलन होवे, पानी भरा होवे, ओस आदि होवे, ऐसे स्थान में शयनासन पर बैठे शयनासन करे करते को अच्छा जाने ॥ ७३ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छा कर मुसाफरों के उतरने की सराय में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थ के घर में, तापसों के मठ में, बैठे शयन करे. बैठते शयन करते को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु माता के समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की इच्छाकर मुसाफर खाने में यावत् तापसों के आश्रम में बैठे शयन करे मजनादि चारों प्रकृ-

सूत्र

माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अमणुण्णाइं पोग्गलाइं निहरेइ निहरेतं वा साइज्जइ॥७९॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवकिरइ, उव किरंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरं पसुजाइं वा, पक्खिजाइं वा,पायंसि वा, पक्खिसि वा,पुच्छंसि वा,सीसंसि वा,गहाय संचालेइ,संचालंतं वा साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरंपसुजायं वा, पक्खिजायं वा, सोयंसि वा, कंठवा, कालिचिएण वा, अंगुलियाए वा, सिलागं वा,

अर्थ

करे, करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु माता समान इन्द्रियों की धारक स्त्री के साथ मैथुन की अभिलाषा करके शरीर के, वस्त्र के, स्थानक के अमोज्ञ पुद्गलों दूर करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ७९ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर मनोज्ञ- अच्छे सुगंधी पुद्गलों शरीर में वस्त्र में स्थानक में प्रक्षेप करे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु माता समान अवयव वाली स्त्री के साथ मैथुन की इच्छाकर अन्य गौ आदि पशु जातिका मयुरादि पक्षी जातिका पांव पूंछ मस्तक ग्रहण करके अपने गुप्त अंग को लगावे ऐसे करतेको अच्छा जाने॥८१॥ जो साधु माता समान स्त्रीसे मैथुन की इच्छा कर अन्य किसी पशु जाति पक्षी जाति के गुह्य स्थान में काष्ट बांस अंगुली शलाका प्रक्षेप कर

सूत्र

अणुपावसित्ता संचालेइ, संचलंतं वा साइज्जइ ॥ ८२ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-अण्णयरं पसुजायं वा, पक्खिजायं वा अयंइत्थि त्तिकट्टु, अलंगेज्ज वा, परिसएज्ज वा, परिचुम्भेज्ज वा, अलंगंतं वा, परिस्यंतं वा, परिचुम्भंतं वा, साइज्जइ ॥ ८३ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए असणं वा ४ देइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८४ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए-वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा, देइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८५ ॥ जे भिक्खू माउग्गमस्स मेहुण वडियाए- असणं वा, ४ पडिच्छेइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ

अर्थ

हलावे चलावे ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर अन्य किसी पशु जाति पक्षी जाति को यह स्त्री है ऐसा मन में संकल्प कर आलिंगन करे, चुम्बन लेवे शरीर से शरीर मिलावे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ८३ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा करके अशनादि चारों आहार देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ८४ ॥ जो साधु माता समान स्त्री साथ मैथुन की अभिलाषा करके वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ८५ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को

मूल

॥ ८६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-वत्थं वा, ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ८७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-धारेइ, धारयंतं वा, साइज्जइ ॥ ८८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए-धारइयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ८९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण वडियाए- सज्झायंदेइ, देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ९० जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुन वडियाए- सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ९१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुन वडियाए-अन्नयरेणं इंदियेणं आकारं करेइ, करंतं वा,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ ८६ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की अभिलाषा कर वस्त्र पात्र कम्बल रजो-हरण ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ ८७ ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर साथ ही धारणी देवे, देने को अच्छा जाने ॥८८॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुनकी इच्छा कर धारणी ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने॥८९॥ जो साधु माता समान अवस्थाकी ग्राहक स्त्री से मैथुनकी इच्छा कर सूत्र पढावे, पढाने को अच्छा जाने ॥ ९० ॥ जो साधु माता समान स्त्री से मैथुन की इच्छा कर सूत्र पढे पढते को अच्छा जाने॥९१॥जो साधु माता समान स्त्री से मैथुनकी इच्छाकर अन्य किसी इन्द्रियादि के अंगोपांग का आकार बनावे, वह स्त्री को बताने से उसे काम राग उत्पन्न होवे ऐसा आकार पैदा करे, ऐसा करनेको

साइज्जइ ॥ १२ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारियं ठाणं अणुग्घाइयं ॥ निसीह ज्झयणस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ * *

अच्छा जाने ॥१२॥ इन दोषों में से किसी एक दोष सेवन करने वालेको अथवा विशेष पोल सेवन करने वालेको गरु चातुर्मासिक प्रायश्चित आता है. जो उक्त दोष-परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छट. (बेले)उत्कृष्ट १२० उपवास, आतुरता से उपयोग सहित दोष लगे तो जघन्य ४ छट, ४ तथा दिनका छेद, मध्यम ४ अठम तथा ६ दिनका छेद, उत्कृष्ट १२० उप० पारने नीवी तथा १०८ दिनका छेद, मोहोदय मूर्छाभाव से लगावे तो जघन्य ४ अठम, तथा ८ दिन का छेद, मध्यम १६ अठम तथा ६० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास, पारणे आयंबिल तथा १२० दिन का छेद, इति निसीथ सूत्र का सातवा उद्देशा समाप्त ॥ ७ ॥

*

## ॥ आठवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू आगंतारेसु वा, जाव परियावसहेसु वा, एगो एगत्थीएसाद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा, ४ आहारेइ, उच्चारं वा, पासवणं वा, परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं मेहुणं असमणपाओगं कहंकहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू उज्जाणंसि वा, उज्जाणगिहंसि वा, उज्जाणसालंसि वा, निज्जाणंसि वा, निज्जाणगिहंसि वा, निज्जाणसालंसि वा, एगो एगत्थिएसद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अट्टंसि वा, अट्टालयंसि वा, चरियंसि वा,

अर्थ

जो साधु धर्मशाला में, बगीचे के बंगले में, गृहस्थ के मकान में यावत् तापसों के आश्रम में, आप अकेला अकेली स्त्री साथ (अथवा साध्वी के साथ) विहार करे, स्वाध्याय करे, अशनादि चारों प्रकार का आहार भोगवे, बड़ी नीत लघुनीत परिठावे अन्य भी काम विकार की उत्पादक निष्ठुर कथा मैथुन सम्बन्धी साधु के नहीं करने योग्य ऐसी पाप कर्म की कथा स्वयं करे, अन्य करता हो उसे अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु उद्यान-बगीचे में, बगीचे के बंगले में बगीचे के पड़साल में, निजान-राजादि के निकलने के स्थान में, निकलने के स्थान के मकान में, निकलने की साला में, अकेली स्त्री साथ कथा करे यावत् उक्त कार्य करे, करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु ग्रामादि के कोट की अटारी (प्रतिकोट)

पागारंसि वा, दारंसि वा, गोपुरंसि वा, एगो एगइत्थिसार्द्धि जाव कहं करेइकहतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू दगंसि वा, दगमग्गंसि वा, दगपहंसि वा, दगमलंसि वा, दगतीरंसि वा, दगठाणंसि वा, एगो एगत्थिएसर्द्धि जाव कहं करेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सुण्णगिहंसि वा, सुण्णसालंसि वा, भिण्णगिहंसि वा, भिण्णसालंसि वा, कुडागारंसि वा, कोठागारंसि वा, एगो एगइत्थिएसर्द्धि जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तणगिहंसि वा, तणसालंसि वा, तुसगिहंसि वा, तुससालंसि वा, भुसगिहंसि वा, भुससालंसि वा, एगो एगत्थीएसर्द्धि

में, अटारी के मकान में, रास्ते में, कोट पर के स्थान (बुरजादि) में, द्वार में, ग्राम प्रवेश करने के गोपुर (दरवजे) में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु पानी के स्थान में, पानी लाने के रास्ते में, पानी के नेहर में, पानी का ऊंचा स्थान दगमल में, पानी के किनारे, पानी में बनाये स्थानों में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु शुन्य घर में, शुन्य शाला में, फूटे घर में, फूटी शाला में कुडाकार (पर्वत के शिखर के आकार) स्थान में, धान्यादि के कोठार में अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु तृण (घास) के घर में, तृण की शाला में, तुसों के घर में, तुस की शाला में, भूंसे के घर में,

सूत्र

जाव कहं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥६॥ जे भिक्खू जाणसालंसि वा, जाणगिहंसि वा, जुगसालंसि वा, जुगगिहंसि वा, एगो एगइत्थियसद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंत वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पणियसालंसि वा, पणियगिहंसि वा, कुवियसालंसि वा, कुविय गिहंसि वा, एगो एगात्थियसद्धिं कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥८॥ जे भिक्खू गोण-सालंसि वा, गोणगिहंसि वा, महाकुलंसि वा, महागिहंसि वा, एगो एगित्थिए सद्धिं जाव कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू राओवा वियालं

अर्थ

भूंमे की शाला में, अकेला अकेली स्त्री के साथ यावत् कथा करे, कहते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु रथ शाला में, रथ के घर में, गाडे की शाले में, गाडे के घर में, अकेला अकेली स्त्री को कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु किरियाने की दुकान में, किरियाना भरा हो उस घर में, लोहादि धातु की दुकान में, धातु संग्रह किया हो उस घर में, अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु बेलों की शाला में, बेलों के घर में, महा कुल-इभपति आदि की कुल में महा कुलवाले के घर में अथवा विशाल मकान में अकेला अकेली स्त्री के साथ कथा कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु रात्रि को अथवा सन्ध्या समय स्त्रीयों से घेराया हुवा, स्त्रीयों के परि-

श्वा, इत्थिमज्झगए इत्थिसंसत्ते इत्थिपरिवुडे अपरिमाणए कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सगणिज्जियाए वा, परिगणिज्जियाए वा, निग्गंथीए सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे, उहच्च माण संकप्पे-चिंता सोगसागरं संपविट्ठे करतल पहत्थमुहं अट्टझाणोवगए विहारं वा करेइ जाव कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा, उवासयं वा, अणुवासयं वा, अंतो उवस्सयस्स अद्धरायं कसिणरायं संवसावेइ,

धार से परिवरा हुवा अपरिमान अर्थात् विना गिनती की काल का या कथा का प्रमाण न रखे ऐसी धर्म कथा कहे, कहनेको अच्छा जाने ॥१०॥ जो साधु अपनी शिष्यनी [ साध्वी ] अपने गच्छकी साध्वी के साथ पर गच्छ की साध्वी के साथ ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा कभी आगे चलाजाये कभी पीछे रहजावे. तब साध्वी के वियोग कर दुःखित हुवा मन में संकल्प विकल्प कर चिन्ता रूपी समुद्र में प्रवेश कर हस्त तल पर मुख स्थापन कर आर्त ध्यानोपगत हुवा-आर्त ध्यान में प्रवेश किया विहार करे, यावत् कथा करे कहते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अपने गृहस्थावास के स्वजनों श्रावक होवे अथवा श्रावक न भी हो किन्तु उन के साथ अपने उपाश्रय के-स्थानक के अंदर प्रतिपूर्ण रात्रि तक एक स्थान रहे. उन को कहे तुम

११ ऐसे ही साध्वी को पुरुष आश्रित सब इस ही प्रकार कहना,

वा, इत्थिमज्झगए इत्थिसंसत्ते इत्थिपरिवुडे अपरिमाणए कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सगणिज्जियाए वा, परिगणिज्जियाए वा, निग्गंथीए सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे,उहच्च माण संकप्पे-चिंता सोगसागरं संपविट्ठे करतल पहत्थमुहे अट्टझाणोवगए विहारं वा करेइ जाव कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा, उवासयं वा, अणुवासयं वा, अंतो उवस्सयस्स अद्धवरायं कसिणवरायं संवसावेइ,

घर से परिवरा हुवा अपरिमान अर्थात् विना गिनती की काल का या कथा का प्रमाण न रखे ऐसी धर्म कथा कहे, कहतेको अच्छा जाने ॥१०॥ जो साधु अपनी शिष्यनी [ साध्वी ] अपने गच्छकी साध्वी के तथा पर गच्छकी साध्वी के साथ ग्रामानुग्राम विहार करता हुवा कभी आगे चलाजाये कभी पीछे रहजावे. तब साध्वी के वियोग कर दुःखित हुवा मन में संकल्प विकल्प कर चिन्ता रूपी समुद्र में प्रवेश कर हस्त तल पर मुख स्थापन कर आर्त ध्यानोपगत हुवा-आर्त ध्यान में प्रवेश किया विहार करे, यावत् कथा कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अपने गृहस्थावास के स्वजनों श्रावक होवे अथवा श्रावक न भी हो किन्तु उन के साथ अपने उपाश्रय के-स्थानक के अंदर प्रतिपूर्ण रात्रि तक एक स्थान रहे उन को कहे तुम

यह ११ कलमों साध्वी को पुरुष आश्रिय सब इस ही प्रकार कहना,

अण्णयरं वा, भोयणं जायं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-उमट्टपिंडं वा, संसट्टपिंडं वा अणाहपिंडं वा, किविणपिंडं वा, वणीमग पिंडं वा, पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा, साइज्जइ ॥ ८० ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ निसीह ज्झयण अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥८॥

पक्वान्न. घृत. गुड. शक्कर, मिश्री. गुग. अन्य भी भोजन को ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥१८॥ जो साधु क्षत्री राजा अभिषेक युक्त उन का निक्रान्त आहार न्हखने को ( डालने को ) ... नाते हों, वह आहार, खाते हुवे बचा हो वह आहार, अनाथ जीवों अथवा भीखों गरीबों के लिये [illegible] बनाया वह आहार, कृपन के लिये निपजाया आहार, रंक भिखुकों के लिये निपजाया आहार, इत्यादि [illegible] आहार में का आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ यह उन्नीस बोलों में का एकादि दोष सेवन करे तथा विशेष दोष सेवन करे, इसे गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त—पायश्च पने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छठ, उत्कृष्ट १२० उपवास. आकुट्टा से उपयोग सहित लगावे तो. जघन्य ४ छठ तथा ४ दिन का छेद, मध्यम ४ अठम तथा ६ दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास तथा १०८ दिन का छेद, और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ अठम तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १० अठम तथा ६० दिन [illegible] उत्कृष्ट १२० उपवास पारणे आयंबिल तथा १२० दिन का छेद. इति निशीथ का [illegible]

लंसि वा, उत्तरगिहंसि वा, रायमाणाणं असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-हयसाल मयाणं वा, गयसाल गयाणं, मंतसाल गयाणं वा,गुज्झसाल गयाणं वा, रहससाल मयाणं वा, मेहुणसाल गयाणं वा, असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा, साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं-साणिहि सणिवियाओ खीरं वा, दहिं वा, नवणियं वा, सप्पिं वा, गुलं वा, खंडं वा, सकरं वा, मछंडियं वा,

ग्रहण करतेको अच्छा जाने ॥१६॥ जो साधु क्षत्रि राजा माता पिताकी उत्तम जाति वाला राज्याभिषेक युक्त हो उस की घोडे की शाला में, हस्ति की शाला में, विचार करने की-सम्पति शाला में, गुह्य-गुप्त कार्य करने की शाला में, रहस्य कार्य की शाला में, मैथुन सेवन करने की शाला में, इन स्थानों में अशनादि चारों प्रकारका आहार लेने जावे आहार ग्रहण करें, करते को अच्छा जाने*॥१७॥जो साधु क्षत्री राजा अभिषेक युक्त उन के वहां-विन शिष्ट-(पक्वानादि) अविनाशिक (मेवादि) संग्रह करनेको जो द्रव्य एकत्र किये हो

होवे, भीड में अपडाने से वस्त्र पात्र शरीर की विराधना होवे, इत्यादि दोष स्थान जान कर वरजे.

* ऐसे स्थान में जाने से साधु की अप्रतीत होती है, राजा कोपित होवे तो महादोष उत्पन्न होता है.

सूत्र

रायंतेउराओ असणं वा, ४ अभिहडं आहट्टु दलयाहि, जो तं एवं वदंतं पडिसुणेइ, पडिसुणंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू रायाणं रायंतेउरिया वएज्जा-आउसंतो समणा ! णो खलु तुज्झं कप्पइ रायंतेउरं णिक्खमित्तए वा, पविसित्तए वा, आहारं पडिग्गाहं जायते अहं रायंतेउराओ असणं वा, ४ अभिहडं आहट्टु दलयामि, जो तं एवं वदइ पडिसुणेइ पडिसुणंतं, वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं-दुवारिय भत्ते वा, पसु भत्ते वा, भयग भत्ते वा, बल भत्ते वा, कय भत्ते वा,

अर्थ

यह हमारे पास ग्रहण करो और इस में राज्य के अंतेपुर से असनादि चारों प्रकार का आहार मुझे यहां सन्मुख लाकर देवो, इस प्रकार कहे वा कहते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु को कोई अंतेपुर का रक्षक ऐसा कहे कि अहो साधु ! तुमारे को तो राजंतेपुर में जाना आना नहीं कल्पता है परंतु तुमारे पात्र मुझे दो मैं राज्य के अंतेपुर में से असनादि चारों आहार मुझ को सन्मुख लाकर देता हूं, इस प्रकार वह कहे उस के वचन को माने, मानने को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा जिस का राज्याभिषेक हुवा हो यावत् उत्तम जातिवाला हो उस के वहां भोजन निपन्न हुवा हो उस में-१ द्वारपाल का भाग, २ पशु-जानवरों का भाग, ३ नोकरों का भाग ४ देवता के बलीदान का भाग, ५ घर के दास

* इस के गमनागमन करने से जीव घात हो, अशुद्ध अनेषनी का आहार और ...

## ॥ नववा—उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू रायपिंड गेण्हेइ, गेण्हंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खु रायपिंडं भुंजइ, भुंजतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू रायंतेपुरं पविसइ, पविसंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खु रायंतेपुरं वएज्जा-आउसो ! रायंतेपुरए णो खलु अम्हं कप्पइ रायंतेपुरं णिक्खमित्तए वा, पविसित्तए वा, इमम्हं तुमं पडिग्गहंगहाय

अर्थ

जो साधु साध्वी चक्रवर्ती आदि राजाओं का पिंड ( आहार ) ग्रहण करे तथा ग्रहण करते को अच्छा जाने *॥ १ ॥ जो साधु साध्वी राजपिंड भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु राजा के अंतेपुर (रनवास) में प्रवेश करे प्रवेश करते को अच्छा जाने *॥३॥ जो साधु राजा के अंतेपुर के द्वारपाल आदि को कहे कि अहो आयुष्मन्त ! मेरे को तो राज्यंतेपुर में जाना आना कल्पता नहीं है. परंतु तुम

* राजा के अंग-१ सेनापति, २ प्रधान, ३ पुरोहित, ४ सेठ, और ५ सार्थवाही यह पांच कहे. इन के यहां से चार प्रकार का आहार और ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ रजोहरण यह आठ प्रकार का पिंड ग्रहण करने का निषेध किया है क्यों कि—कुशामग्री करनी पडे, या तो वस्तु मिलने से मोह वृद्धि, मर्यादा भंग, अधिक संग्रह, असमाधिभाव, चोरादि का उपद्रव, लालच बढने से एषण सभी की घात, वगैरह दोषोत्पत्ति होती है.

* राणीओं का रूप लावण्यता शृंगार [illegible] भोग पदार्थ देखकर मोह वृद्धि का कारण तथा रामादि को समाम होने से आत्मघात संयम घात धर्म हीलना [illegible] आता है, इसलिये कोई प्रतिबन्धकारी स्त्री पुरुष [illegible] किसी धर्म वृद्ध [illegible] के अर्थ वो अप्र मर्यादित स्थान में है। [illegible]

णाणि वा. खीर सालाणि वा, धण सालाणि वा, गज सालाणि वा, महाण सालाणि वा, ॥ ७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव मुद्धाभिसित्ताणं अइनिगच्छमाणाण वा, निगच्छमाणाण वा, पयमवि चक्खुदंसणं वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इत्थीओ सव्वालं- कार विभूसियाओ पयमवि चक्खुदंसण वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं मसक्खायाण वा,



१ धान्य के कोठार की शाला, २ धन के भंडार की शाला, ३ दुग्ध दही आदि स्थापन करने की शाला ४ पानी के पानी पीने की शाला, ५ वस्त्र भूषण की शाला, और ६ भोजन की शाला ॥ ७ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त यह नगर में प्रवेश करता हो, नगर से बाहिर जाता हो उस को देखने का भी जो मन में विचार करे तथा विचार करते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा यावत राज्याभिषेक युक्त राजा उस की स्त्रीयों सर्व प्रकार के शृंगार से सज हो आती जाती हो उन का पांव मात्र भी चक्षु से देखने का विचार करे, करते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा

१ कदाचित् भंग हो कर या विराधि द्रष्टा हो जाय तो साधु का प्रेम जाने से महा अनर्थ हो जाय

● कामदेव है मन प्रसन्न करे तथा कौतुक देखने से अच्छा जाने.

हय भत्ते वा, गय भत्ते वा, कंतार भत्ते वा, दुभिक्ख भत्ते वा, दुकाल भत्ते वा, दुमग भत्ते वा, गिलाण भत्ते वा' वद्दलिया भत्ते वा, पाहुड भत्ते वा, पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इमाइं छ दोसाइं आयतणायं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय, परं चउरायं पचरायाओ गाहावइकुलं पिंडवायं पडियाए, णिक्खमइत्तए वा, पविसइत्तए वा, णिक्खमंतं वा, पविसंतं वा, साइज्जइ तंजहा-कोठागार सालाणि वा, भंडागार सा

दासीयों का भाग, ६ घोडे का भाग, ७ हाथी का भाग, ८ अटवी उल्लंघन कर आये हो उन का भाग, ९ दुर्भिक्ष-भिन को भिक्षा न मिलती हो ऐसों का भाग, १० दुष्काल से पीडित गरीबों का भाग, ११ द्रमक-भिखारीयों का भाग, १२ रोगीयों का-अशक्तों का भाग, १३ पानी की वर्षाद न होने से दान करने का भाग, १४ पाहूणे आये उन को जीमाने का भाग, यों १४ प्रकार के भाग में का आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ६ ॥ जो साधु साध्वी राजा राज्याभिषेकिया हुवा उस के आगे कहेंगे वे छदोष स्थान को अनजाने अनपूछे बिना गवेषना किये, चार रात्रि या पांच रात्रि उपरांत गृहस्थ के घर आहार लेने निकले उस गृहस्थ के घर में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने. उन दोष स्थान के नाम

* इन का अन्तराय लगे इस से इन को द्वेष भी उत्पन्न होवे, साधु को अपवाद हो आदि.

सूत्र

त्राणि वा. खीर सालाणि वा, गण सालाणि वा, गज सालाणि वा, महाण सालाणि वा, ॥ ७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा, णिगच्छमाणाण वा, पयमवि चक्खुदंसण वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इत्थीओ सव्वालं-कार विभूसियाओ पयमवि चक्खुदंसण वडियाए-अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीत्ताणं मसक्खायाण वा,

अर्थ

१ धान्य के कोठार की शाला, २ धन के भंडार की शाला, ३ दुग्ध दही आदि स्थापन करने की शाला ४ राजाओं के पानी पीने की शाला, ५ वस्त्र भूषण की शाला, और ६ भोजन की शाला ॥ ७ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त वह नगर में प्रवेश करता हो, नगर से बाहिर जाता हो उस को देखने का भी जो मन में विचार करे तथा विचार करने को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा यावत् राज्याभिषेक युक्त राजा उस की स्त्रीयों सर्व प्रकार के शृंगार से सज हो आती जाती हो उन का पांव मात्र भी चक्षु से देखने का विचार करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ९ ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा

१ कदाचित् चोरी हो जावे या विषादि प्रयोग हो जावे तो साधु का वैम आने से महा अनर्थ हो जाय.

* अपशकुनादि मान अपमान करे तथा कौतुक देखने से लघुता होवे,

हय भत्ते वा, गय भत्ते वा, कंतार भत्ते वा, दुभिक्ख भत्ते वा, दुकाल भत्ते वा, दुमग भत्ते वा, गिलाण भत्ते वा' वद्दलिया भत्ते वा, पाहुड भत्ते वा, पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं इमाइं छ दोसाइं आयतणाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय, परं चउरायं पंचरायाओ गाहावइकुलं पिंडवायं पडियाए, णिक्खमइत्तए वा, पविसइत्तए वा, णिक्खमंतं वा, पविसंतं वा, साइज्जइ तंजहा-कोठागार सालाणि वा, भंडागार सा

दासीयों का भाग, ६ घोडे का भाग, ७ हाथी का भाग, ८ आटवी उल्लंघन कर आये हो उन का भाग, ९ दुर्भिक्ष-जिन को भिक्षा न मिलती हो ऐसों का भाग, १० दुष्काल से पीडित गरीबों का भाग, ११ द्रुमक-भिखारीयों का भाग, १२ रोगीयों का-अशक्तों का भाग, १३ पानी की वर्षाद न होने से दान करने का भाग, १४ पाहुणे आये उन को जीमाने का भाग, यों १५ प्रकार के भाग में का आहार ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने * ॥ ६ ॥ जो साधु साध्वी राजा राज्याभिषेकिया हुवा उस के आगे कहेंगे वे दोष स्थान को अनजाने अनपूछे विना गवेषना किये.चार रात्रि या पांच रात्रि उपरान्त गृहस्थ के घर आहार लेने निकले उस गृहस्थ के घर में प्रवेश करे.प्रवेश करते को अच्छा जाने. उन दोष स्थान के नाम

* इन को अंतराय लगे इस से उन को द्वेष भी उत्पन्न होवे, साधु की अप्रतीत हो लघुता लगे इत्यादि दोष लगे.

मच्छक्खायाण वा, छवियक्खायाण वा, बहिया निग्गयाणं असणं वा ४ जाव साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीताणं अण्णयरं उववूहणिहयं समिहियं पेहाए, ताए परिसाए, अणुट्ठियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिन्नाए, जो तं माणं असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा-इहजराया खत्तिए परिवूसिए, जे भिक्खू ताए गिहाए ताए विहार ताए पएसाए ताए उवासंतराए, विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा ४



पर्वत राज्याभिषेक युक्त राजा वह मृगादि का मांस भक्षण का अर्थी जलचर मच्छादि भक्षणों का अर्थी या खेतों में वाडों में फली भुट्टे डाले आदि खाने का अर्थी हो बाहिर निकला हो वहां अशनादि चारों आहार निष्पन्न किये हों वसे ग्रहण करने की अभिलाषा करे, अभिलाषा करते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त उसके कोई भेटना-नजराना आया हो उसकी सभा भराइ हो. राजादि सब लोग सभा में बैठे हों अभी तक कोई उठा नहीं है. कोई बाहिर आया नहीं. उस अवसर में जो साधु अशनादि चार प्रकारका आहार ग्रहण करने निकले, निकलतेको अच्छा जाने (पूर्वोक्त राजा पिंडादि का दोष लगे)॥ ११ ॥ जो साधु साध्वीके ऐसा जानने में आवेकी इस स्थान राजा निवासकर रहा है. फिर जो साधु साध्वी वहां नजीकमें उसही स्थान के देश प्रदेशमें अवकाशान्तरमें विचरते हो वे जो वहां स्वाध्याय

आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं असमण पाओगं कहं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव भिसीताणं वहिया जत्ता संपट्ठियाणं असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं वहिया जत्ता पडिनियत्ताणं असणं वा ४ पडिग्गाहेहि पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ एवं णदिजत्ता संपट्ठियाणं ॥ १५ ॥ एवं णदिजत्ता पडिणियत्ताणं ॥ १६ ॥ एवं गिरिजत्ता संपट्ठियाणं ॥ १७ ॥ एवं गिरिजत्ता पडिणियत्ताणं ॥ १८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं महानिसियंसि वट्टमाणंसि निक्खमइ वा पविसइ वा, निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव

अर्थ करे अशनादि चारों आहार मांगवे. बडी नीत लघुनीत परठावे, अन्य अनार्य लोगोंको साधु के अयोग्य कथा करे, करे ने काम अच्छा करे और अन्य करते हों उन्हे अच्छा जाने॥१२॥ जो साधु क्षत्रीय राजा राज्याभिषेक युक्त वह बाहिर यात्र के लिये जाता हो वहां से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥१३॥ जो साधु क्षत्रीय राजा का यावत् राज्याभिषेक होता हो उस वक्त आगमन करे, करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु क्षत्रीय राजा यावत् अभिषेक युक्त उस की आगे

मच्छखलायाण वा, रायिपवसायाण वा, बहिया निग्गयाणं असणं वा ४ जाव साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू रण्णोखत्तियाणं जाव मिसीताणं अण्णयरं उववूहणिहयं समिहियं पेहाए, ताए परिसाए, अणुट्ठियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिन्नाए, जो तं माणं असणं वा ४ पडिग्गहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अह पुण एवं जाणेज्जा-इहज्जराया खत्तिए परिवूसिए, जे भिक्खू ताए गिहाए ताएविहार ताए पएसाए ताए उवासंतराए, विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा ४

राजा राज्याभिषेक युक्त राजा का मृगादि का मांस भक्षण का अर्थी जलचर मच्छादि भक्षणों का अर्थी या क्षेत्रों में वासों में फल मुंह छाने आदि खाने का अर्थी हो बाहिर निकला हो वहां अशनादि चारों आहार विच्छेद किये हों उसे ग्रहण करने की अभिलाषा करे, अभिलाषा करते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु क्षत्रिय राजा राज्याभिषेक युक्त उसके कोई भेटना-नजराना आया हो उसकी सभा भराइ हो. राजा आदि सब लोग सभा में बैठे हों अभी तक कोई उठा नहीं है, कोई बाहिर जाया नहीं. उस अवसर में जो साधु अशनादि चार प्रकारका आहार ग्रहण करने निकले, निकलनेको अच्छा जाने (पूर्वोक्त राजा पिंडादि का दोष लगे) ॥ ११ ॥ जो साधु साध्वीके ऐसा जाननेमें आवेकी इस स्थान राजा निवासकर रहा है. फिर जो साधु साध्वी वहां नजीकमें उसही स्थान के देश प्रदेशमें अवकाशान्तरमें विचरते हो वे जो वहां स्वाध्याय,

सूत्र

भिसीताणं इमा दस अभिसेखाओ रायहाणीओ दिट्ठाओ, गणियाओ, वंजियाओ, अंतो मासस्स दुखुत्तो वा तिक्खुत्तो वा नियखामइ वा पविसइ वा, निखमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ तजहा—चंपा, महुरा, वणारसी, सावत्थी, साकेयं, कंपिल्ल, कोसंबी, मिहिला, हत्थिणापुरं, रायगिहं, ॥ २० ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं असणं वा ४ परस्स णीहडं पडिग्गहेइ, पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ तजहा-खत्तियाणि वा, रायाणि वा, कुरायाणि वा, रायपेसीयाणि वा, रायवंसियाणि वा,

अर्थ

कहेंगे उन दश महा राज्याभिषेक की राज्यधानीयों में राज्योत्सव होता हो तब एक महिने में दो एक तीन वक्त प्रवेश करे निकले जाते आते को अच्छा जाने उन दश राज्यधानी नगर के नाम—१ चम्पा, २ मथुरा, ३ वानारसी, ४ श्रावस्ति, ५ साकेत पुरी, ६ कंपिलपुरी, ७ कोसंबी, ८ मिथिला, ९ हस्तिनापुरी, और १० राज्यगृही * ॥ २० ॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् राज्याभिषेक युक्त उस के वहां अशनादि चारों प्रकार का आहार आगे कहेंगे उन के लिये निपजा हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ क्षत्रीयों के लिये, २ राजाओं के लिये, ३ देशांतर में रहने वालों के लिये, ४ राजा के नोकरों के लिये और ५ राज वंसीयों

* जो वहां रहाहो और उत्सवारम्भ हुवा हो तो वहां से विहार कर जावे, इस लिये एक वक्त का नहीं, कहा परन्तु दो तीन वक्त का कहा है.

साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसित्ताणं असणं वा ४ पररसनिहडं पडिग्गहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ तंजहा–नडणाव्वा, नट्टयाण वा, कडुयाण वा, जल्लायाण वा, मल्लाण वा, मुट्ठियाणि वा, वेलंबयाणि वा, कहगाणं वा, पवगाणं वा, लासगाणं वा, खेलाणं वा, छत्ताण वा ॥ २२ ॥ जे भिक्खु रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीताणं असणं वा ४ पररसनीहडं पडिग्गहेइ पडिग्गहेतं वा साइज्जइ; तंजहा- आसपोसयाण वा, हत्थिपोसयाण वा, महिस पोसयाग वा,

अर्थ

भाइ वेराओं के लिये, यह भी राजपिंड ही जानना. ॥ २१ ॥ जो साधु क्षत्री राजा अभिषेक युक्त उस के यहां असनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन दूसरों के लिये निपजे हों उसे ग्रहण करे, करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ नट, स्वयं नाचने वाले, २ नट्टे-अन्य को नचाने वाले. ३ कच्छव-रस्सी पर खेलने वाले, ४ जाली ५ ऊपर नीचे कुंद ने वाले या वांस पर नाचने वाले, ६ मल-कुस्ती लडने वाले, ६ मुष्टी युद्ध करने वाले, ७ भांडकुचेष्टा करने वाले, ८ कथा कहनेवाले, ० पवाडे जोडे २ कर गाने वाले, १० बंदरकी तरह कूदने, वाले, ११ खेल–तमाशा करने वाले. और १२ छत्र धारन करने वाले॥२२॥ जो साधु क्षत्री राजा यावत् अभिषेक युक्त उस के यहां असनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन दूसरों के लिये निपजा हो. उसे ग्रहण करे, करने को अच्छा जाने उन के नाम—१ घोडे को पालने वाले, २

परसह पोसयाण वा, सिह-वग्ग-अय,-मिग,-सुणह,-सुअरं,-मिंड, कुक्कुड,-तितर,-वट्टय,-लावय,-चरल्ल हंस,-मयुर,सूय-पोसाण वा, एवं-आस मद्दाण वा, हत्थि मद्दाण वा, एवं आस मठाण वा, हत्थि मठाण वा, एवं आसरोहाण वा, हत्थिरोहाण वा, ॥ २२ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव भिसीयाणं असणं वा ४, परस्स निहडं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ, तंजहा-सत्थ गाहणा वा, संवाहणा याणं वा,

हाथी को पालने वाले, ३ भैंसे को, ४ बकरे को, ५ सिंह को ६ व्याघ्र ( चित्ते ) को, ७ बकरे को, ८ मृग को, ९ कुत्ते को, १० सुअर को ११ मेंढे को, १२ मुर्गे को, १३ तीतर को, १४ बटेर को, १५ लवे को, १६ चीड़ी को, १७ हंसको, मयूर को १८ तोते को, इत्यादि पशु पक्षियों के पोषकों के लिये निपजाया आहार ग्रहण करने से उन को अंतराय लगे और दोषोत्पत्ति होती है ऐसे ही हस्ती के मर्दन करने वाले ( महावत ) को, घोडे को मर्दन करने वाले ( सवार ) के लिये ऐसे ही घोडे के सजने वाले के लिये, हाथी के सजने वाले के लिये, ऐसे ही घोडे के फिराने वाले के लिये, हाथी के फिराने वाले के लिये ॥ २१ ॥ जो साधु राजा राजा पाटवी राज्याभिषेक युक्त उस के यहां अशनादि चारों आहार आगे कहेंगे उन के लिये निपजा हो, उसे ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने. उन के नाम—१ सार्थवाही के लिये, २ पांव दो शरीर दाबने वाले के लिये, ३ पीठी मर्दन करने वाले ४

सूत्र

वा साइज्जइ तंजहा–खुज्जाणं, जाव पारसीणं वा ॥ २६ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥निसीहज्झयणे नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥

अर्थ

उसे वे लेवे. लेते को अच्छा जाने उन के नाम-१ कुब्जा दासी के लिये. यावत् पारसदेश की दासी के लिये. इत्यादि दासीयों के लिये आहार निपजा वह ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ इन छब्बीस काम करने वाले को अलग २गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है. गुरु चौमासिक प्रायश्चित्त-परवश्यपने विना उपयोग लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ छट, उत्कृष्ट १२० उपवास. आतुरता से उपयोग सहित सेवे तो जघन्य ४ छठ, तथा ४ दिन का छेद, मध्यम ४ अठम, तथा ६ दिन का छेद, उ० १२० उपवास, तथा १०८ दिन का छेद, मोहनीयकर्मोदय मुर्च्छाभाव सहित लगावे तो जघन्य ४ छट. तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ अठम तथा ६० दिन का छेद उत्कृष्ट १२० उपवास पारने आंबिल तथा १२० दिन का छेद. ॥इति नीशीथ सूत्र का नववा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ९ ॥

## ॥ दशवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू भदंतं आगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू भदंतं आगाढं फरुसं वदेइ, फरुसं वदइ, वदंतं साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू भदंतं अण्णयरीए अचासायणाए वदंतं साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू अणंतकायमिसं संजुत्तं अघासाएइ, अघासायंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू आहाकम्मं भुंजइ, आहारं आहारेइ, आहारंतं वा, साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू लाभालिचं निमितं कहेइ, कहंतं वा भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

जो साधु साध्वी आचार्य को कठोर वचन कहे कहते को अच्छा जाने ॥१॥ जो साधु साध्वी आचार्य को फरुसकर्कशकारी वचन कहे, कहते को अच्छा जाने॥२॥ जो साधु साध्वी आचार्य को कठोरकारी कर्कशकारी वचन कहे, कहने को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु आचार्य की अशातना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु अनंत काय ( कंद मूल लीलन फूलन ) से मिश्रित आहार करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु आधा कर्मी ( साधु के निमित्त बनाया ) आहार भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥६॥ जो साधु लाभालाभ सुख दुःख मत काल में हुवा जिस का निमित्त बतावे, बतावते को अच्छा जाने

साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पडुप्पणं निमित्तं वागरेइ, वागरंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अणागयं निमित्तं वागरेइ, वागरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सेहं विप्परिणामेइ, सेहं विप्परिणामंतं वा, साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सेहं अवहरेइ, सेहं अवहरंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिसं विप्परिणामेइ, दिसं विप्परिणामंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिसं अवहरेइ, दिसं अवहरंतं वा,

अर्थ

॥ ७ ॥ जो साधु लाभालाभ सुख दुःख वर्तमान काल मे हो रहा हो उस का निमित्त कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु लाभालाभ सुख दुःख अनागत काल में होगा, जिस का निमित्त कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु साध्वी किसी अन्य साधु साध्वी के शिष्य शिष्यनी को उस के आत्म परिणाम उन आचार्यादि के तरफ से पलटाकर अपनी तरफ लगाने के वास्ते आहार पानी वस्त्र पात्र सूत्र ज्ञान का लोभ बताकर विपरिणाम करे अर्थात उसे भरमावे अन्य उक्त प्रकार भरमाता हो उसे अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु साध्वी अन्य साधु साध्वी के शिष्य शिष्यणी को उक्त प्रकार ही भरमाकर अपहरण करे अर्थात लेकर भगजावे, अपहरते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु साध्वी किसी गृहस्थ गृहस्थनी को किसी आचार्य के पास दीक्षा

--- कोई साधु अपने शिष्य को ग्राम के बाहिर बैठा कर भिक्षा के वास्ते ग्राम में गये पीछे से कोई साधु ...

सूत्र

साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू वाहिरा भासिय अपुरा पर तिरायाओ अवफालत्ता संवसावेइ, संवसावंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खु साहिगरणं अविओसविय पाहुडं अकडपायछित्तं परं तिरायाओ विफालियं अविफालियं संभुंजइ संभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥१४॥ जे भिक्खु उग्घाइयं अणुग्घाइयं वदइ वदंतं वा, साइज्जइ ॥१५॥

अर्थ

लेने के परिणाम हो उस के परिणाम पलटाने उस को कहे कि तुझे उन के पास दीक्षा लेनी योग्य नहीं है क्यों कि यह तो वय में छोटे हैं, व वृद्ध हैं थंडे पडे हैं, प्रमादी है, हीनाचारी हैं वगैरा दोष बता कर कहे कि जो तुझे दीक्षा लेनी है तो अमुक आचार्य गुनवान हैं उन के पास दीक्षा ले, यों परिणामों की दिशा पलटावे पलटाने को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु किसी उक्त प्रकार ही किसी प्रारम्भ प्रारम्भनी को दिशा परिवर्तन करे अर्थात अन्य साधु साध्वी के पास भेजे या आप स्वयं ले जावे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ प्रथम साधु साध्वी रहते हो वहां दूसरे साधु साध्वी आवे उन को किस लिये आये वगैरा आगमन पूछे बिना तीन रात्रि उपरान्त अपने पास रखे, अन्य रखते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु साध्वी के आपस में क्लेश हुवा होवे क्लेश होने, का कारण प्रगट किये बिना प्रायश्चित्त लिये बिन आपस में खमत खामना किये बिना जो तीन रात्रि उपरान्त रहे उन के सामिल आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु थोडे प्रायश्चित्तवाले को बहुत प्रायश्चित्तवाला कहे कहने व

जे भिक्खू अणुग्घाइयं उवग्घाइयं दद्द ददंतं वा,साइज्जइ॥१६॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं अणुग्घाइयं देइ,देयंनं वा,साइज्जइ ॥१७॥जे भिक्खू अणुग्घाइयं उवग्घाइयं देइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥१८॥जे भिक्खू उवग्घाइयं सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥१९॥ जे भिक्खु उवग्घाइयं हेउं सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २०॥ जे भिक्खू उवग्घाइयं संकप्प सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ

अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु बहुत प्रायश्चित्त वाले को थोडा प्रायश्चित्तवाला करे करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु थोडे प्रायश्चित्तवाले को बहुत प्रायश्चित्त देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु बहुत प्रायश्चित्त वाले को थोडे प्रायश्चित्त देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु थोडा प्रायश्चित्त पात्र का है ऐसा अन्य से सुनकर तथा स्वयं जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु थोडे प्रायश्चित्त की आलोचना करने योग्य है ऐसा हेतु (विचार) सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अमुक थोडा प्रायश्चित्त का पात्र अमुक दिन आलोचना कर प्रायश्चित्त ग्रहण करेगा, ऐसा उस का संकल्प सुनकर जानकर वह शुद्ध न हो वहां तक उस के साथ आहार पानी करे, करते को

मूल

॥ २१ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं वा उग्घाइयं हेउं वा उग्घाइग संकप्प वा सोचा नचा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं हेउंवा सोचा नचा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं संकप्पं वा, सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं वा, अणुग्घाइयं हेउं वा, अणुग्घाइयं संकप्पं, सोचा नचा संभुंजइ,

अर्थ

अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु यह लघु प्रायश्चित्त का धनी है, लघु प्रायश्चित्त का हेतु है, यह लघु प्रायश्चित्त का संकल्पी है. ऐसा सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु किसी को बहुत प्रायश्चित्त का धनी सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे, करते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु अमुक बहुत प्रायश्चित्त की आलोचना करने योग्य है. ऐसा हेतु सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु बडा प्रायश्चित्त का स्थान सेवन कर उस की अमुक दिन आलोचना करेगा ऐसा उस का संकल्प सुन-कर जानकर उस के साथ आहार पानी कर, करते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु बडा प्रायश्चित्तवाला है. बडा प्रायश्चित्त हेतु सेवन किया है. बडा प्रायश्चित्त लेने का संकल्प किया है.

संभुंजे तं वा साइज्जइ॥२६॥ जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा सोचा नचा संभुंजइ संभुंजे तं वा साइज्जइ ॥२७॥ जे भिक्खू उग्घाइयं हेउं अणुग्घाइयं हेउं वा सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं वा उग्घाइयं वा सोचा नचा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू उग्घाइयं हेउं वा,अणुग्घाइयं हेउं वा, सोचा नचा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ

ऐसा अन्य के पास श्रवण करके तथा स्वयं की पाने बुद्धि करके जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु किसी साधु को छोटा बडा दोनों प्रकार के प्रायःश्चित्त का धारक सुनकर जानकर, उस के साथ आहार पानी करे करते को, अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु थोडा प्रायःश्चित्त का हेतु वाला भी है और बहुत प्रायःश्चित्त का हेतुवाला भी है, ऐसा सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥२७॥ जो साधु किसी को थोडा प्रायःश्चित्त के संकल्प वाला भी है और बहुत बडा प्रायःश्चित्त का भी संकल्पवाला भी है, ऐसा सुनकर जानकर उसके साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु गुरु ( बडा ) प्रायःश्चित्त, लघु ( छोटा ) प्रायःश्चित्त प्राप्त हुआ ऐसा अन्य के पास से सुनकर स्वयं की बुद्धि से जानकर उस के साथ आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो कोई गुरु प्रायःश्चित्त का भी हेतु और लघु प्रायःश्चित्त का भी हेतु- सुना

सूत्र

॥ ३० ॥ जे भिक्खू उग्घाइयं संकप्पं वा, अणुग्घाइयं संकप्पे वा, सोचा नचा संभुंजइ, संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा, उग्घाइयं हेउं वा अणुग्घाइयं हेउ वा, उग्घाइयं संकप्पं वा अणुग्घाइयं संकप्प वा, सोचा नचा संभुंजइ संभुंजं तं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू उग्गयवित्तिए अणत्थमिय मणसंकप्पे संथडिए णिव्वितिगिच्छा समावणेणं अप्पाणेणं

अर्थ

जाना उस के सामिल आहार पानी करे करते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु गुरु प्रायश्चित्त लेने का संकल्पी है और लघु प्रायश्चित्त लेने का भी संकल्पी है, ऐसा सुनकर जानकर उस के साथ आहार पानी करे, करने को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु गुरु प्रायश्चित्त, लघु प्रायश्चित्त, गुरु प्रायश्चित्त का हेतु, लघु प्रायश्चित्त का हेतु, गुरु प्रायश्चित्त का संकल्प, लघु प्रायश्चित्त का संकल्प अन्य से सुनकर स्वयं की मति से जान कर उस के सामिल आहार पानी करे करावे करते को अच्छा जाने ॥३२॥ जो साधु साध्वी सूर्य का उदय हुआ या नहीं हुआ ऐसा ही सूर्य अस्त हुआ या नहीं हुआ ऐसा निश्चय हुआ बिना समर्थ युक्त-निरोगी साधु तिगिच्छा-औषधी का ग्रहण करने वाला नहीं ऐसा साधु भूख स्वभाव की चपलता कर सूर्योदय होगया अथवा अस्त नहीं हुआ ऐसा अपने मन से [illegible]

मूल

असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिगाहेत्ता संभुंजमाणे अह पुणे एवं जाणेज्जा, अणुग्गए सूरिए अत्थमिए से जं च मुहं वा, पाणिसि से, जं च पडिग्गहंसी तं विगिंचमाणे विसोहेमाणे वा, णाइक्कमइ, जात्र ओ णं भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खु उग्गयवित्तिए अणत्थमियं संकप्पे असत्थेडिए निव्वितिगिच्छा समावण्णेणं

अर्थ

किसी श्रावकादि का लाया हुवा आहार पानी पक्वान, मुख वास सोपारी आदि ग्रहण करे अथवा भोगवने लगे. फिर मालुम पडे की-सूर्य उदय नहीं हुवा या अस्त होगया है. तो उसही वक्त मुख का ग्रास बाहिर निकाल कर रखदे हाथ का ग्रास भी नीचे रखदे पात्र में से भी निकाल डाले. मुख हाथ पात्र की विशुद्धी करे, उस आहार को एकान्त में प्रासुक जगह में परिठादेवे तो तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे. और जो परिठावे तो नहीं परंतु उसे भोगव लेवे, भोगवने को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु सूर्योदय पहिले तथा सूर्य अस्त के पीछे सूर्योदय होगया या अस्त नहीं हुवा ऐसा मन में ही संकल्प विकल्प करता हुवा पुनः निश्चय हुवे विना शरीर सामर्थ हो औषधी आदि [illegible]

सूत्र

अप्पाणेणं असणं वा ४, पडिग्गाहे आहारं आहारमाणे, अह पच्छा जाणेज्जा अणुग्गए सूरिए, अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि, जं च मुहे, से जं च पाणिंसि, से जं च पडिग्गहयंसि तं विगिंचमाणे विसोहेमाणे तं परिठवमाणे णाइकम्मइ, जो तं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू उग्गए वित्तीए अणत्थमिए संकप्पे असंथडिए निव्विति गिच्छा समाणेणं, अप्पाणेणं असणं वा ४ पडिग्गहेत्ता आहारं आहारमाणे अह पच्छा जाणेज्जा अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा से जं च आसयंसि

अर्थ

चारों आहार ग्रहण करे वह आहार भोगवते हुवे फिर जाने की सूर्योदय हुवा नहीं है सूर्य अस्त होगया है तो उस ही वक्त मुखका ग्रास नीचे रखदे, हाथका ग्रास नीचे रखदे, मुख हाथ पात्रेको साफकर उस आहार को एकांत में परिठादेवे तो तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे. और जो उसे भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु सूर्य उदय हुवे बाद आहार आदि ग्रहण करना और सूर्य अस्त पहिले भोगव लेना ऐसी वृत्ती वाले हैं वे शरीर कर समर्थ हो गिल्यानता रहित हो वे दातारादि के कहने से अथवा स्वयं संकल्प कर असनादि चारों आहार ग्रहण कर आहार करने बैठे आहार करते हुवे फिर मालुम पडे की सूर्योदय नहीं हुवा है या सूर्य अस्त होगया है. तो उस ही वक्त मुख में जो हो को

पागवेसे तं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥

पडिपहंवा गच्छइ, गच्छंतं वा, साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खु गिलाणं वेयावच्चं अब्भुट्ठियस्स, गिलाणं पओगेणं दव्वजाएण अलभमाणे, जो तं न पडियाइक्खेइ, ... गिलाणं सोचा णचा उमग्गं वा



दुःख कर पीडा रहे हैं, गिल्यानी हो रहे हैं, उन के पास दूसरा कोइ नहीं है, ऐसा किसी पास सुनकर या स्वयं की मति से जानकर, उन की गवेषना नहीं करे, उन की खबर नहीं निकाले, खबर नहीं निकालते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु साध्वी गिल्यानी साधु को सुनकर जानकर, वे हैं उस रास्ते नहीं जावे ( जाबुंगा तो उन की सेवा करनी पडेगा ऐसा जान ) उन मार्ग-दूसरे रास्ते जावे जाने को अच्छा जाने* ॥ ३८ ॥ जो साधु साध्वी गिलानी तपस्वी आदि के वैयावच्च में है वे उन गिल्यानी के लिये औषधादि द्रव्य याचने को जावे और अंतराय जोग उस की प्राप्ति नहीं होवे तो तुर्त आचार्यादि को आकर कहे परंतु बिना कहे रहे नहीं+ जो कहे नहीं चुप बैठा रहे जावे, अन्य नहीं कहने को

---

* क्यों कि रोग अवस्था में, उपसर्ग अवस्था में या चक्षु आदि की हीनता की वक्त गिल्यानी साधु की समाल नहीं करने से वह संयम से भ्रष्ट होवे, धर्म की हीलना होवे अन्य वैरागीयों का वैराग्य का नाश होवे विनय पंथ में विघ्न होवे इत्यादि दोषोत्पन्न होते हैं

\+ आचार्यादि को कहने से वे बहु ज्ञान होते हैं वे मिल्ती हो उस स्थान बतावे या दूसरे साधु को भेज ...

न पडियाइक्खंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू गिलाणे वेयावच्चं अब्भुट्ठियस्स सगणट्ठाभेणं असरयरमाणस्स जो तं ण पडितप्पई, ण पडितप्पंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू पढमं पाउसंसी गामाणुगामं दुइज्जइ, दुइज्जंतं वा, साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू वासावासं पज्जोसवियासि गामाणुगामं दुइज्जइ, दुइज्जंतं वा साइज्जइ ॥४२॥ जे भिक्खू अपज्जोसवणाए पज्जोसवइ,पज्जोसवंतं वा साइज्जइ ॥४३॥

अच्छा जाने ●॥ ३९ ॥ जो कोई साधु साध्वी गिलानी की वैयावच्च में रहा हुवा है, वह गिलानी के लिये औषध आहार पानी लेने गया और चाहिये सो वस्तु पूरी न मिली तो जितनी मिली हो उतनी ला-करके उन को देवे, और फिर अन्य स्थान गवेषना कर उन की इच्छा तृप्त नहीं करे, चुप बैठ जावे, उस का पस्तावा नहीं करे, पस्तावा नहीं करते को अच्छा नहीं जाने ॥ ४० ॥ जो साधु साध्वी प्रथम वर्षाद ऋतु में ग्रामानुग्राम विहार करे, विहार करते को अच्छा जाने +॥ ४१ ॥ जो साधु साध्वी वर्षाद का ( चतुर्मास ) बैठे बाद पर्युसन ( संवत्सरी ) पहिले विहार करे, विहार करते को अच्छा जाने + ॥ ४२ ॥ जो साधु साध्वी पर्युसन ( संवत्सरी ) के काल बिना ही संवत्सरी प्रतिक्रमण करे करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥

● क्यों कि गिलानी को येन कहे कि यह मुनिराज वस्तु पूरा नहीं लाया उस से उन को पश्चाताप हो.

+ यह सूत्र २२ तीर्थंकरों के वारे के साधु आश्रयी देखाता है.

आहारेंतं वा, साइज्जइ ॥४६॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएणवा, गारत्थिएणवा पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा, साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू पढमसमोसरण उद्देसपत्ताइं चीवराइं पडिग्गहेइ पडिग्गहेंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहार ठाणं अणुग्घइयं ॥ निसीह ज्झयणस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥

पवे विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ बेले, उत्कृष्ट १२० उपवास. आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ बेले तथा ४ दिन का छेद, मध्यम ४ तेले तथा ३ दिन का छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास तथा १०८ दिन का छेद. मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव कर लगावे तो जघन्य ४ तेले तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ तेले तथा ६० दिन का छेद, उत्कृष्ट १२१ उपवास पारने में आयंबिल, तथा १२० दिन का छेद. इति निशीथ सूत्र का दशवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १० ॥

+ क्यों कि उन को करावेगा तो अपना प्रतिक्रमण कब करेगा।

+ यहां अथ कार लिखते हैं कि १ चौमासी प्रतिक्रमण किये बाद साधु को पाट पाटले वस्त्रादि याचना नहीं कल्पे २ अन्य काल करते चौमास में वस्त्र पाटलादि दुगुने रखे ३ दो कोस जाना दो कोस आना एक कोस [illegible] पांच कोस उपरान्त गमनागमन न करे, अभिग्रह ले, ३ बिना कारन विगय का त्याग करे ४ पाट पाटले संथारा लेवे [illegible] ग्रहण करे, ५ उपवासादि के भोजन अधिक ग्रहण करे, ६ दीक्षा नहीं दे, परंतु प्रथम ग्रहण किये [illegible] और ७ तेल फूल आने पेशव मलीन वस्त्र को परिठावे. तथा धोकर साफ करे. इतने काम करना।

## ॥ इग्यारवां-उद्देशो ॥

मूल

जे भिक्खू अय पायाणि वा, करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू अयं पायाणि वा, धरेइ, धरंतं वा, साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अय पायाणि वा, परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा, करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तंब पायाणि वा, परिभुंजइ, परि भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ६ ॥ एवं तउअ पायाणि वा, ॥ ९ ॥ एवं सीस पायाणि वा, ॥ १२ ॥ एवं

अर्थ

जो साधु साध्वी लोह के पात्र करे करते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु लोह के पात्रे रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु लोह के पात्र में भोजनादि भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु तांबे के पात्र करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु तांबे के पात्र रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु तांबे के पात्र में भोजनादि भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ ऐसे ही सकवे (कथीर) के पात्र के तीन सूत्र कहना यथा—१ करे, करते को अच्छा जाने, २ रखे, रखते को अच्छा जाने, ३ भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ ऐसे ही सीसे के पात्र के तीन सूत्र ॥ १२ ॥

दंत पायाणि वा ॥१५॥ एवं रूप्प पायाणि वा,॥१८॥ एवं सोवण्ण पायाणि वा ॥२१॥ एवं आयरूव पायाणि वा, ॥ २४ ॥ एवं मणि पायाणि वा, ॥ २७ ॥ एवं कणय पायाणि वा, ॥ ३० ॥ एवं दंत पायाणि वा, ॥ ३३ ॥ एवं सिंग पायाणि वा, ॥ ३० ॥ एवं चेलयं पायाणि वा, ॥ ३९ ॥ एवं चम्म पायाणि वा, ॥ ४२ ॥ एवं सेय पायाणि वा, ॥४५॥ एवं अंक पायाणि वा ॥४६॥ एवं संखपायाणि वा ॥ ५१ ॥ एवं वइर पायाणि वा ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू अयबंधणाणि वा करेइ, करतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू अयबंधणाणि वा

ऐसे ही कांसी के पात्र के तीन सूत्र ॥ १९ ॥ ऐसे ही रूपे के पात्र के तीन सूत्र ॥१८॥ ऐसे ही सुवर्ण के पात्र के तीन सूत्र ॥२१॥ ऐसे ही मणि रत्न के पात्र के तीन सूत्र ॥२७॥ ऐसे ही कनक [आटे] के पात्र के तीन सूत्र ॥३०॥ ऐसे ही हस्ति आदि के दांत के पात्र के तीन सूत्र ॥३३॥ ऐसे ही महिषादि के शृंग के पात्र के तीन सूत्र ॥ ३६ ॥ ऐसे ही वस्त्र के पात्र के तीन सूत्र ॥ ३९ ॥ ऐसे ही चमडे के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४२ ॥ ऐसे ही सेत [ पत्थर ] के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४५ ॥ ऐसे ही अंक रत्न के पात्र के तीन सूत्र ॥ ४८ ॥ ऐसे ही शंख के पात्र के तीन सूत्र ॥ ५१ ॥ ऐसे ही वज्र के पात्र के तीन सूत्र ॥ ५४ ॥ ( यों १८ जाति के पात्र के ५४ सूत्र हुवे ) जो ... का बन्धन बंधे, बन्धने को

सूत्र. घरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू अय बंधणाणि वा परिभुंजइ परि-भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ५७ ॥ एवं तं बंधणाणि वा जाव वइर बंधणाणि वा परि-भुंजइ परिभुंजं तं वा साइज्जइ तिणि २ गमा णेयव्वा ॥ १०८ ॥ जे भिक्खू परं अद्ध जोयण मेराय पायवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १०९ ॥ जे भिक्खू परं अद्ध जोयण मेराओ सपायपच्चांसि अभिहडं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गहं तं वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे जिक्खू धम्मस्स अवण्णवदइ,

अर्थ. अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु लोह के बंधन के पात्रादि रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु लोह के बंधन के पात्रादि को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ ऐसे ही ताम्बे के बंधन के तीन सूत्र कहना यावत् ऐसे ही वज्र के बन्धन के तीन सूत्र कहना. यों १ लोह, २ ताम्बा, ३ तरूआ, ४ सीसा, ५ कांसा, ६ रूपा, ७ सुवर्ण, ८ रत्न, ९ मणि, १० आठा, ११ दांत, १२ शृंग, १३ वस्त्र, १४ चर्म, १५ पत्थर, १६ अंक, १७ शंख, और १८ वज्र. इन १८ ही बन्धन के ५४ सूत्र जानना ॥१०८॥ जो साधु साध्वी दो कोश उपरान्त पात्र की याचना करने जावे, जाते को अच्छा जाने ॥१०९॥ जो साधु साध्वी दो कोश के उपरान्त से पात्र लाकर देवे उसे ग्रहण करे. ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ११० ॥ जो साधु साध्वी जिनेश्वर प्रणित द्वादशांगादि ज्ञान का सूत्र धर्म और साधु श्रावक के

अवण्ण वदंतं वा साइज्जइ ॥ १११ ॥ जे भिक्खू अधम्मस्स वण्णंवदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा पाय अमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ११३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संबाहंतं वा, पलिमद्दं तं वा साइज्जइ ॥ एवं जाव तइयो उद्देसो गमो णेयव्वो

व्रत रूप चारित्र धर्म के अवर्णवाद बोले निन्दा करे, अविनय अयशः करे, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ १११ ॥ जो साधु साध्वी अधर्म-पाखण्डियों के शास्त्र जिस में अठारा पाप सेवन करने का उपदेश हो वह सूत्र अधर्म और १८ पाप के सेवन रूप को पाखण्डियों का आचार वह चारित्र अधर्म के गुणानुवाद करे कीर्ती करे. ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ११२ ॥ जो साधु साध्वी अन्य तीर्थिक तापसादि तथा गृहस्थ श्रावकादि के पांव रजोहरण वस्त्रादि करे प्रमार्जे-पूंजे झटके साफ करे ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ११३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ के पांव मशले, मर्दन करे, मशलते मर्दन करते को अच्छा जाने. यों जिस प्रकार तीसरे उद्देशे में १६ वे सूत्र से ७१ वे सूत्र तक ५६ सूत्र कहे हैं वे सब यहां अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ आश्रिय कहना. यथा-१ प्रमार्जे, २ मर्दन करे, ३ तेलादि मशले, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे, ६ रंगे, ऐसे ही की काया (शरीर) आश्रिय ७ प्रमार्जे, ८ मर्दन

सूत्र

अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अभिलावी जाव जे भिक्खू गामाणुगाम दुइज्ज-
माणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेइ, करेतं वा साइज्जइ
॥ ११४–१६८ ॥ जे भिक्खू अप्पाणं विभावेइ विभावे तं वा साइज्जइ

अर्थ

करे, ९ तेलादि मसले, १० लोद्रादि लगावे ११ धोवे १२ रंगे १३ ऐसे ही काया को कोई गडगुम्बड हो उसे—१४ मसले, १५ मर्दन करे, १६ तेलादि मसले, १७ लोद्रादि लगावे. १८ धोवे १९ रंगे, २० [ गुम्बडादि को ] छेदावे. २१ रक्त रस्सी निकाले, २२ धोवे, २३ लेप करे, २४ मर्दन करे, २५ धूप देवे, २६ गुदा के क्रिमी निकाले. २७ नख सुधारे, २८ गुह्य स्थान के बाल छेदे, २९ मर्दह के ३० जंघा के, ३१ कोख के, ३२ दाढी मूंछ के, ३३ मस्तक के, ३४ कान के, ३५ नाक के, ३६ आंख के, इतने स्थान के बाल का छेदन करे. ३७ दांत घसे, ३८ दांत धोवे, ३९ दांत रंगे, ४० होट घसे, ४१ होट का मेल निकाले, ४२ होट धोवे, ४३ खटाइ दे, ४४ रंग चडावे, ४५ लम्बा होट काटे, ४६ धांपें मूंछ काटे, ४८ आंख साफ करे, ४९ आंख का मैल निकाले, ४९ आंख धोवे, ५० सुरमे से शुद्ध करे, ५१ काजल से से रंगे, ५२ भ्रुंव के बाल सुधारे, ५३ आंख-कान-दांत-नख-का मैल निकाल विशुद्ध करे, ५४ शरीर का पसीना शुद्ध करे, और ५५ ग्रामानुग्राम विचरते हुए, अन्य तीर्थिक का तथा गृहस्थ का मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढके. ॥ १६८ ॥ जो साधु साध्वी अन्धकारादि भयोत्पादक स्थान में

भुंजइ भुंजइतं वा साइज्जइ ॥१८२॥ जे भिक्खू असणं वा, ४ अणागाढे परिसावेइ परिसा-यंतं वा, साइज्जइ ॥ १८३ ॥ जे भिक्खू परिसावियरस असणं वा, ४ तयाप्पमाणं वा, भूइप्पमाणं वा, विंदुप्पमाणं वा, आहारं आहारेइ आहारंतं वा, साइज्जइ ॥ १८४ ॥ जे भिक्खू मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंसखलं वा, मच्छखलं वा, आहेण वा, पहेण वा, समेलं वा, हिंगोलं वा, अण्णयरं वा, तहप्पगारं विरूवरूवं हारमाणं

जो साधु रात्रि को चारों आहार ग्रहण कर रात्रि को भोगवे भोगवते को अच्छा जाने. यह चौथा भांगा ॥ १८२ ॥ जो साधु गाढा गाढी कारन विना [ भूल से या सीतादि रह जाय वह इत्यादि कारण छोड ] बासी ( रात्रि को ) रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ १८३ ॥ जो साधु वासी ( रात्रि को ) रहगया हुवा असनादि चारों आहार त्वचामात्र [ किंचित ] भूमी मात्र ( लेप मात्र ) बिन्दू मात्र ( पानी आश्रिय ) आहार को आहारे अर्थात् भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने* ॥१८४॥ जो साधु साध्वी मांसकी पिठाइ मच्छा की पिठाइ, मांस के भोजन के ढग किये हों. मच्छ के भोजन के ढग किये हों, किसी के घर से लेजाते हों, किसी के घर से लाते हों, जिस से स्वजनादि का सनमान करते हो, तथा यज्ञादि की यात्रा

* १८४ वे पाठानुसार १८३ वे पाट का यही अर्थ होना चाहिये कि विना उपयोगे से-भूल कर रह जावे तो उस को दूसरे दिन परिठा देवे परन्तु भोगवे नहीं.

पेहाए ताएआसाए ताएविवासाए ताएतरंयासि अण्णत्थ उवाइणात्रे उवायणावेंतं वा, साइज्जइ ॥ १८५ ॥ जे भिक्खू निवेयणंपिंडं भुंजइ, भुंजइतं वा, साइज्जइ ॥ १८६ ॥ जे भिक्खू अहाछंदं पसंसइ, पसंसंतंवा साइज्जइ ॥ १८७ ॥ जे भिक्खू अहाछंद वंदइ, वंदइ तं वा साइज्जइ ॥१८८॥ जे भिक्खु णायगं वा, अणायगं वा, उवासगं वा, अणुवासगं वा, जे अणलं पव्वावेइ, पव्वावेंतं वा, साइज्जइ ॥१८९ ॥

अर्थ

क लिये तैयारी करते हो उन के लिये तथा उक्त मांस मच्छादि कहा उस ही प्रकार का विरूप-खराब रूप वाले अन्य आहार को देखकर, तैसे ही कारण को देखकर; उसे ग्रहण करने की आशा से, उस को ग्रहण करने की पीपासा से, उस की तृष्णा से अपना स्थान छोड अन्य स्थान जावे, जाते को अच्छा जाने ॥ १८५ ॥ जो साधु साध्वी नैवद्य ( देवादि का चढाने के लिये रक्खा हुआ ) पिंड-भोजन भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥१८६॥ जो साधु तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन कर स्वच्छंदाचारीवन स्त्री आदि की विकथा कर शिथलाचारका सेवन करे और उस की ही परशंसा करे, स्वच्छंदाचार की प्रशंसा करते को अच्छा जाने ॥ १८७ ॥ जो साधु साध्वी स्वछन्दाचार के गुनानुवाद करे, करते को अच्छा जाने ॥ १८८ ॥ जो साधु अपने संसार पक्ष ज्ञातीयों तथा जो ज्ञाती विना अन्य मनुष्य होवे उन को, तथा धर्म पक्ष के श्रावक को अथवा श्रावक नहीं अन्य मतावलम्बी उन को जो अपर्याप्त अर्थात् दीक्षा धारन करने की योग्य ज्ञानादि गुण रहित हों उन को दीक्षा दे, देते को अच्छा जाने

......१ संखतत वा साइज्जइ ॥ १५५ ॥ जे भिक्खू परियासिया पिप्पलं वा, पिप्पलिचुण्णं वा, सिंगबेरं वा, सिंगबेरचुण्णं वा, जाव पारियासं बिलं वा लोणं उब्भियं वा लोणं, आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्खू गिरि पडणाणि वा, मरु पडणाणि वा, भिग्गु पडणाणि वा, तरु पडणाणि वा, मरु-तरु-गिरि-भिग्गु-पक्खंदाणि वा, जल पवेसाणि वा, जल पक्खंदाणि वा, जलण पवेसाणि वा, जलण पक्खं-

जो साधु प्रथम पहरकी का लाया हुवा. पिप्पल, पिप्पल का चूर्ण, अद्रक, अद्रक का चूर्ण, अचित्त लोन [निमक] समुद्र की खारी आदि. पाव पर्यंत तीन प्रहर पूरे हुवे बाद उस का आहार करे, करते को अच्छा जाने (अर्थान्तर उक्त पदार्थ को अचित्त किये परंतु पूरे अचित्त नहीं हुवे हो, पर्याय नहीं पलटी हो वहां तक आहार करे)॥१५६॥ जो साधु साध्वी आगे कहेंगे उन बाल मृत्युकी प्रशंसा करे तद्यथा-१ पर्वत से पड़कर, २ मरुस्थल की रेती में प्रवेश कर, ३ खड्डे में पड़कर, ४ झाड में पड़कर, ५ उक्त चारों प्रकार में तथा कीचड में फसकर, ६ पानी में प्रवेश कर, ७ पानी में कूदकर, ८ अग्नि में प्रवेश करे, ९ अग्नि में कूदकर पडे, १० जेहर का भक्षण करे, ११ शस्त्र से घात करे, १२ इन्द्रियों के वश में पड कर मरे, १३ वैसा आयुष्य बंधकर मरे की आगे के भव में वैसा ही होवे अर्थात् मनुष्य मर कर मनुष्य. पशु मर कर पशु. तथा स्त्री मर कर स्त्री, पुरुष मरकर पुरुष होवे, १४ अन्तःकरणमें माया निदान विगैरह

वा, गिरि भक्खणाणि वा, सत्थ पडणाणि वा, वसट्ट मरणाणि वा, तब्भव मरणा, अंतोसल्ल मरणाणि वा, वेहांस मरणाणि वा, गिद्धपट्ठणाणि वा, ...णाणि वा, जाव अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वा बालमरणाणि वा ..., वसंतं वा साइज्जइ ॥ ११७ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ इति निसीह ज्झयणस्स एग्गारसमं उद्देसो सम्मत्तो ॥ ११ ॥

इन तीनों शल्य में के शल्य रख मरे, १६ गले में फासी ले मरे, १६ हस्ती ऊंटादिक मृतक कलेवर में प्रवेश कर मरे, और १७ संयमादि शुभ योग से भ्रष्ट हो कर मरे, और भी इस प्रकार के अनेक बाल-अज्ञान मृत्यु कर मरते हैं उस की परशंसा करे परशंसा करतेको अच्छा जाने ॥११७॥ जो साधु साध्वी उक्त ११७बोल में के किसी भी एक या अधिक बोल का सेवन करे, उसे गुरु चौमासिक प्रायश्चित आता है. परवशपने बिना उपयोग से उक्त दोष लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ बेले, उत्कृष्ट १२० उपवास, आकुट्टा से उपयोग से लगे तो जघन्य ४ बेले तथा ४ दिनका छेद, मध्यम ४ तेले, तथा ३ दिनका छेद, उत्कृष्ट १२० उपवास, तथा १०८ दिन का छेद, और मोहनीय कर्मोदय मूर्छा भाव से दोष लगावे तो जघन्य ४ तेले तथा ६ दिन का छेद, मध्यम १५ तेले तथा ६० दिन का छेद उत्कृष्ट १२० उपवास पारने आंबिल तथा १२० दिन का छेद इति श्री निशीथ सूत्र का इग्यारवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ११॥

## ॥ बारवा–उद्देशा ॥

जे भिक्खू कोलुणं पडियाए अण्णयरिंयं तसपाण जायं-तणपासएण वा, मुंजपासएण वा, कट्ठपासएण वा, चम्मपासएण वा, वेतपासएण वा, रज्जुपासएण वा, सुत्तपासएण वा, बंधइ, बंधंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू बंधेल्लयं वा, मुयइ, मुयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू अभिक्खणं २ पच्चक्खाणं भंजइ, भंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू परित्तकाय संजुत्तं आहारं आहारेइ, आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सलोमाइं चम्माइं धरेइ, धरंतं वा,

अर्थ—जो साधु करुणा अनुकम्पा लाकर अन्य कोई भी त्रस प्राणी को तृण की डोरी के पास में बंधे मुंज के पास में बंधे, काष्ट के पास में बंधे, चमडे के पास में बंधे, बेत के पास में बंधे, डोरी के पास में बंधे, सूत के पास में बंधे, अन्य बंधने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु उक्त प्रकार के पास में बंधे हुवे त्रस जीवों को छोडे छोडने को अच्छा जाने* ॥ २ ॥ जो साधु नोकारसी आदि प्रत्याख्यान का वारम्वार भंग करे, भंग करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु प्रत्येक वनस्पतिकाय से मिश्रित मिले हुवे आहार को भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु रोम सहित चमडे को रखे, रखते

---

* जिव आदि प्राण से मरण शरण होते जीव को छोडे छोडावे मोडने की अनुमोदे तो दोष नहीं.

मूल

साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू तण पीढयं वा, पालाल पीढयं वा, छगण पीढयं वा, कट्ठपीढयं वा, वेत्तपीढयं वा, परवत्थेणप्पच्छण्णं अहिट्ठेइ, अहिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं संघाडि अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, सीवावेइ, सीवावंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पुढविकायस्स कलमायमवि समारंभइ समारंभंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ एवं जाव वणस्सइकायस्स ॥ १२ ॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खं दुरुहइ, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू

अर्थ

को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु तृण का बना हुवा पीढ ( पाट-पाजोट ) पराल का पीढ, गोबर का पीढ, काष्ट लकडे का का पीढ, बेंतका पीढ, गृहस्थ के वस्त्र कर ढका हुवा, अच्छादित किया हुवा हो, उसपर बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु साध्वी, साध्वी की पछेडी (चद्दर) अन्य तीर्थिक तथा गृहस्थ-श्रावक के पास सीवावे, सीवाते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु पृथ्वीकाय किंचित् मात्र भी विराधे, विराधते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ पृथ्वी के जैसे ही वनस्पति काय तक आलापक कहना अर्थात् पांच ही स्थावर की किंचित् मात्र भी विराधना करे, करते को अच्छा जाने ॥ [illegible]

सूत्र

गिहिमत्ते भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू गिहवत्थं परिहेइ, परिहंतं वा, साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू गिहिणिसेज्जं वाहेइ, वाहंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू गिहितिगिच्छं करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खु पुरेकडेण वा, हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्विएण वा, मायणेण वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, पडिग्गहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू गिहत्थाण वा, अणण्टत्थियाण वा, सीउदगं परिभोयण वा हत्थेण वा, मत्तेण वा दव्विएण वा, भायणेण वा, असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं

अर्थ

जो साधु गृहस्थ के भाजन ( थाल कटोरा आदि में ) भोजन करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु गृहस्थ के वस्त्र ( धोती कुडता अंगरखी आदि ) पहने, पहनते को अच्छा माने ॥१५॥ जो साधु गृहस्थ की शय्या ( पिलंग पाथरने आदि ) पर शयन करे, करते को अच्छा माने ॥ १६ ॥ जो साधु गृहस्थ की औषधी करे, करते को अच्छा माने ॥१७॥ जो साधु गृहस्थने प्रथम हाथ धोये हो, पात्र, कुडछी, भाजन आदि साधु के लिये धोये हो, या सचित्त वस्तु से मांज कर धो कर साफ कर रखे हो, इत्यादि पूर्व कर्म दोष युक्त हो उन से असनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने॥१८॥जो साधु गृहस्थके तथा अन्य तीर्थिक के सचित्त पानी से भराये हुए हाथ पात्र कुडछी भाजन से धन कर असनादि चारों आहार ग्रहण

वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू कट्ठकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, पोत्थकम्माणि वा, लेपकम्माणि वा, दंतकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, सेलकम्माणि वा, गंथीमाणि वा, वेढिमाणि वा, पुरिमाणि वा, संघायमाणि वा, पत्तछेदाणि वा, विहमाणि वा, विविहमाणि वा, चक्खू दंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा, पच्चुलाणि वा, उज्झराणि वा, निज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा,

करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु काष्ट के कर्म कर बनाये हुवे पूतले अश्व गजादि, चित्र कर्म कर बनाये हुवे पूतले, पोत ( चीटों ) के कर्म कर बनाये हुवे पूतले आदि, लेपनादि कर बनाये हुवे पूतले आदि, दांत के बनाये हुवे, मणि चन्द्र कांतादि के बनाये हुवे, गांठों लगाकर बनाये हुवे, गूंथन कर बनाये हुवे, पूरकर-डाल कर बनाये हुवे, वस्त्र के खंडकर बनाये हुवे, केलादि के पत्र का छेदकर बनाये हुवे, इन सिवाय और भी विविध प्रकार की कोरणी आदि से बनाये हुवे पूतले चित्रादि को आंखों से देखने के लिये मन में धारन करे, धारन करते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु कारकी आदि के कच्छ, कंथादि के घर, गुप्त घर, एक जाति के वृक्षों का समूह होवे ऐसा वन, वन की

सूत्र

सेहाणि वा, गुञ्झालियाणि वा, सराणि वा, सरपंतियाणि वा, चक्खुदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा, गेहाणि वा, णुमाणि वा, वणाणि वा, वणविदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयविदुग्गाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, संधारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू गामाणि वा, णगराणि वा, खेडाणि वा, कव्वडाणि वा, मंडवाणि वा, दोणमुहाणि वा, पट्टणाणि वा, आगराणि वा, संवाहाणि वा, संन्निवेसाणि वा, चक्खुदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खु गाम महाणि वा, जाव संन्निवेस महाणि वा, चक्खूदंसण वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसधारंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू गामवहाणि वा, जाव संनिवेस

अर्थ

विषम जगह, पर्वत, पर्वत के गुफादि विषम स्थान, इत्यादि वन स्थान को आंखों से देखने की अभिलाषा करे, करते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु ग्राम, नगर, खेडा, कवड, मंडप, द्रोण मुख, पाटन आगर, संवाह, संन्नीवेश, इत्यादि वस्ती को आंख का विषय पोषने देखना मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु ग्राम यावत् संन्नीवेश में जो किसी प्रकार का उत्सव होता हो उसे चक्षु का विषय पोषने देखना मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु ग्राम का वध (घात)

सूत्र

सी ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा, चेइए, चेयंतं वा, साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू थुणंसि वा, गिहेलुयंसि वा, उसुकालंसि वा, कामजलंसि वा, ठाणं वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा, चेएइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खु कुलियंसि वा भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अंतरिक्ख जायंसि वा, ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा, चेएइ, चेयंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, दुबंधे दुनिखित्ते चलाचले ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहं वा चेएइ, चेयंतं वा, साइज्जइ

अर्थ

रहे हो या उदार (दीपक) के घर हो. ऐसे स्थान में शयन करे बैठे स्वाध्य करे, करते को अनुमोदे ॥४॥ जो साधु घर की देहली पर, घर के ऊपरे [घोडले] पर, उखल पर स्नान करने के स्थान पर, शयन करे बैठे स्वध्याय करे करते को अनुमोदे ॥ ५ ॥ जो साधु नदी पर, भीत पर, पाटने की शिला पर, पाषान खंड बिछाये हों वहां अधर अथवा ऊपर छत बिना खुली आकाश की जगह में शयन, करे बैठ स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु ग्राम की चारों तरफ खंधक-खाइ होवे उस पर को लकडे आदि का स्थाना [ मंडप ] बनाया हो उस के कांष्टादि जो मजबूत बंधन से बंधे नहीं हो. वो पाट पाटले पटिये आदि बराबर जमाकर रखे न हो. ऐसे स्थान में शयन करे, बैठे. स्वध्याय करे — वे

॥ ७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारत्थियं वा, सिप्पं वा, सिलोगं वा, अठाद वा, कक्करयं वा, दुयागं वा, वुग्गाहं वा, सलाहकरणं वा, सिक्खावेइ, सिक्खावंतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारत्थियं वा, आगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा, फरुसं वदइ वदंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारत्थियं वा, आगाढं फरुसं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा, गारत्थियं वा अण्णयरिए आचासाइ आसामाएइ, अचासायंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा,

को अनुमोदे ॥ ७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थ को शिल्प-कला बतावे, सुनने की, श्लोक अथवा गीत कथा, चौपट आदि जुआ खेलने की कला, तथा निमित्त की कला, लेन करने की-युद्ध करने की रीति, राग्रह पन की कला, काव्यादि का स्तवन करने की कला पढावे पढाते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक अथवा गृहस्थ पर कोप करे, जोर २ से बोले, बोलते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थ को कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थी को जोर २ से पुकार २ कर कठोर वचन कहे कहते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक की अथवा गृहस्थ की

● [illegible]

सूत्र

गारत्थियाणं वा, कोउग कम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा, भूइकम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, पसिणापसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ॥१५॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, पसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥१६॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाण वा पसिणं कहेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥१७॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पसिणा पसिणं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, तीतनिमंतं करेइ,

अर्थ

अन्य किसी प्रकार भन्छादना करे ( महण हक वर्गण प्रकट करे ) करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक की तथा गृहस्थ को कौतुक कर्म ( औषध स्नानादि ) करावे, कराते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थी को भूति कर्म ( रक्षादि की पोटली बंधन आदि ) करे कराये करते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक का अथवा गृहस्थी से प्रश्न करे ( अमुक कार्य होगा कि न होगा? ) करते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ से उक्त प्रकार के प्रश्न उत्तर लेवे, लेने को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को उक्त प्रश्न विद्या कहे कहते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु उक्त प्रकार के प्रश्न का उत्तर देवे देते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक

यह ज्योतिष विद्या सम्बन्धी प्रश्नोत्तर [illegible]

कहंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पडिरण्णं निमंतं करेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, आगमिसं निमंतं करेइ, करंत वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा लक्खणं करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, सुमिण करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा विज्जं पउंजइ पउंजंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा मंतं पउंजइ, पउंजंतं

को अथवा ग्रहस्थ को गत काल का निमित्त कहे (कि तेरे ऐसा हुवा था) कहने को अच्छा माने ॥ १९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को वर्तमान काल का निमित्त कहे कि (तेरे ऐसा हो रहा है) करने को अच्छा माने ॥ २० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को आगामिक काल का निमित्त कहे (तेरे ऐसा होगा) करने को अच्छा माने ॥ २१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को हस्तादि शरीर के लक्षण (रेखा) आदि का फलाफल बतावे, बताने को अच्छा माने ॥ २२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थी को स्वप्न का फलाफल कहे ...

साधु अन्य तीर्थिक व ग्रहस्थ को रोहिणीयादि ...

गारत्थियाणं वा, कोउग कम्मं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा, भूइकम्मं करेइ, करंतं वा साइजइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, पसिणापसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ॥१५॥ जे भिक्खु अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, पसिणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥१६॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाण वा पसिणं कहेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥१७॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पसिणा पसिणं कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, तीतंनिमत्तं कहेइ,

अन्य किसी प्रकार अच्छादना करे (मद्रण ढक दर्पण प्रकट करे) करते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक की तथ गृहस्थ को कौतुक कर्म (औषध स्नानादि) कराने, कराते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थी को भूति कर्म (राखादि की पोटली बंधन आदि) करे करावे करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक का अथवा गृहस्थी से प्रश्न करे (अमुक कार्य होगा कि न होगा ?) करते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ से उक्त प्रकार के प्रश्न उधार लेवे, लेने को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को उक्त प्रश्न विद्या कहे करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु उक्त प्रकार के प्रश्न का उत्तर देवे वो अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिकर

यह ज्योतिष विद्या सम्बन्धी प्रश्नोत्तर जानना, साहित्य न की शास्त्र सम्बन्धी.

सूत्र

कहंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं पडिपण्णं निमंतं कहेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, आगमिसं निमंतं कहेइ, कहंत वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू अण्ण० उत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा लक्खणं कहेइ, कहंतं वा, साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियाणं वा, सुमिण कहेइ, कहंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा विज्जं पउंजइ पउंजतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारात्थियाणं वा मंतं पउंजइ, पउंजंतं

अर्थ

को अथवा ग्रहस्थ को गत काल का निमित्त कहे (कि तेरे ऐसा हुवा था) कहते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को वर्तमान काल का निमित्त कहे कि (तेरे ऐसा हो रहा है) कहते को अच्छा जाने ॥ २० ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थ को आगामिक काल का निमित्त कहे (तेरे ऐसा होगा) कहते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व ग्रहस्थ को हस्तादि शरीर के लक्षण (रेखा) आदि का फलाफल बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा ग्रहस्थी को स्वप्न का फलाफल कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व ग्रहस्थ को रोहिणीयादि विद्या बतावे, बतावे को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो सा

...ज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा जोगं पउंजइ, पउजंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा णट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गावा पवेदइ, सिंधिपवेदइ, मग्गाणं वा सिंधिपवेदेइ, सिंधिउ वा मग्गंपवेदेइ, पवेदंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाण वा, धाउपवेदेइ, पवेयंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, णिहिपवेएइ, पवेयंतं वा साइज्जइ

अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को वशीकरणादि का सर्वरिका मंत्र बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥२५॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को गृहस्थ को वशीकरणादि योग [ तंत्र विद्या ] बतावे, बताते को अच्छा जाने॥२६॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व गृहस्थ को जो पंथ से नष्ट हुवा हो अटवी में पड दिग मूढ बना हो उसे विपरीतता प्राप्त हुवे को रास्ता बतावे, सीधा रास्ता बतावे, मार्ग के सन्धी [ रास्ता फटता हो वह ] बतावे बताते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को धातु विद्या-सोना रूपा बनाने की ( कीमीया ) बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थी को धरती में गडा हुवा द्रव्य का निधान बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु गानी

साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा जोगं पउंजइ, पउजंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा णट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गवा पवेदइ, संधिपवेदइ, मग्गाणं वा भिंढिपवेदेइ, भिंढिउ वा मग्गंपवेदेइ, पवेदंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा, धाउपवेदेइ, पवेदंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाणं वा, गारत्थियं वा, णिहिपवेएइ, पवेयंतं वा साइज्जइ.

अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को दंपत्यादि का सर्पादिका मंत्र बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥२५॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को गृहस्थ को वशीकरणादि योग [ तंत्र विद्या ] बतावे, बताते को अच्छा जाने॥२६॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व गृहस्थ को जो देव से नष्ट हुवा हो अटवी में पड दिग मूढ बना हो उसे विपरीतता प्राप्त हुवे को रास्ता बतावे, सीधा रास्ता बतावे, मार्ग के सन्धी [ रास्ता फटता हो वह ] बतावे बताते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थ को धातु [ चांदी-सोना रूपा बनाने की ( कीमी ा ) बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को अथवा गृहस्थी को धरती में गडा हुवा द्रव्य का निधान बतावे, बताते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु पानी

सूत्र

॥ २९ ॥ जे भिक्खू मत्तए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू अद्दाए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू असीए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्खू मणीए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्खू उडुपाणे अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू तेल्ले अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३५ ॥ जे भिक्खू फाणिए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू वसाए अप्पाणं देहइ, देहंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू वमणं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ

भावार्थ

मरे हुवे पात्र में अपना मुख देखे देखने को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु आरीसा [ काँच ] में अपना मुख देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३१ ॥ जो साधु तरवार में अपना मुख देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु चन्द्रकान्तादि मणि में अपना मुख देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु तलावादि के ठंडे पानी में अपना मुख देखे, देखते को अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ जो साधु तेल में अपने मुख को देखे देखने को अनुमोदे ॥ ३५ ॥ जो साधु पतला गुल [ राबड ] में अपने मुख को देखे, देखने को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु चरबी में अपना मुख देखे देखने को अच्छा जाने+ ॥ ३७ ॥ जो साधु शरीर की आरोग्यता के लिये वमन [ उलटी ] करे,

+ इन स्थानों में अपना रूप अवलोकन करने से शरीर पर मोह उत्पन्न होवे, दुर्बल देख पुष्ट बनाने निरोग

॥ ३८ ॥ जे भिक्खू विरेयणं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू वमणविरेयणं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू आरोगिय पडिकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पासत्थं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पासत्थं पसंसंति, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू उसण्णं वंदइ, वदंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू उसण्णं पसंसेइ, पसंसंतं वा साइज्जइ

करते को अच्छा जाने ॥३८॥ जो साधु बिना कारण शरीर की आरोग्यता के लिये जुलाब लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु वमन और विरेचन दोनों करे, करते को अच्छा जाने० ॥ ४० ॥ जो साधु आरोग्य ( रोग रहित ) हो कर बलादि वृद्धि निमित औषधी का सेवन करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु पासत्थे-शिथिलाचारी को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु पासत्थे की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु उसन्ना मूल गुन उत्तर गुन में दोषित साधु को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥४४॥ जो साधु उसन्ना साधु की प्रशंसा करे प्रशंसक

देशकाल बलादि का ज्ञाता देशादि स्थान का उत्तम बल्ल हुवा मधम से भृष्ट बनेगा.

० ऐसा करने से त्रस जीव की घात, दस्त वमन की आतुरता से इर्या आदि समिती का भंग, परिणामों की विकलता वगैरे दोषोत्पत्ती होती है.

॥ ४५ ॥ जे भिक्खू कुसीलं, वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू कुसीलं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णितियं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू नितियं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू संसत्तं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू संसत्तं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू काहियं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे

को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु कुशील (कुत्सित शील) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु कुशीलिये साधु की प्रशंसा करे करते को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु नित्य पिंड सदैव एक ही घर से आहारादि लेनेवाले की वंदना करे करते को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु नित्य पिंड लेनेवाले की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु संसक्त (जो मोर पंख के समान पुल [illegible] जिस में रंग तथा वर्ण और जिस का फक्त [illegible] व्यवहार ही शुद्ध है. परंतु अंतःकरण में दोष होवे) की वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु संसक्त की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु कथादिक (वार्तादि कह कर भी आहार की विकथा करने वाले) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु कथादिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने

मन्दरा काहीयं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू पासणियं वंदइ वंदंतं वा वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खू पासणियं पसंसइ, पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू ममायं वंदइ, वंदंतं साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू ममायं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५७ ॥ जे भिक्खू संपसारियं वंदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू संपसारियं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खू धाइपिंडं

॥ ५३ ॥ जो साधु दर्शनिक ( जनपद देश के व्यवहार में कुशल तथा नाटकिये की कथा कर लोकों को रिझाने वाले ) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु दर्शनिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु ममत्वी ( यह नगर मेरा, यह वस्त्र मेरा यह पात्र मेरा यह शिष्य गुरु मेरा यों मेरा २ करने वाले ) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने+ ॥ ५६ ॥ जो साधु ममत्वी की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ जो साधु संप्रसारिक ( अमुक के कार्य में सम्मती तथा युक्ती बताने वाले ) को वंदना करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु संप्रसारिक की प्रशंसा करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ जो साधु धात्री पिंड ( गृहस्थ के बाल बच्चे को

+ जो साधु के काम में वस्त्र पात्रादि आवे हैं उन को यह मेरे मेराप में है. ऐसा कहते हैं.

सूत्र

भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू लोभपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६९॥ जे भिक्खू विज्जापिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ॥ ७० ॥ जे भिक्खू मंतपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ७१॥ जे भिक्खू जोगपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ७२॥ जे भिक्खू चुण्णय-पिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ७३॥ जे भिक्खू तं ठाणं सेवमाणे आवज्जइ चउम्मासियं परिहारठाणं उग्घाइयं॥ इति निसीह झयणस्स तेरसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ *

अर्थ

ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु लोभ कर योगायोग विचारे विना जो आरे सो ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६९ ॥ जो साधु विद्या फोडकर अर्थात् विद्या से गृहस्थ को भरम में डाल आहार ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७० ॥ जो साधु मंत्रादि कर आहार ग्रहण कर भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७१ ॥ जो साधु गर्भोत्पत्ति, वशीकरणादि याग अन्य विद्या आहार ग्रहण कर भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७२ ॥ जो साधु पाचनादि चूर्ण गृहस्थको बनादे या युक्ती बता आहार ग्रहणकर भोगवे, भोगवतेको अच्छा जाने॥७३॥उक्त७३ बोल में से किसी भी दोष के सेवक को लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. उक्त दोष परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ एकासने, मध्यम ६० नीवि, उत्कृष्ट १०८ उपवास. आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में विगय त्याग और मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आंबिल इति निशीथ सूत्र का तेरवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १३ ॥

## ॥ चउदवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू पडिग्गहं-किणइ, किणावेइ, कीयं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-पामिच्चेइ, पामिच्चावेइ, पामिच्चं साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-परियट्टेइ, परियट्टावेइ, परियट्टिय साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू पडिग्गह-अच्छिज्जं, अणिसिट्ठं, अभिहडं, साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू अरेगं

जो साधु साध्वी पात्रे स्वयं मोल लेवे दूसरे पास मोल लेवावे, दूसरा मोल लेकर देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु साध्वी पात्र-उधारे लेवे, लेवावे, लेकर देने को ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु साध्वी पात्र-अदल बदल कर लेवे, दूसरे को लेवावे, अदल बदल कर लेकर देवे को ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु साध्वी पात्र-किसी के पास से बलात्कार कर छीन कर लेवे, मालिक की आज्ञा बिना लेवे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे, ऐसे ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु परिमाण उपरान्त पात्रे गणि का उद्देश (संप्रदाय) की मर्यादा कर अथवा यह अधिक पात्र अन्य साधुओं को देवूंगा, अथवा गण

स्स परेइ, परेयंतं वा साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहगं-अनलं, अथिरं, अधूवं, अधारणिज्जं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं-अलं, थिरं, धूवं, धारणिज्जं, ण धरेइ, ण धरंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू वण्णमंतं पडिग्गहं विवण्णं करेइ करंतं वा साइज्जइ॥१०॥जे भिक्खू विवण्णं पडिग्गहं वण्णमंतं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥११॥ जे भिक्खू नवेइमे पडिग्गहेणं लद्धे तिकट्टु तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाएण वा, मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा, मक्खंतं वा,



का कार्य करने असमर्थ है उन को रोक रख साहायता करना साधु का कर्तव्य है ] ॥ ७ ॥ जो साधु पात्र संपूर्ण नहीं हो अर्थात् खंडित हो अथिर बहुत दिन चलने जैसा नहीं हो, अधर धारणीय हो. रखने लायक न हो, ऐसे पात्रे को रखे. रखने को अच्छा माने* ॥ ८ ॥ जो साधु पात्रा संपूर्ण बहुत काल चलने जैसा स्थिर साधु के रखने योग्य हो ऐसे पात्र को नहीं रखे, नहीं रखते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु अच्छा वर्णवंत पात्रा हो उसे विवर्ण(खराब)करे,करते को अच्छा जाने ॥१०॥ जो खराब पात्र हो उसे ( शोभनीक ) अच्छा करे. अच्छा करते को भला जाने ॥ ११ ॥ जो साधु पात्र

* क्यों कि ऐसे पात्र सदा नहीं होने से उस की सन्धी में कुछ रह जाने से रात्रि बासी रखने का दोष लगता है.

सूत्र

भिलिंगंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, ण्हाणेण वा, जाव साइज्जइ ॥ १३ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु, सीओदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा, उच्छोलंतं वा, पधोवंतं वा, साइज्जइ ॥ १४ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु वहुदिवसिएण, तेल्लेण वा घएण वा, जाव साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहं लद्धे त्तिकट्टु वहुदिवसिएणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, ण्हाणेण वा, पउमचुण्णेण वा, वण्णेण वा, जाव साइज्जइ

अर्थ

मरा पात्रा भिला है ऐसा विचार कर उसे तेल घृत मक्खन चरबी एक वक्त लगावे, वारम्वार लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु नया पात्र मिला है, ऐसा विचार कर उस लोद्र कोष्टक पद्म चूर्ण आदि द्रव्य कर रंगे, रंगते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु मुझे नया पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे अचित्त ( धोवण ) ठंडे पानी कर, अचित्त गरम पानी कर धोवे वारम्बार धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु मुझे नया पात्रा मिला है ऐसा विचार कर, उसे बहुत दिनों के बाद खराब हुभे पहिले लोद्र कर कर्कन कर पद्म चूर्ण कर, वर्ण कर रंगे यावत् रंगते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥ जे भिक्खू णवे इमे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएण सीओदग वियडेण वा, उसिणोदग वियडेण वा, जाव साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु दुब्भिगंधे करेइ, करंतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु सुब्भिगंधे करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे त्तिकट्टु

जो साधु मुझे नया पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे बहुत दिन के बाद का शीत पानी का, अचित गरम पानी का, धोवे धोवते धोवे को अच्छा जाने॥१७॥जो साधु मुझे सुभिगंध पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे दुरभिगंधी बनावे, बनाते को अच्छा जाने॥१८॥जो साधु मुझे दुरभिगंध पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे (सोदा निमित्त) सुरभिगंध बनावे बनावे बनवाते को अच्छा जाने ॥१९॥ जो साधु सुरभिगंध पात्र मिला है ऐसा विचार कर उसे तेल घृत मक्खन लगावे, लगाते को अच्छा जाने

+ [illegible]

सूत्र

धाएणवा जाव साइज्जइ ॥२६॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु लोद्धेणवा कक्केणवा जाव साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु सीओदग वियडेण वा, उसिण उदग वियडेण वा, जाव साइज्जइ ॥२८॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहु दिवसिएण तेल्लेणवा जाव साइज्जइ ॥ २९ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहुदिवसिएणं लोद्धेणवा जाव साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे तिकट्टु बहु दिवसिएणं सीओदग वियडेणवा, उसिणोदग वियडेणवा जाव साइज्जइ ॥ ३१ ॥ जे भिक्खू अणंतर

अर्थ

कर पात्र अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला है ऐसा विचार कर लोद्रादि लगावे पात्र अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु ऐसा विचारे मुझे दुर्गंधी पात्र मिला है उसे शीत पानी उष्ण अचित ऐसे पानी कर धोवे धोते को अच्छा जाने ॥२८॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला ऐसा विचार कर बहुत दिन में तीन पसली उपरांत तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥२९॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला ऐसा विचार कर तीन लेप उपरांत लोद्रादि द्रव्य लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ ३० ॥ जो साधु दुर्गंधी पात्र मिला है ऐसा कर तीन पसली उपरांत अचित ठंडे पानी कर गरम पानी कर धोवे

भीतरिव आयंतिता पडिग्गहगं-आदावेत्रवा जाव साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-पुढवीकाय णीहरेइ, णीहरावेइ, णीहरीयं साहट्टु, दिज्जमाणे पडिग्गहेइ, पडिग्गहेंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-आउकायं णीहरेइ, णीहरावेइ, णीहरीय साहट्टु,दिज्जमाणे पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-तेउकायं णीहरेइ, जाव साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-कंदाणिवा, मूलाणिवा, पत्ताणिवा, पुप्फाणिवा, फलाणिवा, बीयाणिवा, हरियाणिवा, णीहरेइ, जाव साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ-उसह

भी प्रमुख स्थान पर पात्र को आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥३९॥ जो साधु पात्र में पृथ्वी काया पड़ी हो उसे निकाले, अन्य के पास निकलावे, निकलाकर पात्र देते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु पात्र में से सचित्त पानी निकाले, निकलावे, निकालकर पात्र देने को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु पात्र में से अग्नि निकाले निकलावे, निकालकर पात्र देते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु पात्र में से वनस्पति काय-कन्द मूल पत्र फल फूल बीज हरित काया स्वयं निकाले अन्य के पास निकलावे, वह निकलकर पात्र देता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु पात्र में अनाज बीज भरे हो उसे निकाले,

पडिग्गहं उंभासिय उभासियं जापइ, जायंतं वा, साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं णिमीए उडुबंधं वसइ वसंते वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू पडिग्गहं णिमीए वासावासं वसइ, वसंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ तं ठाणं सेवमाणे आवइ चाउम्मासियं परिहारठाणं उग्घातियं निसीह ज्झयणस्स चउदसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥१४॥ • • • • •

से परिषद के बीच में से उठे उठकर विशिष्ट वचन कर पात्रा याचे, याचने को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु पात्रा की निश्राय ग्राम कल्पादि योग्य स्थान छोडकर जहां पात्र मिले वहां रहे, रहते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ जो साधु पात्र की नेश्राय से अर्थात् यहां पात्र मिलेगा ऐसे विचार से चतुर्मास करे, करते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ यह ५० दोष स्थान में से किसी एक दोष स्थान का सेवन करे, करावे करते को अच्छा जाने उस साधु को लघु चतुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. परवशपने विना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम १० निवी, उत्कृष्ट १०८ उपवास. आतुरता में उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ९ छठ, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में विगय त्याग. मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ छठ, मध्यम ४ अठम, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का चवदवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १४ ॥

## ॥ पन्दरवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू भिक्खूणं अगाढं वदइ, वदंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं फरुसं वदइ, वंदंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं फरुसं वदइ वदंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू भिक्खूणं अण्णयरीए अचासायणाए अचासइए, अचासाइतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं भुंजइ, भुजंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं विडंसइ, विडंसतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अबं वा, अंब भित्ति वा, अंबं सालगं वा,

जो साधु किसी साधु को अकोश वच जोर जोर से बोले, बोलते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु किसी साधु को कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु किसी साधु को अक्रोश युक्त कठोर वचन कहे, कहते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु किसी साधु की अन्य किसी भी प्रकार की अशातना करे [ गुणो को अच्छादे ] ऐसा करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त आम्र खावे, खाते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु सचित्त आम्र को मसले मसलते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु सचित्त-आम्र अथवा आम्र की गुठली, आम्र का टुकड़ा.

अंबं डालगं वा, अंबं चोयगं वा, भुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं वा, अंब पेसियं वा, अंबं भित्तिं वा, सालगं वा, अंबडालगं वा, अंबं चोयगं वा, विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंबं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंब विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंबं वा, अंबं पेसियं वा, अंबभित्ति वा, अंबसालगं वा अंबडालगं वा, अंबं चोयगं वा, भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइट्ठियं अंबं वा, अंबं पेसियं वा, अंब-

आम्र की शाखा, आम्र की डाली, आम्र का चूंथा ( कचुम्बरादि ) भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु सचित्त आम्र, आम्र की गुठली, आम्र का टुकडा आम्र की फांक, आम्र की शाखा, आम्र का चूंथा इन को खावे खाते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु अचित्त हुवा आम्र ( गुठली रहित पका हुवा रस निकाला हुवा ) सचित्त वस्तु पर [ गुठली पर या आम्र पानी आदि ऊपर ] प्रतिष्ठित हो उस आम्र को भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ९ ॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठित आम्र को चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठित आम्र, आम्र की गुठली, आम्र का टुकडा, आम्र की फांक, आम्र की शाख,आम्र का चूंथा [ अचित्त ] ...

जाव पधोवेज्ज वा-फुमेज्जवेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ५९ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अत्थिणी-अमज्जावेज्ज वा-संवाहावेज्ज वा-तेल्लेण वा जाव-भिलिंगेज्जावेज्ज वा-लोद्धेण वा जाव उवट्टावेज्ज वा-सीउदग वियडेण वा जाव पधोवेज्ज वा-फुमज्जावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ६५ ॥जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो होटमलं वा, अत्थिमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा, णीहारावेज्ज वा निहारावंतं वा साइज्जइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा पकं वा मलं वा णिहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा, णिहरावंतं वा विसोहावंतं वा साइज्जइ

इतने काम करते को अच्छा जाने ॥ ५९ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपनी आंखों १ साफ करावे, २ मसलावे, ३ तेलादि लगवावे, ४ लोद्रादि लगवावे, ५ धोवावे, और ६ अंजन सुरमादि कर रंगवावे, इतने काम करने को अच्छा जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक के व गृहस्थ के पास-होट का मैल, आंख का मैल, दांत का मैल, नख का मैल, निकलावे, निकलाते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक व गृहस्थ के पास अपने शरीर का भेद [ पसीना ] मल [ मैल युक्त पसीना ] मैल शरीर का, पकादि निकाल कर विशुद्ध करावे, निकलाते विशुद्ध कराते

सूत्र

परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ७४ ॥ जे भिक्खू जाणं गिहंसि वा, जाण सालंसि वा, जुग्ग गिहंसि वा, जुग्ग सालंसि वा, वुस गिहंसि वा, वुस सालंसि वा, उच्चारपासवणं परिठावइ, परिट्ठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे भिक्खू पणिय गिहंसि वा, पणिय सालंसि वा, कुविय गिहंसि वा, कुविय सालंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ७६ ॥ जे भिक्खू गोण गिहंसि वा, गोण सालंसि वा, महाकुल गिहंसि वा, महाकुल सालंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवंतं वा, साइज्जइ ॥ ७७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा असणं वा, ४ देयइ, देयंतं वा,

अर्थ

परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७४ ॥ जो साधु यान-रथ शकटादि स्थापन करने के घर में, यान की शाला में, युग धूसरादि स्थापन करने के घर में, युग की शाला में युग- शकटादि का सराजम रखने के घर में, वुस-शाला में, लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७५ ॥ जो साधु किरियाने के घर में, किरियाने की शाला में, धातु के वासनादि रखे हों उस घर में, धातु की शाला में, लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७६ ॥ जो साधु बैलों गायों के घर में, बैलों की शाल में, बडे मनुष्यों के घर में, बडे मनुष्यों बैठते हों उस शाल में, लघुनीत बडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ७७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को व गृहस्थ को असन पानी पक्वान स्वादिम देवे, दूसरा साधु देता हो उसे अच्छा जाने

सूत्र

जे भिक्खू णितियं असणं वा४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ॥१२॥जे भिक्खू णितियंस्स असणं ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइजइ॥१३॥जे भिक्खू णितियं वत्थंव ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥१४॥ जे भिक्खू नितियंस्स वत्थं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा ४ देयइ, देयंतवा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू संसत्तस्स असणं वा ४ पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू संसत्तं वत्थं वा, ४ देयइ, देयंतं वा साइज्जए ॥ १८ ॥ जे भिक्खू संसत्तं रस वत्थं वा ४ जाव पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे

अर्थ

जो साधु नित्यक [ सदैव एक ही घर से आहार ग्रहण करनेवाला साधु ] को अशनादि चारों आहार दे, देते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु नित्यक का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १३ ॥ जो साधु नित्यक को वस्त्रादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ १४ ॥ जो साधु नित्यक के वस्त्रादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु संसक्त [ इन्द्रियों सुख में लुब्ध विनयादि मर्यादा का भंग करनेवाला साधु ] को अशनादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु संसक्त का अशनादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु संसक्त को वस्त्रादि दे, देते को अच्छा जाने ॥ १८ ॥ जो साधु संसक्त के वस्त्रादि ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने॥२१॥

सूत्र

भिक्खू जाणया वत्थं वा णिमंतणा वत्थं वा, अजाणिय अपुच्छियं अगवेसियं पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १०० ॥ जे भिक्खू सेयवत्थे चउण्हं अण्णयरेसिया तंजहा–णिच्चणियसणि, मज्जणिए, उसविए, रायदुवारियं. पडिग्गहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १०१ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणोपाए अमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, अमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥ एवं जाव जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणोपाए मक्खंतं वा साइज्जइ ॥ १०७ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए

अर्थ

जो साधु के जान-पहिचानवाला गृहस्थ वस्त्र का आमंत्रण करे, वह किस लिये लाया किस हेतु से देता है, इत्यादि कारण जाने बिना पूछे बिना, गवेषणा-शोधन किये बिना ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १०० ॥ साधु को श्वेत वस्त्र धारन करना कल्पता है परंतु वह भी गृहस्थ के चार कामों में नहीं आया हो उसे ग्रहण करे तद्यथा–१ सदैव धारन करने का, २ स्नान किये बाद धारन करने का, ३ उत्सव के समय धारन करने का, और ४ राज्य सभादि में जाते धारन करने का, जो साधु इन चार प्रकार के वस्त्र में का वस्त्र ग्रहण करे ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ १०१ ॥ जो साधु अपने शरीर की विभूषा ( शृंगार ) करने के लिये अपने पांव-१ दबावे, २ मसले, ३ तेलादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे और ६ रंगे, अन्य इनने काम करते को अच्छा जाने ॥ १०७ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने

अप्पणो कायं संवाहेज्ज वा, एवं जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥ ११८ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज वा जाव मखंतं वा साइज्जइ ॥ ११९ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायंसि वणं गंडं वा, पलियं वा, अरियं वा, भगंदलं वा, विच्छिदिज्जा वा, जाव साइज्जइ ॥ १२० ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायंसि वणं जाव विच्छिदितं पुयं वा, सोणियं वा, णिहरेज्ज वा, जाव विसोहेतं वा साइज्जइ ॥ १२१ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायंसि वणं जाव विच्छिदितं वा, पुयं वा सोणियं वा, विसोहित्ता सीओदग वियडेणं वा उसिणोदग वियडेण वा जाव पधोवंतं वा

शरीर को १ मसले २ मसले ३ तेलादि लगावे ४ लोद्रादि लगावे ५ धोवे और ६ रंगे, इतने काम करते को अच्छा जाने ॥ ११८ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को मसले यावत रंग लगावे ॥ ११९ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण-गुम्बडादी को छेदन भेदन करे करते को अच्छा जाने ॥ १२० ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को छेद भेद कर रसी रक्त निकाले, निकाले को अच्छा जाने ॥ १२१ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के वर्ण गुम्बडादि को छेद भेद रसी रक्त निकाल अचित शीत उष्ण

साइज्जइ ॥ १२२ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव विच्छिरविं वा पुयं वा जाव विसोहिज्ज वा, अन्नयरेण वा आलेवण जाएणं आलिंपेज्ज वा जाव विलिंपंतं वा, साइज्जइ ॥ १२३ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव आलेवण जाएणं विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा जाव मक्खंतं वा साइज्जइ ॥ १२४ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायसी वण्णं जाव, आलेवणं जाएणं विलिंपित्ता, अन्नयरेण वा, धूवेण जाएणं धूवेत्ता जाव साइज्जइ ॥ १२५ ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो पाउकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा

पानी कर धोवे, धोने को अच्छा जाने ॥ १२२ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर का पर्ण गुमडादि छेद भेद रसी रक्त निकाल धो कर लेपन आदि लगावे लगाते को अच्छा जाने ॥ १२३ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर के व्रण को छेद भेद रक्त रसी निकाल धो पन्नादि लगा, तेलादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ १२४ ॥ जो साधु अपने शरीर के गुमडादि का छेद भेद रक्त रसी निकाल धो पन्नादि लगा तेलादि लगा अन्य किसी प्रकार का धूप देवे, धूप देवे को अच्छा जाने ॥ १२५ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने गुदा के कृमी के किसी अपनी अंगुली कर

अप्पणो अंगुलियाए निवेसिय २ णिहरेइ, निहरंतं वा साइज्जइ ॥ १२९ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो णहसिहाओ-दीहाओ वत्थिरोमाइं, जंघरोमाइं, सीसकेसाइं, कण्णरोमाइं, भूमरोमाइं अत्थिपत्ताइं, चक्खुरोमाइं, णासारोमाइं, मंसुरोमाइं, कक्खरोमाइं, पासरोमाइं, उत्तरोठाइं कप्पेज्जवा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवंत्तं वा साइज्जइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्खू विभूसावडिए अप्पणो दंते आघसेज्ज वा पघसेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे भिक्खू विभूसावडियाए अप्पणो दंते सीउदगवियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ॥ १४१ ॥जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो दंतं तेलेणवा जाव

निकाले निकालते को अच्छा जाने ॥ १२६ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने-१ नख, लम्बे बढे, २ गुह्य स्थान के रोम, ३ जंघा के रोम, ४ मस्तक के बाल, ५ कान के रोम, ६ भुंव के रोम, ७ मोपण के रोम, ८ आंख के रोम, ९ नाक के रोम १० दाढी मूछ के रोम ११ कांख के रोम, १२ पार्श्व के रोम १३ लम्बा होट, इन को काटे साफ करे, काटते साफ करते को अच्छा जाने ॥ १३९ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने दांत को घसे, घसते को अच्छा जाने ॥ १४० ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने दांत अचित्त ठंडे पानी से गरम पानी से धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ १४१॥ जो सा[illegible]

सूत्र

फुमेज्जवा जाव साइज्जइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्खु विभूसा वडियाए अप्पणो उट्ठे अब्भंगेज्जवा जाव जे भिक्खु अप्पणो उट्ठे विभूसा वडियाए फुमंतं वा गंगंतं वा साइज्जइ ॥ १५८ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो आर्छि णी अभंगेज वा जाव मथंतं वा साइज्जइ ॥१५९॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो अच्छिमलं वा—कण्णमलंवा—दंतमलंवा—नहमलंवा—णिहरतं वा साइज्जइ ॥ १५१ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए अप्पणो कायाओ सेयंवा—जलंवा—पंकंवा—मलवा—णिहरेइ, णिहरंतंवा साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए गमणुगामं दूइज्जमाणं सीसदुवारियं

अर्थ

विभूषा के लिये अपने दांत को रंगाई दे रंगेरंगनेको अच्छा माने॥१४२॥जो साधु विभूषा के लिये अपने होट को-१ प्रमार्जे, २ मसले, ३ तेलादि लगावे, ४ लोद्रादि लगावे, ५ धोवे और ६ रंग. ऐसे करने को अच्छा माने ॥ १५३ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपनी आंख को-१ प्रमार्जे, २ मसले, ३ तेलादि लगावे, ४लोद्रादि लगावे, ५ धोवे और ६ रंग. ऐसे करते को अच्छा जाने ॥ १५४ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने-आंख का मैल, कान का मैल, दांत का मैल, नख का मैल निकाले, निकालने को अच्छा जाने ॥ १५५ ॥ जो साधु विभूषा के लिये अपने शरीर का स्वेद जल कर्दम मैल निकाले, निकालने को अच्छा जाने ॥ १५६ ॥ जो साधु विभूषा के लिये ग्रामानुग्राम फिरता मस्तक ढक कर चले, चलते

सूत्र

फोरइ करंतंवा साइज्जइ ॥१५७॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए वत्थंवा पडिग्गहंवा कंबलं वा पायपुच्छणंवा अण्णयरंवा उवगरणं, जायं धरेइ, धरंतंवा साइज्जइ ॥ १५८ ॥ जे भिक्खू विभूसा वडियाए वत्थंवा ४ धोवइ धोवंतंवा साइज्जइ ॥ १५९ ॥ जे भिक्खू वत्थंवा जाव अण्णयरे उवगरणं धुवेइ धुवंतंवा साइज्जइ ॥ १६० ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥ इति निसीहज्झयणस्स पण्णरस मो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १५ ॥ * * * * *

अर्थ

को अच्छा जाने ॥ १५७ ॥ जो साधु विभूषा के लिये वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण और भी उपकरण रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ १५८ ॥ जो साधु विभूषा के लिये वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ १५९ ॥ जो साधु वस्त्रादि उपकरणों को धूप देवे, धूप देते को अच्छा जाने ॥ १६० ॥ इन १६० उक्त दोष में से कोइ भी दोष लगाने वाले को चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है. जो इन दोष पापवरने बिना उपयोग से लगे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम ३० नीवी. उत्कृष्ट १०८ उपवास जो आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ उपवास. मध्यम ३ बेले उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में [illegible] का त्याग जो मोहनी कर्मोदय मूर्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आयंबिल. इति निशिथ सूत्र का पन्द्रहवा उद्देशा सम्पूर्ण हुवा ॥ १५ ॥

# ॥ सोलवा-उद्देशा ॥

सूत्र

जे भिक्खू सागारियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥१॥ जे भिक्खू सउदगंसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू सअगणियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छु भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छु विडंसइ, विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं वा, उच्छुभिंदं वा उच्छु सिंगि वा, उच्छुमालग वा, उच्छुडालगं वा, उच्छुचोयगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छं वा, उच्छुपेसिं, उच्छु सिंगि वा,

अर्थ

जो साधु साध्वी जिस स्थान दंपती (स्त्री भरतार) शयन करते हों ऐसे शयन स्थान में प्रवेश करे, प्रवेश करने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु पानी का घर (पौंडे) में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु अग्नि का घर (स्तोवा तथा भट्टी आदि के स्थान) मे प्रवेश करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु सचित्त (जीव सहित हरा) इक्षु (सांठा) भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु सचित्त इक्षु चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ जो साधु सचित्त इक्षु, इक्षु की पेली, इक्षु का साग, पौंवा-पाक, छोला हुआ टुकड़ा भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो

उच्छुसालगं वा, उच्छुडालगं वा, उच्छुचोयगं वा, विडंसइ, विडंसंतं वा, साइज्जइ ॥ ७ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छुभुंजइ भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छ विडंसइ विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ९ ॥ जे भिक्खू सचित्त पइठियं उच्छुं वा, जाव उच्छु चोयगं वा, भुंजइ, भुंजंतं वा, साइज्जइ ॥ १० ॥ जे भिक्खू सचित्तं पइठियं उच्छुं वा, जाव उच्छुचोयगं वा, विडंसइ, विडंसंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू अरण्णयाणं,, वणयाणं अडवीजत्ता संपट्ठियाणं असणं वा, ४ पडिग्गाहइ पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू

साधु सचित्त इक्षु, इक्षु पेली, टुकडा, छोंता, छोला इवा टुकडा चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ ७ ॥ जो साधु इक्षु को किसी सचित्त पृथ्वी आदि पर स्थापन किया हो उसे भोगवे भोगवते को अच्छा जाने ॥ ८ ॥ जो साधु सचित्त वस्तु पर स्थापन किया इक्षु चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥९॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठ इक्षु, इक्षु पेली, इक्षु खण्ड, इक्षु छाल, इक्षु का छोला टुकडा भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ १० ॥ जो साधु सचित्त प्रतिष्ठ इक्षु पेली खण्ड छाल टुकडा चूंसे, चूंसते को अच्छा जाने ॥ ११ ॥ जो साधु अटवी आरण्य में विहार करते अपने साथ में रहे हुवे मनुष्यों के पास से तथा कठियारे आदि वन से उपजीविका करने वाले मनुष्यों के पास से आहार आदि ग्रहण करे ग्रहण करनेको अच्छा जाने *॥१२॥ जो साधु बूसी है

* उनोंने अपने काम में आते जितना ही रखा हो वह कमी होने से नया आरंभ हो फसादि की घात हो उन्हे अटवी उल्लंघन करना मुश्कल हो वगैरा दोषोत्पन्न होवे.

सूत्र

पायपुच्छणं वा, पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहं देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू वुग्गहव कंताणं वसहं पविसइ, पविसंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू वुग्गहव कंताणं सज्झायं देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू वुग्गहवकंताणंस्स सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू अडविहं अणेगाह गमणिजसंती लाटविहाराए संथरमाणे जणवएसु विहार वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं

अर्थ

साधु क्लेश कर निकल गया हो उस के वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥१९॥ जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकल कर आया हो उसे वस्ती ( रहने को स्थानक ) देवे, देते को अच्छा जाने॥२०॥जो साधु क्लेश कर सम्प्रदाय से निकल कर अन्य स्थान रहता हो उस के मकान में प्रवेश करे, प्रवेश करते को अच्छा जाने ॥ २१ ॥ जो साधु क्लेश कर निकले साधु को शास्त्र पढावे, पढाते को अच्छा जाने ॥ २२ ॥ जो साधु क्लेश कर निकले साधु के पास शास्त्र पढे, पढते को अच्छा जाने ॥ २३ ॥ जो साधु अन्य विचरने के लिये ग्रामों होते, आहार वस्त्र पात्र औषधादि का सुख से संयोग मिलते, सुख से संयम पलते भी बहुत दिनों में उल्लंघन हो ऐसी विषम अटवी अरण्य में प्रवेश करने की इच्छा करे

सूत्र

या साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू विरूवरूवाइं देसुयायं आयत्तणाइं अणारियाइं मिलक्खाइं पच्चंतियाइं सति लाटविहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहार वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं या साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू दुगंछियं कुलेसु असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं या साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू दुगंछिय कुलेसु वत्थं वा पायं वा कंबलं वा पायपुच्छण वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू दुगुंछियं कुलेसु वसहिं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं या साइज्जइ

अर्थ

अच्छा करते को अच्छा जाने ॥ २४ ॥ जो साधु उक्त प्रकार सुख से संयम पाले ऐसे देश विचरने को होने भी विविध प्रकार के जो अनार्य मनुष्यों के रहने के देश हैं जहां हिंसादि कर्म बन्ध के कारण बहुत होते हैं. जहां चोरी आदि अनार्य कर्म के करने वाले बहुत रहते हैं. जहां मलेच्छ-भल्लादि लोगों रहते हैं. ऐसे देशों में विचरने का विचार करे, विचार करने को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु, दुगंछनीक कुल चंडाल खटीक मलेच्छ भील्लादि के वहां का अशनादि चारों आहार ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥२६॥ जो साधु दुगुंछनीक कुल का वस्त्र पात्र कम्बल रजोहरण ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु दुगंछनीक कुल की वस्ती (उपाश्रय-स्थानक) ग्रहण करे,

॥ ३५ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ पुढविए णिक्खिवेइ, णिक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ संथारए निक्खिवेइ, निक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्खू असणं वा ४ वेहासे णिक्खिवेइ णिक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥३८॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सद्धिं भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥३९॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सद्धिं आवेढिय परिवेढिय भुंजइ, भुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू आयरिए उवज्झायाणं सेज्जा संथारयं

अर्थ — करे, करते को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार पृथ्वी-जमीन पर रखे रखते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार बिछौने पर रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु अशनादि चारों आहार अधर स्थापन पर रखे अर्थात् बांध कर खूंटी आदि को लटकाये इत्यादि, ऐसा करते को अच्छा जाने ॥३८॥ जो साधु अन्य तीर्थिक तापसादि के साथ व गृहस्थ-श्रावकादि के साथ-भेला बैठ कर अशनादि चारों आहार भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥३९॥ जो साधु अन्य तीर्थिक को तथा गृहस्थों से चारों तरफ घेराया हुआ उन के मध्य में बैठ कर आहार आदिक भोगवे, भोगवते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु आचार्य उपाध्याय आदि बडे

● दुगुंछनीक कुल के परिचय से धर्म की लघुता होवे, अप्रतीत उत्पन्न होवे, निन्दा होवे, इत्यादि दोष लगते हैं.

परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ४९ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, थंभंसि वा, मचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरंसि वा, अंतरिक्ख जायंसि वा, उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारठाणं उग्घाइयं ॥ इति निसीहज्झयणंस्स सोलसम उद्देशो सम्मत्तो ॥ १६ ॥ * * *

अच्छी तरह से रस्सी आदि कर बन्धे न हों, जो बराबर जमाये नहीं, जो चलविचल-डगमग करते हों ऐसे स्थान में लघुनीत वडीनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु ईंटों आदि के ढग पर, स्तंभों पर, मचानों पर, महलों पर, हवा खाने के घरों पर, और भी इस प्रकार के जो अन्तरिक्ष-आकाशिक स्थान हैं वहां वडीनीत लघुनीत परिठावे, परिठाते को अच्छा जाने ॥ ५० ॥ उक्त ५० दोषों में का किसी भी दोष के सेवन करने वाले को लघु चौमासिक प्रायश्चित्त आता है. जो उक्त दोष परवशपने बिना उपयोग लगे तो जघन्य४आयंबिल, मध्यम ५८ नीवी, उत्कृष्ट १०८ उपवास जो आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जघन्य ४ उपवास मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में चार विगय का त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारनेमें आयंबिल॥ इति निसीथ सूत्र का सोलवा उद्देशा समाप्तम् ॥१६॥

# ॥ सत्तरवा-उद्देशा ॥

जे भिक्खू कोऊहल्लवडियाए अण्णयरं तसपाणजाति तणपासएण वा, जाव सुत्तपासएण वा, बंधति बंधंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू कोउहल्लवडियाए बंधेल्लयं वा, मुयति मुयंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा, करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ एवं धरति धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ एवं परिभुंजाति परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ एवं पिणद्धइ पिणद्धंतं वा साइज्जइ ॥ ६ ॥ जे भिक्खू कोऊहल्ल वडियाए अयलोहाणि वा जाव

जो साधु कुतूहल करने के लिये अन्य किसी भी प्रकार के बेन्द्रियादि त्रस प्राणि जीव को तृन की पास कर के यावत् सूत की पास कर के बंधे बंधने को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु कुतूहल के लिये बंधे त्रस प्राणि को छोडे छोडने को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु कुतूहल के लिये तृण की विविध प्रकार के पास की यावत् हरितकाय की माला बनावे बनाने को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की माला रखे, रखने को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की माला पोवरे पोवरने को अच्छा ॥ ५ ॥ जो साधु उक्त प्रकार की

या साइज्जइ ॥ १३९ ॥ जे ... व वा, वा.. वा, णवेज्ज वा, आमणद्धे-
त्र वा, हयहिसियं वा, हत्थिगुलगुलायं वा, तं उक्किट्ठं सीहणायं वा करेइ करंतं
वा साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे भिक्खु भेरीसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, मुरवसद्दाणि
वा, मुइंगसद्दाणि वा, एवं नंदीसद्दाणि वा, झल्लरिसद्दाणि वा, वल्लरिस-डमरुय,
मड्डुय धानु-पणु-गोलिकसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वा, सद्दाणि वा
कण्णसोय पडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधरंतं वा साइज्जइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्खु
वीणासद्दाणि वा, विविच-तुणव-पव्वीसय-वीणाइय-तुंबवीणा-संकोयसद्दाणि

शब्द करे, शब्द करने को अच्छा जाने ॥ १३९ ॥ जो साधु गीत गावे, वाजित्र बजावे, नृत्य करे (नाचे)
... कूदे, घोड़े के जैसा हंकार करे, हाथी जैसा गुलगुलाट करे, वैसे ही उत्कृष्ट सिंहनाद शब्द करे
ऐसा करता हो उसे अच्छा जाने ॥ १४० ॥ जो साधु भेरी के शब्द, पडह के शब्द, मुरज के शब्द,
मृदंग का, नंदी का, झालर का, वल्लरी का, डमरू का, मड्डुया का, शंख का, पेटा का, गोलिका का,
और भी इस प्रकार अन्य शब्द कान से सुनने के लिये मन में धारे, धारने को अच्छा जाने ॥ १४१ ॥
जो साधु वीणा का शब्द, विपंची का शब्द, तुणका शब्द, पावी का शब्द, भार की वीणा, तुम्बी

कहवसद्दाणि वा, ढंककुणसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा, तहप्पगाराणि वा, तंताणि सद्दाणि वा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्खू तालसद्दाणि वा, कंसालसद्दाणि वा, गोहिय-मकरीय-कछभि-समहतिसिणालिय-सीयासद्दाणि वा, आवाढीया सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा, तहप्पगाराणि वा, मुसराणिवा सद्दाय कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेति, धारंतं वा, साइज्जइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्खू संखसद्दाणि वा, वंसु-वेणु-खरमुही-पडिलि-सत्तेव सद्दाणि वा, जाव अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि वा, झुसिराणि वा, सद्दाणिवा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेति

की वीणा, कोहली-सतार का शब्द, ढांक का शब्द, अन्य और भी इस ही प्रकार के तांत-तार के वादिंत्र के शब्द कान से सुनने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ १४२ जो साधु ताल का शब्द, कांस की नाल-कंसताल का शब्द, लितीका का शब्द, गोहीया-गोजिव्हा का शब्द, मकरी का शब्द, कछभीका शब्द, मारती, सावरी, वालिका और भी इस प्रकार के टकोरा लगाकर बजाये जावे ऐसे वादिंत्र के शब्द कान से सुननेका मनमें धारे, धारतेको अच्छा जाने ॥१४३॥ जो साधु शंखका, वंशलीका, वीणा का, खर मुखी का, पडिली का, इत्यादि मुख की हवा से बजाने मासे पोले वादिंत्र का शब्द कान

धारंतं वा साइज्जइ ॥ १४४ ॥ जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाणि वा, जाव सरपंति याणि वा, कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ धारंतं वा, साइज्जइ ॥ १४५ ॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा, गेहाणि वा जाव पव्वयदुग्गाणि वा कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥ १४६ ॥ जे भिक्खू गामाणि वा, नगराणि वा, जाव सन्निवेसाणि वा, कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ, धारंतं वा साइज्जइ ॥ १४७ ॥ जे भिक्खू गाममहाणी वा, जाव सन्निवेस महाणी वा, कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ ॥ १४८ ॥ जे भिक्खू गामवहाणि वा जाव सन्निवेस वहा-

सुनने का मन में धारे, धारने को अच्छा जाने ॥१४४॥ जो साधु क्यारे का खाई का यावत् सरपंक्ति में से पानी की परनालादि पांव पड़ता हो उसे सुनने का मन में धारे, धारते को अच्छा जाने ॥ १४५ ॥ जो साधु कच्छादि आदि के शब्द का, एक जाति के वृक्ष का वायु आदि प्रसंग से शब्द होते हैं, उन को श्रवण करने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४६ ॥ जो साधु ग्राममें होता हुआ शब्द यावत् सन्निवेश में होता शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४७ ॥ जो साधु ग्राम में जल प्रलयादि प्रसंग से महा हानी होती हो उस का शब्द यावत् सन्निवेश में महा हानी होती हो जिस का शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४८ ॥ जो साधु ग्राम में यावत्

णि वा, कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ ॥१४९॥ जे भिक्खू गामदाहाणि वा जाव सन्निवेस दाहाणि वा, कण्णसोयवडियाए जाव साइज्जइ॥१५०॥जे भिक्खू आसकरणाणिवा जाव सुकराणिवा कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ॥१५१॥जेभिक्खू आघायाणे वा,कण्णसोय वडियाए अभिसंधारेइ जाव साइज्जइ॥१५२॥जे भिक्खू आसजुद्धाणिवा जाव सुकर जुद्धाणि वा कण्णसोय वडिए जाव साइज्जइ ॥ १५३ ॥ जे भिक्खू अभिसेयठाणाणि वा जाव पडुप्पवायठाणाणिवा कण्णसोय वडियाए जाव साइज्जइ

सन्नीवेश में संग्रामादि प्रयोग से महा घात होती हो उस का शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १४९ ॥ जो साधु ग्राम में यावत् संन्नीवेश में अग्नि प्रकोप से दाह उत्पन्न हुआ ( अंगार लगी ) उस से लोगों के शब्द होते हों उसे सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५० ॥ जो साधु घोडे को क्रिडादि कलाभ्यास कराते जो शब्द होवे यावत् सुव्वार को कलाभ्यास कराते जो शब्द हों उन को सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५१ ॥ जो साधु चोरादि जीवों के घात स्थान में होते शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५२ ॥ जो साधु अश्व के युद्ध स्थान में होते शब्द यावत् सुव्वर के युद्ध स्थान में होते शब्द सुनने की इच्छा करे, करते को अच्छा जाने ॥ १५३ ॥ जो साधु राजादिक के अभिशेकोत्सव की वक्त होते हुवे शब्द कथादि की समाप्ति की वक्त होते शब्द, तोल माप के स्थान के शब्द, अनेक प्रकार के वादित्रों के शब्द, सुनने की इच्छा

# ॥ अठारहवा—उद्देशा ॥

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहति, दुरुहंतं वा, साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू णावं किणइ, किणावेइ, कियंसाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहंति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे भिक्खू णावं पामिच्चेइ, पामिच्चावेति, पामिच्चसाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू णावं परियाट्टइ परियट्टावेइ परियट्टिय साहट्टु दिज्जमाणं दुरुहति दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥ जे भिक्खू णावं अच्छिज्जं अणिसिट्टं अभिहडं साहट्टु दिज्जमाणं दुरुहति, दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥ ५ ॥ जे भिक्खू पला-

अर्थ — जो साधु विना कारण नाव में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु नाव मूल्य लेवे, अन्य के पास मूल्य लेवावे, कोइ नाव मोल ले कर साधु को देवे उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ जो साधु नाव उधारी लेवे, अन्य पास उधारी लेवावे, कोइ उधारी ले कर देवे उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ जो साधु नाव का बदला करे, बदला [ पलटा ] करावे, अन्य कोइ नावा बदल कर देता हो उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ जो साधु नाव बलात्कार से छीन कर लेवे, मालक की आज्ञा विना लेवे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे, उस में बैठे, बैठते को अच्छा जाने

आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं, इति निसिहज्झयणस्स सत्तरसमं उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥

अर्थ

उपवास, मध्यम ६ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में चार विगय का त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का सतरवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १७ ॥

॥२३॥जे भिक्खू जलगओ जलगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ,पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २४ ॥ जे भिक्खू जलगओ पंकगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू जलगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू पंकगओ जलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २७ ॥ जे भिक्खू पंकगओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ २८ ॥ जे भिक्खू पंकगयाओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥२९॥जे भिक्खू पंकगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ जे भिक्खू

रहा हुआ नाव में रहे दातार के पास असनादि ग्रहण करे ॥ २१ ॥ ६ जो साधु पानी में रहा हुआ पानी में रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २४ ॥ ७ जो साधु पानी में रहा हुआ कर्दममें रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २५ ॥ ८ जो साधु पानी में रहा हुआ जमीन पर रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २६ ॥ ९ जो साधु कर्दम में रहा हुआ नावमें दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २७ ॥ १० जो साधु कर्दम में रहा हुआ पानी में रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २८ ॥ ११ जो साधु कर्दम में रहा हुआ, कर्दम में रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे ॥ २९ ॥ १२ जो साधु कर्दम में रहा हुआ जमीनपर रहे दातार के पास से असनादि ग्रहण करे

अरिपत्तेण वा, कुसपत्तेण वा, मट्टियाएण वा, चेलेण वा, चेलकण्णेन वा, पडि-पेहइ पडिपेहंतं वा, साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू णावाओ णावगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू णावाओ जलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खु णावाओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ, पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू णावाओ थलगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू जलाओ णावगयस्स असणं वा, ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ

हाथ से पांव से किसी वृक्ष के पत्ते से, डाभ-घासादि से, मट्टी से, वस्त्र से, वस्त्र खण्ड से रोके, रोकते को अच्छा जाने॥१८॥ अब नावमें आहार आदि ग्रहण करने के १६ भांगे कहते हैं-१ जो साधु नाव में रहा हुवा नावमें रहे दातारके पास से अशनादि चारों आहार ग्रहण करे करतेको अच्छा जाने(यह सब जगह कहना) ॥१९॥२ जो साधु नावमें रहा हुवा पानीमें रहे दातार से चारों आहार ग्रहण करे ॥२०॥ ३ जो साधु नावमें रहा हुवा कर्दम [ कीचड ] में रहे दातार के पास से आहार आदि ग्रहण करे ॥ २१ ॥ ४ जो साधु नाव में रहा हुवा पृथ्वी पर रहा दातार के पास से अशनादि ग्रहण करे ॥ २२ ॥ ५ जो साधु पानी में

सूत्र

पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा॥३५॥जे भिक्खू वत्थं पामिचइ पामिचावेइ, पामिचयमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ३६ ॥ जे भिक्खू वत्थं परियट्टइ, परियट्टावेइ. परियट्टाय माहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥३७॥ जे भिक्खू वत्थं अच्छिज्जं, अणिसिट्ठं, अभिहडं, दिज्जमाण पडिग्गाहेइ. पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्खु अइरेग वत्थं गणिउद्दोसिय, गणिसमुद्देसिय, गणिअणापुच्छियं, गणिअण्णमण्णस्स वियरइ, वियरंतं वा साइज्जइ ॥ ३९ ॥ जे

अर्थ

ग्रहण करे, ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु वस्त्र उद्धारा ग्रहण करे, उद्धारा ग्रहण करावे, उद्धारा ग्रहण कर दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु वस्त्र का बदला गृहस्थ से करे, बदला करावे, बदला कर वस्त्र दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु वस्त्र बलात्कार कर-छीन कर लेवे, मालिक की आज्ञा विना लेवे साधु के सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे ग्रहण करने को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ जो साधु मर्यादा उपरांत वस्त्र की प्राप्ति हो उस को अपनी सम्प्रदाय के आचार्य के लिये तथा अन्य साधु के लिये ग्रहण कर वह वस्त्र आचार्यादि अगेवानी हों उन को विना पुछे, उन को विना आमंत्रे उन की आज्ञा ग्रहण किये विना,

| भांगा | साधु | दाता |
|---|---|---|
| १ | नाव | नाव |
| २ | नाव | जल |
| ३ | नाव | पंक |
| ४ | नाव | थल |
| ५ | जल | नाव |
| ६ | जल | जल |
| ७ | जल | पंक |
| ८ | जल | थल |
| ९ | पंक | नाव |
| १० | पंक | जल |
| ११ | पंक | पंक |
| १२ | पंक | थल |
| १३ | थल | नाव |
| १४ | थल | जल |
| १५ | थल | पंक |
| १६ | थल | थल |

थलगओ णावगयस्स असणंवा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥३१॥ जे भिक्खू थलगओ जलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥३२॥ जे भिक्खू थलगओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥३३॥ जे भिक्खू थलगओ थलगयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ३४ ॥ जे भिक्खू वत्थं किणइ किणावेइ किय साहट्टु दिज्जमाणं

॥ ३० ॥ १३ जो साधु जमीन पर रहा हुआ नावारूढ दातार से असनादि ग्रहण करे ॥ ३१ ॥ १४ जो साधु जमीन पर रहा हुआ पानी में रहे दातार के पास असनादि ग्रहण करे ॥ ३२ ॥ जो साधु जमीन पर रहा हुआ कर्दम में रहे दातार के पास से आहार आदि ग्रहण करे ॥ ३३ ॥ और १६ जो साधु जमीन पर रहा हुआ उत्सव संस्कृत जमीन पर रहे दातार के पास असनादि चारों आहार ग्रहण करे करतेको अच्छा जाने ॥ ३४ ॥ अब वस्त्र आश्रिय कहते हैं—जो साधु वस्त्र-मोल लेवे, मोल लेवावे, कोइ मोल लेकर वस्त्र दे उसे

ण धरेंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खू वण्णमंत वत्थं विवण्णं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू विवण्णं वत्थं वण्णमंत करेइ, करेंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु तेलेण वा, घएण वा, वसिएण वा, णवणीएण वा, मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खंतं वा भिलिंगतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा, ण्हाणेण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा उव्वट्टेज्ज वा, जाव उव्वट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सीओदग वियडेण वा, उसिणोदग

[illegible] धारण करने योग्य हो वैसे रंगे नहीं, नहीं रंगना हो. फाड [illegible] अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु शुभ्र वर्ण वाले अपने वस्त्र को विवर्ण-खराब वर्ण [illegible] अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु खराब वर्ण वाले वस्त्र को अच्छा बनावे, बनाने [illegible] ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे यह नया वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे तेल [illegible] करने वाले को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे [illegible] कदाचित् रंग बनाइ, ऐसा करने को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु [illegible] तथा वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे शीतल पानी गरम पानी से धोवे.

सूत्र

भिक्खू अइरेग वत्थगं खुड्डगस्स वा खुडिया वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, अहत्थ छिन्नस्स, अपायछिन्नस्स, अकण्णछिन्नस्स, अणासछिन्नस्स, अहोठि छिन्नस्स सकस्स देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अइरेग वत्थगं-खुडियाए वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, हत्थछिण्णस्स जाव असक्कस्स ण देयइ, ण देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू वत्थं-अणलं, अथिरं, अधुवं, अधरणिज्जं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू वत्थ-अलं, थीरं, धुवं धरणिज्जं, ण धरेइ,

अर्थ

अपनी इच्छा में आवे उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो वह छोटी उम्मर वाले साधु साध्वी को स्थविर साधु साध्वीयों कि जिन के हाथ पांव कान नाक होठादि का छेदन नहीं हुवा है अर्थात् सब अंगोपांग संपूर्ण सरल हैं वे याचनादि करके वस्त्र प्राप्त करने समर्थ हैं उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो उसे छोटी उम्मर वाले साधु साध्वी तथा स्थविर स्थविरी वृद्धवय वाले साधु साध्वी जिन के हाथ पांव कान नाक होठादि का छेदन हुवा है अर्थात् वे वस्त्र प्राप्त करने समर्थ नहीं हैं उन को नहीं देवे, नहीं देने को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु वस्त्र फटा तुटा पुराना टिके नहीं जैसा गला हुवा पास में रखने अयोग्य, अशोभनीक है, ऐसे वस्त्र को पास रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु के पास वस्त्र अखण्ड मजबूत बहुत काल चल

ण धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४३ ॥ जे भिक्खु वण्णमंत वत्थं विवण्णं करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू विवण्णं वत्थं वण्णमंत करेइ, करंतं वा साइज्जइ ॥ ४५ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु-तेलेण वा, घएण वा, वसिएण वा, वण्णवण्णीएण वा, मक्खेज्ज वा भिलंगेज्ज वा, मक्खंतं वा भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ ४६ ॥ जे भिक्खू णाव इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा, ण्हाणेण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा उवट्टेज्ज वा, जाव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सिउदग वियडेण वा, उसिणोदग

ऐसा पात्र में रखने योग्य शरीर पर धारन करने योग्य हो उसे रखे नहीं, नहीं रखता हो, फाड तोड देवता हो उसे अच्छा जाने ॥ ४३ ॥ जो साधु शुभ्र वर्ण वाले अच्छे वस्त्र को विवर्ण-खराब वर्ण वाला बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४४ ॥ जो साधु खराब वर्ण वाले वस्त्र को अच्छा बनावे, बनाते को अच्छा जाने ॥ ४५ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे यह नया वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे तेल घृतादि लगाऊं, ऐसा विचार करने वाले को अच्छा जाने ॥ ४६ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नया वस्त्र प्राप्त हुआ है इसे लोद्र कल्कादि रंग लगाऊं, ऐसा करने को अच्छा जाने ॥ ४७ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नया वस्त्र प्राप्त हुआ है इसे अचित्त शीतल पानी गरम पानी से धोऊं,

सूत्र

भिक्खू अइरेग वत्थगं खुड्डगस्स वा खुडिया वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, अहत्थ छिन्नस्स, अपायछिन्नस्स, अकण्णाछिन्नस्स, अणासछिन्नस्स, अहोठि छिन्नस्स सकस्स देयइ, देयंतं वा साइज्जइ ॥ ४० ॥ जे भिक्खू अइरेग वत्थंग-खुडियाए वा, थेरगस्स वा, थिरियाए वा, हत्थछिण्णस्स जाव असघास्स ण देयइ, ण देयंतं वा, साइज्जइ ॥ ४१ ॥ जे भिक्खू वत्थं-अणलं, अथिरं, अधुवं, अधरणिज्जं धरेइ, धरंतं वा साइज्जइ ॥ ४२ ॥ जे भिक्खू वत्थ-अलं, थीरं, धूवं धरणिज्जं, ण धरेइ,

अर्थ

अपनी इच्छा में आवे उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३९ ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो वह छोटी उम्मर वाले साधु साध्वी को स्थविर साधु साध्वीयों कि जिन के हाथ पांव कान नाक होठादि का छेदन नहीं हुवा है अर्थात् सब अंगोपांग संपूर्ण सरल है वे याचनादि करके वस्त्र प्राप्त करने समर्थ हैं उन को देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ४० ॥ जो साधु के पास अधिक वस्त्र हो उसे छोटी उम्मर वाले साधु साध्वी तथा स्थविर स्थविरी वृद्धवय वाले साधु साध्वी जिन के हाथ पांव कान नाक होठादि का छेदन हुवा है अर्थात् वे वस्त्र प्राप्त करने समर्थ नहीं हैं उन को नहीं देवे, नहीं देने को अच्छा जाने ॥ ४१ ॥ जो साधु वस्त्र फटा तुटा पुराना टिके नहीं जैसा गला हुवा पास में-रखने अयोग्य, अशोभनीक है. ऐसे वस्त्र को पास रखे, रखते को अच्छा जाने ॥ ४२ ॥ जो साधु के पास वस्त्र अखण्ड मजबूत बहुत काल चल

निगडेण वा, जाव उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे निकट्टु बहुदिवसीएण वा तेल्लेणवा, जाव भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥४९॥ जे भिक्खू णवे इमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसीएण वा लोद्धेणवा जाव उवटंतं वा साइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्खू णवेइमे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसीएणवा सीउदग वियडेणवा जाव पधोवं तं वा साइज्जइ ॥ ५१ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे निकट्टु दुब्भिगंद्धे करेइ, करंत वा साइज्जइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु सुब्भिगंधं करेइ, करंतं वा साइज्जर ॥ ५३ ॥ जे भिक्खू सुब्भि

ऐसे विचार करने को अच्छा जाने ॥ ४८ ॥ जो साधु नया वस्त्र प्राप्त कर ऐसा विचार करे कि मैं इसे बहुत दिन रख कर तथा तीन पसली उपरान्त तेल घृतादि लगावूं, ऐसे विचारक को अच्छा जाने ॥ ४९ ॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नया वस्त्र प्राप्त हुवा है, इसे बहुत दिन रख तथा मर्यादा उपरांत लोद्र कर्कादि लगावु ऐसे विचारक को अच्छा जाने ॥५०॥ जो साधु ऐसा विचार करे कि मुझे नया वस्त्र प्राप्त हुवा है इसे बहुत दिन से अथवा बिना कारण मर्याद उपरांत अचित्त धोवन तथा गरम पानी कर धोवु ऐसे विचारवाले को अच्छा जाने ॥ ५१ ॥ जो साधु को सुगन्धी वस्त्र प्राप्त हुवा है उसे दुर्गन्धी बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ५२ ॥ जो साधु को दुर्गन्धी वस्त्र प्राप्त हुवा उसे सुगन्धी बनावे बनाते को अच्छा जाने ॥ ५३ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे

गंधं वत्थे लद्धेत्तिकट्टु तेल्लेणवा जाव भिलंईतं वा साइज्जइ ॥ ५४ ॥ जे भिक्खु सुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु लोद्धेणवा जाव उव्वट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंध वत्थे लद्धेत्तिकट्टु सीउदग वियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ५६ ॥ जे भिक्खू सुभिगंधे मे वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसीएणं तेल्लेणवा जाव साइज्जइ ॥ ५७ जे भिक्खू सुब्भिगंध में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहु दियसिएण लोद्धेणवा जाव उव्वट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ५८ ॥ जे भिक्खू सुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे त्तिकट्टु बहुदिवसिएणवा सीउदगं वियडेणवा जाव साइज्जइ ॥ ५९ ॥

तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ५४ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे लोद्रादि से रंगे, रंगते को अच्छा जाने ॥ ५५ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे अचित्त पानी से धोवे धोते को अच्छा जाने ॥ ५६ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ५७ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र [illegible]प्त कर बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत लोद्रादि कर रंगे, रंगते को अच्छा जाने ॥ ५८ ॥ जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत अचित्त पानी से धोवे, धोते को अच्छा जाने॥२१॥,

जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे चिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे चिकट्टु लोद्देणवा जाव उवट्टतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे चिकट्टु सीउदग वियडेणवा जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे चिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगेज्जवा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधमे वत्थे लद्धे चिकट्टु चिकट्टु बहुदिवसिएण लोद्देणवा जाव उवट्टतं वा साइज्जइ ॥ ६४ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधेमे वत्थे लद्धे चिकट्टु बहुदिवसिएणं सीउदगं वियडेणवा जाव पधोवंतं वा

जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६० ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे अचित्त पानी कर धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत तेलादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने* ॥ ६३ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन वक्त उपरांत पानी कर धोवे, धोते को अच्छा

* वस्त्र को युकादि की उत्पत्ति से बचाने तथा खाज मिटाने तेलादि लगाने का कहा देखता है.

सूत्र

साइज्जइ ॥ ६५ ॥ जेभिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए वत्थं अयावेज्जवा पयावेज्जवा जाव पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढविए वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा आयावंतं वा पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ६७ ॥ जे भिक्खु मट्टियाकडाए पुढवीए वत्थं आयावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ६८ ॥ जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारुए जीव स अंड स पाणे,स वीए,स हरिए,स उस्से, सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए वत्थं आयावेज्ज वा जाव साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा

अर्थ

जाने ॥ ६५ ॥ जो साधु सचित्त पृथ्वी काया मे अन्तर रहित वस्त्र को आताप में देवे आताप में दे, देते को अच्छा जाने ॥ ६६ ॥ जो साधु सचित्त रज से भरी पृथ्वी पर वस्त्र आताप में दे [illegible] अच्छा जाने ॥ ६७ ॥ जो साधु सचित्त पानी से भींजी पृथ्वी पर वस्त्र आताप में दे, देते को अच्छा [illegible] जाने ॥ ६८ ॥ जो साधु सचित्त सिला सचित्त कंकर जिस लकड के जाले वगैरे. जीवोंने प्रवेश किया [illegible] बीज-हरि काया-ओस का पानी-कीडी के नगरे फुलन-पानी-मट्टी-करोलिये इत्यादि युक्त हो वहां वस्त्र आताप में दे, यावत् देते को अच्छा जाने॥६९॥जो साधु थुण पर देहली पर यावत् वस्त्र आताप में देते को।

सूत्र

जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे चिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगंतं वा साइज्जइ ॥ ६० ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे में वत्थे लद्धे चिकट्टु लोद्धेणवा जाव उवट्टतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे चिकट्टु सीउदगं वियडेण जाव पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ ६२ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे चिकट्टु तेलेणवा जाव भिलंगेज्जवा साइज्जइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधमे वत्थे लद्धे चिकट्टु बहुदिवसिएण लोद्धेणवा जाव उवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ ६४ ॥ जे भिक्खू दुब्भिगंधेमे वत्थे लद्धे चिकट्टु बहुदिवसिएणं सीउदगं वियडेणवा जाव पधोवंतं वा

अर्थ

जो साधु सुगन्धी वस्त्र प्राप्त कर उसे तेल घृतादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने॥ ६० ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६१ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे अचित्त पानी कर धोवे, धोते को अच्छा जाने ॥ ६२ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत तैलादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने*॥ ६३ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन पसली उपरांत लोद्रादि लगावे, लगाते को अच्छा जाने ॥ ६४ ॥ जो साधु दुर्गंधी वस्त्र प्राप्त कर उसे बहुत दिन से तथा तीन वक्त उपरांत पानी कर धोवे, धोते को अच्छा

* वस्त्र को यूकादि की उत्पत्ति से बचाने तथा आभ मिटाने तेलादि लगाने का कहा देखता है.

सूत्र

॥ ७७ ॥ जे भिक्खू वत्थाओ उसह बीयाए णिहरइ जाव पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खु वत्थाओ तसपाणजायं णिहरइ जाव पडिग्गहंतं वा, साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणउवासगं वा गामंतरंसि वा, गामपंतरंसि वा वत्थाओ ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू णायगं वा जाव परिसाओ उट्ठित्ता वत्थं ओभासियं २ जायइ, जायंतं वा, साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू वत्थं णिस्साए उडुबंध वसइ, वसंतं वा साइज्जइ

अर्थ

में धान्यादि बीज निकाले निकलावे, निकालकर वस्त्र दे उसे ग्रहण करे करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु वस्त्र में से बेइन्द्रियादि त्रस प्राणी निकाले निकलावे निकलाकर वस्त्र देते को अच्छा जाने॥७२॥ जो साधु के [illegible] स्वजन है [illegible] स्वजन न हो, श्रावक हो या श्रावक न हो उनके पास ग्रामादि के अन्तर में (गृहस्थ) [illegible] वस्त्र मांगे [illegible] अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु स्वजन हो या स्वजन न हो श्रावक हो या श्रावक न हो उन के पास परिषदा में से उठकर [illegible] वस्त्र मांगे मांगते को अच्छा जाने ॥८१॥ जो साधु वस्त्र के लिये पास [illegible] रहे रहते को अच्छा जाने॥८२॥ जो साधु वस्त्र के लिये चौमासा रहे रहते को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ इन बोलों में किसी भी दोष सेवनवाले को लघु चौमासिक प्रायः

जाव साइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्खू कुलयंसि वा, भित्तिसि वा जाव अंतरिक्ख-जायंसि वा वत्थं आयावेज्ज वा जाव पयावंतं साइज्जइ॥७१॥जे भिक्खू खंधंसि वा, थभंसि वा जाव अण्णयरंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा, दुबद्धे दुनिक्खित्ते वत्थं आयावेज्ज वा, जाव पयावंत वा साइज्जइ ॥ ७२ ॥ जे भिक्खू खंधंसि वा, थुभंसि वा मचंसि वा, मालयंसि वा पासायंसि वा, हमीयतलंसि वा, अण्णयरंसि वा, अंतरिक्खजायंसि वा वत्थं आयावेज्ज वा, जाव पयावंतं वा साइज्जइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्खू वत्थाओ पुढवीकाय णिहरइ णिहरावेइ णियरिय साहट्टु दिज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहंतं वा, साइज्जइ ॥७४॥ एवं आउकाया, ॥७५॥ एवं तेऊकाय ॥ ७६ ॥ एवं कंदाणि वा, फलाणि वा जाव हरियाणि वा णिहरइ जाव पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ

अच्छा जाने॥७०॥जो साधु खंभ भींत आदि पर वस्त्र आताप में देवे देते को अच्छा जाने॥७१॥जो साधु लकड का दग स्थंभादि वगैरह आताप में देते को अच्छा जाने॥७२॥जो साधु स्कंधादि का दग मचाण महल आदि ऊंचा अधर स्थान में वस्त्र आताप में देवे देते को अच्छा जाने॥७३॥जो साधु वस्त्र में से पृथ्वी,पानी,अग्नि,कन्द मूलादि वन-स्पति निकाले निकलावे,निकाल कर देता हो उसे ग्रहण करे,करते को अच्छा जाने॥७७॥जो साधु के स्व

॥ ७७ ॥ जे भिक्खू वत्थाओ उसइ बीयाए णिहरइ जाव पडिग्गहंतं वा साइज्जइ ॥ ७८ ॥ जे भिक्खु वत्थाओ तसपाणजायं णिहरइ जाव पडिग्गहंत वा, साइज्जइ ॥ ७९ ॥ जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणउवासगं वा गामंतरंसि वा, गामपंतरंसि वा वत्थाओ ओभासिय २ जायइ, जायंतं वा साइज्जइ ॥ ८० ॥ जे भिक्खू णायगं वा जाव परिसमज्झओ उवट्ठित्ता वत्थं ओभासियं २ जायइ, जायंतं वा, साइज्जइ ॥ ८१ ॥ जे भिक्खू वत्थं णिसाए उडुबंध वसइ, वसंतं वा साइज्जइ

में धान्यादि बीज निकाले निकलावे, निकालकर वस्त्र दे उसे ग्रहण करे करते को अच्छा जाने ॥ ७८ ॥ जो साधु वस्त्र में से बेइन्द्रियादि त्रस प्राणी निकाले निकलावे निकालकर वस्त्र देते को अच्छा जाने॥७९॥ जो साधु के पितादि स्वजन हो या स्वजन न हो, श्रावक हो या श्रावक नहो उनके पास ग्रामादि के अन्तर में पुकार २ कर यांचे याचते को अच्छा जाने ॥ ८० ॥ जो साधु स्वजन हो या स्वजन न हो श्रावक हो या श्रावक न हो उन के पास परिषदा में से उठकर पुकार २ कर वस्त्र यांचे याचते को अच्छा जाने ॥८१॥जो साधु वस्त्र के लिये मास कल्पादि रहे रहते को अच्छा जाने॥८२॥जो साधु वस्त्र के लिये चौमासा करे कराते को अच्छा जाने ॥ ८२ ॥ इन दोषों को किसी भी दोष लगानेवाले को [illegible]

॥ ८३ ॥ जे भिक्खू वत्थं निसाए वासावासं वसइ जाव साइज्जइ ॥ ८४ ॥ तं सेवमाणे अवज्जइ चउमासियं परिहार ठाणं उग्घाइयं ॥ निसिहज्झयण अठारमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १८ ॥ * * * * *

श्चित्त आता है. जो उक्त दोष परवशपने उपयोग बिना लगावे तो जघन्य ४ आयंबिल, मध्यम ६० नीवी उत्कृष्ट १०८ उपवास. जो आतुरता से उपयोग सहित लगावे तो जघन्य ४ उपवास, मध्य ६ बेले. उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में चार विगय त्याग और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्च्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ५ तेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास पारने में आयंबिल. इति निशीथ सूत्र का अठारवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १८ ॥ ० ० ०

## ॥ उन्नीसवा–उद्देशा ॥

जे भिक्खू वियडं किण्णाति किण्णावेति, कीया साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥ १ ॥ एवं वियडं पामिच्च ॥ २ ॥ एवं वियडं परियट्टं ॥ ३ ॥ एवं वियडे अच्छिज्जं ॥ ४ ॥ एवं वियडे अणिसिट्ठं ॥ ५ ॥ एवं वियडे अभिहडं ॥ ६ ॥ जे भिक्खू गिलाणस्स अट्ठाए परंतिण्ह वियडं दत्तीणं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहंतं

जो साधु-साधु के कल्पने योग्य जो अचित्त वस्तु है उसे मूल्य लेवे, मूल्य लेवावे, अन्य मूल्य लेकर देता हो उसे ग्रहण करे, मूल्य ग्रहण करता हो उस साधु को अच्छा जाने ॥ १ ॥ जो साधु अचित्त वस्तु उधारी लेवे, उधारी लेवावे, उधारी लेकर कोई दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करावे उधारी ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ २ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु का ग्रहस्थ से बदला करे कि यह मेरी तुम लो वह तेरी मुझे दो, ऐसा अन्य साधु से करावे, ऐसा बदला कर कोई वस्त देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ३ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु किसी निर्बल के पास से बलात्कार से छीन कर लेवे, अन्य से लेवावे, छीन कर देता हो उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ४ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु के मालक की आज्ञा विना ग्रहण करे, करावे, विना आज्ञा ग्रहण कर कोई अन्य देवे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ५ ॥ ऐसे ही अचित्त वस्तु सन्मुख मंगाकर लेवे, अन्य साधु को लेवावे, सन्मुख लाकर दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने ॥ ६ ॥ जो साधु

इज्जइ ॥७॥ जेभिक्खू वियडं गहाय गामाणुगामं दूतिज्जति दूतिज्जंतं वा साइज्जइ ॥ ८ ॥ जे भिक्खू वियडं गालेति गालावेति गालिया साहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गहेइ, पडिग्गाहंतं वा सइज्जइ ॥९॥ जे भिक्खू चउहिं संज्झाएहिं सज्झायं करेति, करंतं वा, साइज्जइ-तंजहा पुव्वाए संज्झाए, पच्छिमासंज्झाय, अवरण्हे, अड्ढरत्ते ॥ २० ॥

गिल्यानी ( रोगी ) साधु के लिये अचित्त वस्तु की तीन दाती से ज्यादा ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने. क्यों कि दो वक्त लाया हुवा तो वह अग्रह करने से भी ग्रहण करले, परंतु विशेष अग्रह से वह कोपित होवे तथा गिल्यानी के लिये लाया अन्य को भोगवते से अनेक दोषोंत्पत्ति होवे ॥७॥ जो साधु चित्त वस्तु आहार आदि ग्रहणकर ग्रामानुग्राम विहार करे विहार करतेको अच्छा जाने* ॥८॥ जो साधु अचित्त वस्तु गुड सक्करादि पानी आदि से गलावे, अन्य पास गलवावे, साधु निमित्त गला कर कोई दे उसे ग्रहण करे, ग्रहण करते को अच्छा जाने, स्याद् निमित्त गलाने में दोष है ॥ ९ ॥ जो साधु—४ अस्वाध्याय के काल में स्वाध्याय [ सूत्र पठन ] करे, करते को अच्छा जाने तद्यथा—१ प्रातःकाल, २ सन्ध्याकाल ( दोनों वक्त रक्त रंग की दिशा रहे वहां तक ) ३ दोपहर, और ४ आधी रात्रि, ( दोनों वक्त एक २ मुहुर्त ) ॥ १० ॥ जो साधु कालिक शास्त्र जो दिन और रात्रिके प्रथम और

* साधु को दो कोस उपरात उपभोगिक पदार्थ ले जाने की मना है.

सूत्र

जे भिक्खू कालिय सुयस्स परंतिण्हं पुच्छाणं पुच्छंति पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥ ११ ॥ जे भिक्खू दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छण्हं पुच्छंति, पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥ १२ ॥ जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ, तंजहा-इंदमहेसु वा, खंधमहेसु वा, जक्खमहेसु वा, भूयमहेसु वा ॥ १३ ॥ जे भिक्खू चउसु महा पडिवएसु सज्झायं करेइ, करंतं वा साइज्जइ तंजहा-सुगिम्हिय पाडिवाए, असाढी पडिवाए, भद्दवए पाडीवाए, कत्तिय पडिवाए ॥ १४ ॥ जे भिक्खू पोरसिं सज्झायं

अर्थ

चौथे प्रहर में पठन किये जाते हैं, उन की अकाल में तीन गाथा उपरांत पठन करे, करते को अच्छा जाने॥११॥जो साधु अकाल्में दृष्टी वाद बारहवा अंग की सात पृच्छा [गाथा] उपरांत पढे, पढते को अच्छा जाने ॥ १२ ॥ जो साधु चार देवता के महोत्सव होते हों उस वक्त स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने, यथा—१ इन्द्रदेव का, २ स्कन्ध देव का, ३ यक्ष देव का और ४ भूत देव का ॥ १३ ॥ जो साधु चार महा प्रतिपदा को स्वध्याय करे, करने को अच्छा जाने, तद्यथा—१ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से वैशाख वद्य प्रतिपदा, २ अषाढ शुक्ल पूर्णिमा से श्रावण वद्य प्रतिपदा, ३ भाद्रव शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन वद्य प्रतिपदा, और ४ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा से मृगशर वद्य प्रतिपदा॥ ॥ १४ ॥ जो साधु

* उक्त प्रातः सन्ध्या दो प्रहर और मध्य रात्रि में, तथा इन चार महा पूर्णिमा तथा प्रतिपदा को देवताओं का गमनागमन विशेष होता है देवता की भाषा और शास्त्र की भाषा एक है. अनुच्चारण होने से विघ्नोत्पत्ति होवे.

सूत्र

इयातिण्णावेति, उवाइणंते वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू चउकालं सज्झायं न करेति, न करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू असज्झायं सज्झायं करेति करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो असज्झायंसि सज्झायं करेति, करंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू हेट्ठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता, उवरिम सुयं वाएति, वाएंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू णवबंभचेराइं अवाएत्ता

अर्थ

स्वध्याय काल २ प्रहरको कालका अतिक्रमे ( अर्थात दूसरे प्रहर में ध्यान नहीं करे ) अतिक्रमते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु रात्रि और दिन का प्रथम प्रहर और अंतिम प्रहर इन चारों काल में स्वध्याय नहीं करे, नहीं करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु तारा टूटे, रक्त दिशा, गाज, बीज, आदि अस्वाध्याय की वक्त स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु अपने शरीर सम्बन्धी रक्तादि की अस्वाध्याय में स्वध्याय करे, करते को अच्छा जाने+ ॥ १८ ॥ जो साधु नीचे के ( प्रथमके ) समवसरण ( सूत्र ) उल्लंघन [ छोड ] कर ऊपर का ( अन्य ) सूत्र की वांचना प्रथम देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ अर्थात् जो साधु नव ब्रह्मचर्य के [ आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के ] अध्ययन

+ अन्तर सूत्र में कालिक को एकान्तिक कहा है, इस लिये सामायिक प्रतिक्रमण के लिये कोइ भी ...

मूल

अपरिमगुयं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अवत्तं वाएति वायंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू वत्तंवाएति, णवायंतावा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अपत्तं वाएति, वायंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू पत्तं नवाएति नवायंतं वा साइज्जति ॥ २४ ॥ जे भिक्खू दोण्हा सरिसयाणं एक्कं सिक्खावेति, एक्कं नसिक्खावेति, एक्कं वाएइ, एक्कं नवाएइ, एक्कं न संसिक्खावेइतं वा,

अर्थ

छोड कर अन्य सूत्र प्रथम पढावे. पढाते को अच्छा जाने॥ २० ॥ जो साधु अव्यक्त छोटी उम्मर वाले जिस के कांख रोम या गोप-स्थान बाल नहीं हुवे हों उन को सूत्रार्थ की वांचना देवे. वांचना देते को अच्छा जाने ॥२१॥ जो साधु व्यक्त योग्यवय-युक्तवय सम्पन्न को वांचना नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा जाने ॥२२॥ जो साधु अपात्र अर्थात् सूत्र ज्ञान ग्रहण करने के जो विनयादि गुण हैं उसे अप्राप्त अयोग्य को वांचना देवे, देते को अच्छा जाने ॥२३॥ जो साधु पात्र विनयादि गुण सम्पन्न ज्ञान देने योग्य हो उसे सूत्र की वांचना नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा जाने ॥२४॥ जो साधु दो साधु एक से सूत्र ग्रहण करने योग्य वय बुद्धि विनयादि गुण सम्पन्न हों उन में से एक को

* [illegible]

सूत्र

उग्घातिण्णावेति, उग्घाइणंतं वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्खू चउकालं सज्झायं न करेति, न करंतं वा साइज्जइ ॥ १६ ॥ जे भिक्खू असज्झायं सज्झायं करेति करंतं वा साइज्जइ ॥ १७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो असज्झायंसि सज्झायं करेति, करंतं वा साइज्जइ ॥ १८ ॥ जे भिक्खू हेठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता, उवरिम सुयं वाएति, वायंतं वा साइज्जइ ॥ १९ ॥ जे भिक्खू णवबंभचेराइ अवाएत्ता

अर्थ

स्वाध्याय करता २ प्रहरसो काल का प्रतिक्रमे (अर्थात् दूसरे प्रहर में ध्यान नहीं करे) अतिक्रमते को अच्छा जाने ॥ १५ ॥ जो साधु रात्रि और दिन का प्रथम प्रहर और अंतिम प्रहर इन चारों काल में स्वाध्याय नहीं करे, नहीं करते को अच्छा जाने ॥ १६ ॥ जो साधु तारा टूटे, रक्त दिशा, गाज, वीज, आदि अस्वाध्याय की वक्त स्वाध्याय करे, करते को अच्छा जाने ॥ १७ ॥ जो साधु अपने शरीर सम्बन्धी रक्तादि की अस्वाध्याय में स्वाध्याय करे, करते को अच्छा जाने+ ॥ १८ ॥ जो साधु नीचे के (प्रथमके) समवसरण [ सूत्र ] उल्लंघन [ छोड ] कर ऊपर का ( अन्य ) सूत्र की वांचना प्रथम देवे, देते को अच्छा जाने ॥ १९ ॥ अर्थात् जो साधु नव ब्रह्मचर्य के [ आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के ] अध्ययन

+ अथवा सूत्र जो कालिक जो उत्कालिक कहा है, इस लिये सामायिक प्रतिक्रमण [illegible] भी अस्वाध्याय नहीं है

अवरिमसुयं वाएइ वायंत वा साइज्जइ ॥ २० ॥ जे भिक्खू अवत्तं वाएति वायंतं वा साइज्जइ ॥ २१ ॥ जे भिक्खू वत्तंणवाएति, णवायंतावा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्खू अपत्तं वाएति, वायंतं वा साइज्जइ ॥ २३ ॥ जे भिक्खू पत्तं नवाएति नवायंतं वा साइज्जति ॥ २४ ॥ जे भिक्खू दोण्हंपि सरिसयाणं एक्कं सिक्खावेति, एक्कं न सिक्खावेति, एक्कं वाएइ, एक्कं नवाएइ, एक्कं न संसिक्खावेइतं वा,

अर्थ छोड कर अन्य सूत्र प्रथम पढावे, पढाते को अच्छा जाने॥ २० ॥ * जो साधु अव्यक्त- छोटी उम्मर वाले जिस के कांख होठ पर रोम-बाल प्रगट नहीं हुवे हों उन को शास्त्रार्थ की वाचना देवे, वाचना देते को अच्छा माने ॥२१॥ जो साधु व्यक्त-योगावस्था-युक्तवय सम्पन्न को वाचना नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा माने ॥२२॥ जो साधु अप्राप्त अर्थात् सूत्र ज्ञान ग्रहण करने के जो विनयादि गुण है उसे अप्राप्त अयोग्य हो तथा व्यवहार सूत्रानुसार दीक्षा का कालमान नहीं हुआ हो उसे सूत्र रचावे, रचाते को अच्छा जाने ॥२३॥ जो साधु विनयादि गुण सम्पन्न ज्ञान देने योग्य हो उसे सूत्र की वाचना नहीं देवे, नहीं देते को अच्छा जाने ॥२४॥ जो साधु दो साधु एक से सूत्र ग्रहण करने योग्य वय बुद्धि विनयादि गुण सम्पन्न हों उन में से एक को

* पहिले आरे में प्रथम आचारांग पढा कर फिर अन्य शास्त्र पढाते थे. इस वक्त आचार्य परम्परा से प्रथम दशवैकालिक शास्त्र पढाते हैं.

एक्कं णवायंतं वा साइज्जइ ॥ २५ ॥ जे भिक्खू आयरिय उवज्झाएहिं अविदिण्ण-गिरं आतियइ, आतियतं वा साइज्जइ ॥ २६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएति, वायंत वा साइज्जाति ॥ २७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा वायणं पडिच्छंति, पडिच्छंतं वा साइज्जाति ॥ २८ ॥ जे भिक्खू पासत्थं वाएति, वायतं वा साइज्जइ ॥२९॥ जे भिक्खू पासत्थस्स वाएणं पडिच्छंति, पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ ३० ॥ एवं उसण्णं ॥ ३२ ॥ एवं कुसीलं ॥ ३४ ॥

सूत्र वांचावे, एक को नहीं वांचावे, नहीं वांचाते को अच्छा जाने ॥ २५ ॥ जो साधु आचार्य उपाध्याय के पास वांचनी लिये बिना अपने मन से ही शास्त्र वांचे वांचते को अच्छा जाने ॥ २६ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक गृहस्थ को वांचनी दे, देते को अच्छा जाने ॥ २७ ॥ जो साधु अन्य तीर्थिक गृहस्थ के पास वांचनी ले, लेते को अच्छा जाने ॥ २८ ॥ जो साधु पार्श्वस्थ [ ढीले ] साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ २९ ॥ जो साधु पार्श्वस्थ ( ढीले ) साधु के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥३०॥ जो साधु ऊसन्न साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥३१॥ जो साधु उसने साधु के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३२ ॥ जो साधु कुशीलीये साधु को वांचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३३ ॥ जो साधु कुशीलीये साधु पास वाचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने

सूत्र एवं णितियं ॥ ३६ ॥ एवं ससत्त ॥ ३८ ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥ निसीहज्झयणस्स गुणवीसमं उद्देसो सम्मत्तो ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ ३४ ॥ जो साधु नित्यक साधु को वांचनी देवे, देवे को अच्छा जाने ॥ ३५ ॥ जो साधु नित्यक के पास से वाचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३६ ॥ जो साधु संसक्त को वाचनी देवे, देते को अच्छा जाने ॥ ३७ ॥ जो साधु संसक्त के पास वांचनी लेवे, लेते को अच्छा जाने ॥ ३८ ॥ उक्त ३८ दोष में के किसी भी दोष सेवन करने वाले को लघु चौमासिक प्रायश्चित आता है. जो उक्त दोष-परवश पने बिना उपयोग से लगावे तो जघन्य ४ अयंबिल मध्यम ६० नीवी. उत्कृष्ट १०८ उपवास. जो आतुरता से उपयोग सहित लगे तो जघन्य ४ उपवास, मध्यम ४ बेले, उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारने में पारिणाम बंध और जो मोहनीय कर्मोदय मूर्छा भाव से लगावे तो जघन्य ४ बेले, मध्यम ४ तेले उत्कृष्ट १०८ उपवास, पारणे में आंबिल. इति निशिथ सूत्र का उन्नीसवा उद्देशा संपूर्ण ॥ १९ ॥

## ॥ वीसवा—उद्देशा ॥

(१)जे भिक्खू मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं ( २ ) जे भिक्खू दो मासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स दो मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स तिमासियं ( ३ ) जे भिक्खू तिमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तिमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं ( ४ ) जे भिक्खू चउमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता

( १ ) जो साधु एक महिने का प्रायश्चित आवे ऐसे दोष स्थान का सेवन कर आचार्यादि के पास उस की आलोचना करते जो वह माया कपट रहित आलोचना करे तो उसे एक महिने का प्रायश्चित आवे और वह जो माया-कपट सहित आलोचना करे तो उसे दुगुना अर्थात् दो महिने का प्रायश्चित आवे [ २ ] जो साधु दो महिने का प्रायश्चित आवे ऐसा दोष स्थान का सेवन कर माया रहित आलोचना करे तो दो महिने का प्रायश्चित आवे और माया-कपट सहित आलोचना करे तो तीन महिने का प्रायश्चित आवे. ( ३ ) जो साधु तीन महिने प्रायश्चित का दोष स्थान सेवन कर

सूत्र

आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं (५) जे भिक्खू पंचमासियं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स छम्मासियं (६) तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा तं चेव छम्मासियं ॥ १ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोए

अर्थ

माया रहित आलोवेतो तीन महिने का प्रायश्चित आवे और माया सहित आलोवेतो चार महिने का प्रायश्चित आवे (४) जो साधु चार महिने प्रायश्चित का दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोवे तो चार महिने का प्रायश्चित और कपट सहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायश्चित. (५) जो साधु पांच महिने का प्रायश्चित का स्थान सेवन कर माया रहित आलोवे तो पांच महिने का प्रायश्चित और माया सहित आलोवे तो छ महिने का प्रायश्चित (६) उक्त स्थान सिवाय किसी भी प्रायश्चित का स्थान सेवन कर कपट रहित आलोवे तथा कपट सहित आलोवे किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छ महिने का ही प्रायश्चित आवे. क्यों कि उत्कृष्ट तप छ महिना का ही होता है और प्रायश्चित भी उतना ही होता है. छ महिने से ज्यादा तप भी नहीं और प्रायश्चित भी नहीं है ॥१॥ अब बहुवक्त दोष

माणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं ( १ ) जे भिक्खू बहुसोवि दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स दो मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स तिमासियं ( २ ) जे भिक्खू बहुसोवि तिमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोयज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्सति मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं ( ३ ) जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं ( ४ ) जे भिक्खू पंचमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता

सेवन आश्रिय कहते हैं-( १ ) जो साधु बहुत ( तीन ) वक्त एक महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोयना करे तो एक महिने का प्रायःश्चित आवे और कपट सहित आलोयना करे तो दो महिने का प्रायःश्चित आवे ( २ ) जो साधु बहुत वक्त दो महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोयना करे तो दो महिने का प्रायःश्चित आवे, और कपट सहित आलोयना करे तो तीन महिने का प्रायःश्चित आवे. ( ३ ) जो साधु बहुत वक्त तीन महिने का प्रायःश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोवे तो तीन महिने का प्रायःचित्त आवे और कपट सहित आलोवे तो चार महिने का प्रायःश्चित्त आवे ( ४ ) जो साधु बहुत वक्त चार महिने

...आलोएमाणस्स दोमासियं तिमासियं चउमासियं, पंचमासियं, छमासियं॥
तेणं परं पलिउंचियं वा अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स ते चेव छम्मासियं
॥ २ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं दोमासियं, तिमासियं चउमासियं, पंचमासियं
एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं
आलोएमाणस्स मासियं, दोमासियं तिमासियं चउमासियं पंचमासियं. पलिउंचियं
आलोएमाणस्स-दोमासियं वा, तिमासियं वा, चउमासियं वा, पंचमासियं वा,

और पांच महिने वाले को पांच मासिक प्रायश्चित आवे और जो यह कपट सहित आलोचना करे तो-एक महिने वाले को दो मासिक, दो महिने वाले को तीन मासिक, तीन महिने वाले को चार मासिक, चार महिने वाले को पांच मासिक और पांच महिने वाले को छ मासिक प्रायश्चित आता है इस सिवाय किसी भी दोष स्थान का सेवन कर कपट रहित या कपट सहित किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छही महिने का प्रायश्चित आता है. इस उपरांत प्रायश्चित नहीं है ॥ १ ॥ बहुत बक्त आश्रिय कहते हैं—जो साधु बहुत वक्त एक मासिक, दो मासिक तीन मासिक, चार मासिक, और पांच मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन कर उस की कपट रहित आलोचना करे तो, एक महिने वाले को एक महिने का यावत् पांच महिने वाले को पांच मासिक प्रायश्चित आवे और जो कपट सहित आलोचना करे

सूत्र

छमासियं वा, ॥ तेणं परं पलिउंचियं वा, अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स तं चेव छमासियं वा ॥ ४ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, सातिरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, सातिरेगं पंचमासियं वा. एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चउमासियं, सातिरेगं चउमासियं, पंचमासियं, सातिरेगं पंचमासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासि-

अर्थ

तो एक महिने वाले को दो मासिक, दो महिने वाले को तीन मासिक, तीन महिने वाले को चार मासिक, चार महिने वाले को पांच मासिक और पांच महिने वाले को छ महिने का प्रायश्चित आवे ॥ इस उपरान्त किसी भी प्रायश्चित का स्थान सेवन कर कपट सहित तथा कपट रहित किसी भी प्रकार आलोचना करे तो भी छ:ही महिने का प्रायश्चित आता है ॥ ४ ॥ अब मासिकादि प्रायश्चित से कुछ अधिक प्रायश्चित आश्रिय कहते हैं—जो साधु चौमासिक तथा चौमासिक से कुछ अधिक, पांच मासिक तथा पांच मासिक से कुछ अधिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन कर जो कपट रहित आलोचना करे तो चौमासिक वाले को चार महिने का, चार मासिक से कुछ अधिक वाले को चार मासिक से कुछ अधिक, पांच मासिक वाले को पांच महिने का, पांच महिने से कुछ अधिक वाले को, पांच महिने से कुछ अधिक प्रायश्चित आवे. और जो कपट सहित आलोचना करे तो चौमासि-

यं वा सातिरेगं पंचमासियं वा, छमासियं वा, ॥ तेणं परं पलिउंचियं वा अपलिउंचियं वा, आलोएमाणस्स तं चेव छमासियं ॥ ५ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयरं पडिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स

को पांच मासिक. चौमासिक से कुच्छ अधिक वाले को पांच मासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक वाले को छ महिने का और पांच मासिक से से कुच्छ अधिक वाले को भी छ ही महिने का प्रायश्चित्त आता है इस उपरांत जितना भी प्रायश्चित का स्थानक सेवन करे और कपट रहित तथा कपट सहित आलोचना करे तो छ ही महिने का प्रायश्चित्त आता है. क्यों कि इसउपरांत प्रायश्चित्त नहीं है ॥ ८ ॥ अब प्रायश्चित्त उतारते बीच में पुनः प्रायश्चित्त का स्थान सेवन करे जिस आश्री कहते हैं—जो साधु चौमासिक तथा चौमासिक से कुच्छ अधिक, पांच मासिक तथा पांच मासिक से कुच्छ अधिक प्रायश्चित का स्थानक बहुत लोग जाने इस प्रकार सेवन कर फिर कपट सहित आलोचना करे तो उसे सर्व संघ के सन्मुख प्रायश्चित दे× फिर उस की शक्ति का विचार कर गुरु आज्ञा देवे कि—यह कल्प स्थित है इस लिये इस का प्रायश्चित पूर्ण होवे वहां तक वांचनादि

× क्यों कि जिस से अन्य को भी भयोत्पन्न होवे और वे वैसा काम नहीं करे.

**सूत्र** — ठवणिज्ज ठवेइत्ता करणिज्ज वेयावडियं ठवितेत्ति, पारसंचिया सार [illegible] आरुहियव्वेसिया-१ पुव्वं पडिसेवितं पुव्वं आलोइयं, २ पुव्वं पडिसेवियं पच्छा-आलोइयं, ३ पच्छा पडिसेवियं पुव्वं आलोइयं, ४ पच्छा पडिसेवियं पच्छा

**अर्थ** — की सहायता करो. जो अन्य साधु उस की सहायता करे और जो अनुहारी है परंतु दःकल्पासेवित है अर्थात् जिस की समाचारी शुद्ध नहीं है उन के लिये भी जो गुरु आज्ञा देवे तो वाचनादि की सहायता करे, अनुहारिक होने आया अर्थात् जिस का प्रायःश्चित पूर्ण होने आया उस को उस की वैयावच में स्थापन करे. और जो किसी साधु ने गुरु–कोई भी नहीं जाने इस प्रकार दोष स्थान सेवन किया हो+ उसे गुरु प्रायःश्चित देकर उक्त प्रकार ही प्रायःश्चित उतरावे. और वह प्रायःश्चित का स्थानक उतारता मध्य में दूसरा प्रायश्चित्त का स्थान सेवन कर ले तो उस का भी प्रायःश्चित प्रथम के प्रायःश्चित में वृद्धि करे. आलोचना के ४ भांगे—१ प्रथम दोष सेवन कर प्रथम ही आलोचना करे, २ प्रथम दोष सेवन कर पीछे आलोचना करे, ३ प्रथम आलोचना कर फिर दोष सेवन करे, और ४ पीछे दोष सेवन करे और पीछे ही आलोचना करे. और भी आलोचना के ४ भांगे–१ कपट रहित

+ इस का दोष जो सब के सन्मुख प्रगट करे तो इस प्रगट करने को इतना ही प्रायःश्चित आवे जितना इस दोष का आवे, यहां तु पंथ स्पष्ट की लखी है.

सूत्र

आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए, पलिउंचियं, २ अपलिउंचिए पलिउंचियं, ३ पलिउं-चिए अपलिउंचिए, ४ पलिउंचियं, पलिउंचिउंचियं—आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं ॥ ६ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, पंचमासियं वा, एवं जाव

अर्थ

दोष सेवन कर कपट रहित ही आलोचना करे, २ कपट रहित दोष सेवन कर कपट सहित आलोचना करे. ३ कपट सहित दोष सेवन कर कपट सहित आलोचना करे और ४ कपट सहित दोष सेवन कर कपट सहित ही आलोचना करे कितनेक इन चार भांगों का यह भी अर्थ कहते हैं—१ आलोचना किये पहिले विचार करे की कपट रहित आलोचना करूंगा और कपट रहित ही आलोए करे. २ आलोचना करते पहिले विचार करे कि कपट रहित आलोचना करूंगा और कपट सहित आलोचना करे. ३ आलोचना करते पहिले विचार करे कि कपट सहित आलोचना करूंगा और कपट रहित आलोचना करे. और ४ आलोचना करते पहिले विचारे कि कपट सहित आलोचना करूंगा और कपट सहित ही आलोचना करे. इन सब कर्मों को विचक्षण आचार्य उस की निद्रा भावनादि से जान जावे और वह जिस प्रायश्चित्त को योग्य होवे सब प्रायश्चित्त एकत्र कर उसे देवे. परन्तु सब को एकसा प्रायश्चित्त देवे नहीं ॥ ६ ॥ इसे ही बहु वचन से कहते हैं.—जो साधु बहुत वक्त चार मासिक पांच मासिक प्रायश्चित्त के स्थान में स्थापन किया हुआ परिहारिक बना हुआ पुनःकोइ बहुत चौमासिक दोष

...णिविसमाणे पडिसेवि, सेविकासिणं, तत्थेव आरुहियव्वे सिया ॥ ९ ॥ जे भिक्खू चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारट्ठाणाणं, अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलो.ज्जा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्ज ठइत्ता, करणिज्जं वेयावडिया, ठविते परिसेवित्ता सेविकासिणो तत्थेव आरुहियव्वेसिया—१ पुव्विंपडिसेवितं पुव्वं

अर्थ—...का स्थान सेवन कर आलोचना करे तो उसे पुनः प्रायश्चित देकर पहिले के मार्ग में शुद्धि करे ॥ ९ ॥ जो साधु चौमासिक कुछ अधिक चौमासिक, पंच मासिक, कुछ अधिक पंच मासिक प्रायश्चित के स्थानक में का किसी स्थान का सेवन कर जो कपट सहित आलोचना करे तो उसे परिहारिक तप में स्थापन करे, और उस की वैयावच में अन्य साधुओं को स्थापन करे. कदाचित वह परिहारिक तप करता हुआ अन्य किसी दोष स्थान का सेवन करले तो पास आलोचना करावे, आलोचना का विशेष कहते हैं—अनेक प्रायश्चित के स्थानक का सेवन करने वाले अनेक साधुओं में से १ कोइ पहिले सेवन किये दोष की पहिले आलोचना करे, २ कितनेक पहिले सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे, ३ कितनेक पीछे सेवन किये दोष की पहिले आलोचना करे, और ४ कितनेक पीछे सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे. और भी—१ कितनेक सरलता से आलोचने करने का विचार कर,

आलोइयं, २ पुव्वंपडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं ३ पच्छापडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं पच्छा पडिसेवित्तं पच्छा आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए अपलिउंचियं, २ अपलिउंचिए, पलिउंचियं ३ पलिउंचिए अपलिउंचियं ४ पलिउंचिय पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वामेव सकयं साहणिज्जं ॥ जे एवं बहुसोवि एयाए पट्ठवगाए पट्ठविए णिव्विसमाणे पडिसेविज्जा सेविकासिणो तत्थेव आरुहियव्वेसिया ॥ ८ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, साइरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, साइरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारठाणाणं अण्णयरं

सरलता से ही आलोचना करे, २ कितनेक सरलता से आलोचना का विचार कर कपट से करे, ३ कितनेक कपट से आलोचना करने का विचार कर सरलता से करे, और ४ कितनेक कपट से आलोचना का विचार कर कपट से आलोचना करे. इस प्रकार आलोचक के अभिप्राय पर से मनोधार से रि १ ण आचार्य भेद को पहचान उन की आलोचना प्रमाने सब प्रायश्चित एकत्र कर साथ ही देवे. ऐसे ही बहुत मासिक प्रायश्चित में स्थापन किये हुवे. प्रायश्चित का तप करते थोडा तप बाकी रहे तब पुनः किसी दोष स्थान का सेवन करे तो पुनः उसे उस दोष का जितना प्रायश्चित हो उस में स्थापन करे ॥ ८ ॥ अब अधिक दोषाश्रिय कहते हैं—जो साधु बहुत चौमासिक तथा चौमासिक से कुछ अधिक, बहुत पंच मासिक तथा पंच मासिक से कुछ अधिक इन दोष स्थान में से

मूल

पारिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, ठाविएवि पडिसेविता सेवि कसिणे तत्थेव आरुहियं सिया-१ पुव्विं पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं २ पुव्विं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं ३ पच्छा पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं ४ पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं ॥ १ अपलिउंचिए अपलिउंचियं १ अपलिउंचिए पलिउंचियं २ पलिउंचिए अपलिउंचि-

अर्थ

किसी दोष स्थान का सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे परिहारिक तप में स्थापन करे. अन्य साधुओं को वैयावच में स्थापन करे. वह परिहारिक तप करता हुआ बीच में और अन्य दोष स्थान सेवन करे तो उस दोष का जितना प्रायश्चित हो उतना पूर्ण प्रायश्चित उसे देवे. इस का भी विवरण इस प्रकार ४ भांगे-१ प्रथम सेवन किये दोष की प्रथम आलोचना करे, २ प्रथम सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे ३ पीछे सेवन किये दोष की प्रथम आलोचना करे, और ४ पीछे सेवन किये दोष की पीछे आलोचना करे. अथ-१ कपट रहित सेवन किये दोष की कपट रहित आलोचना करे २ कपट रहित सेवन किये दोष की कपट सहित आलोचना करे. ३ कपट सहित सेवन किये दोष की, कपट रहित आलोचना करे, और ४ कपट सहित सेवन किये दोष की कपट सहित —ना

य, ४ पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणीयं ॥ १ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चउमासियं वा, सातिरेगं चउमासियं वा, पंचमासियं वा, सातिरेगं पंचमासियं वा, एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारठाणं पडिसेवित्ता, आलोएज्जा—पलिउंचिय आलोएमाणस्स ठवणिज्ज ठवइ. करणिज्जं वेयावडियं ठवि तेवि पडिसेवित्ता सेविक्कसिणे तत्थेव आरुहियव्वं सिया ॥ १ पुव्वं पडिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं, पुव्वं पडिसेवित्तं पच्छा आलोइय, पच्छा परिसेवित्तं पुव्वं आलोइयं

जैसे जिस प्रकार आलोचना करे उस का प्रायश्चित्त प्रदान कर वीतराग आचार्य उसे देवे ॥ ९ ॥ अब थोडा प्रायश्चित्त पाती रहे दोष लगावे उसे आश्रय करते हैं—जो साधु बहुत वक्त चौमासिक कुच्छ अधिक चौमासिक, पंचमासिक कुच्छ अधिक पंचः मासिक इन प्रायश्चित्त स्थान में के किसी एक प्रायश्चित्त का स्थान सेवन कर कपट सहित आलोचना करे तो उसे योग्य प्रायश्चित्त दे. प्रायश्चित्त तप करावे. अन्य साधुको वैयावच मे रखे. यह प्रायश्चित्तका तप करता हुआ पुनः किसी दोष स्थान का सेवन करले तो पीछा उस ही परिहारिक तप से स्थापन कर संपूर्ण तप पीछा करावे. विशेष—१ प्रथम लगा दोष प्रथम आलोवे. २ प्रथम लगा दोष पीछे आलोवे, ३ पीछे लगा दोष प्रथम आलोवे, और ४ पीछे लगा दोष पीछे आलोवे. तथा—१ सरलता से आलोचना करने का विचार

सूत्र

पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं ॥ अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए, पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं ॥ जे एवं वट्टमोत्ति एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए णिव्विसमाणे परिसेवेति, सेवि कसिणे, तत्थेव आरुहियव्वेसिया ॥ १० ॥ ( १ ) छमासियं परिहारठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेविचा आलोएज्जा, अहावरा वीसइ राइ दिय आरोवणा, आदि मज्झो अवसाणे, सअट्ठे सहेउं सकारणं

अर्थ

कर, सरलता से करे, २ सरलता से करने का विचार कर कपट से करे, ३ कपट से करने का विचार कर सरलता से करे और ४ कपट से आलोचना करने का विचार कर कपट से आलोचना करे. आलोचक जिस प्रकार आलोचना करे उस का आचार्य पूर्णता से विचार कर सब प्रायश्चित एकत्र कर उसे प्रायश्चित देवे. ऐसे ही बहुत वक्त सेवन किया का भी कहना. उक्त प्रकार प्रायश्चित में स्थापन किया हुवा प्रायश्चित की समाप्ति कर निकला हुवा पुनः कोइ प्रायश्चित का स्थान सेवन करे तो फिर उसे प्रायश्चित आरोपन कर उस में स्थापन करे ॥ १० ॥ [ १ ] किसी साधु को छ मासिक प्रायश्चित के तप में स्थापन किया, वह प्रायश्चित का तप करता हुवा बीच में दो मासिक प्रायश्चित आवे ऐसे दोष स्थान की सेवन कर [ कपट रहित ] आलोचना

सूत्र

अहाणं मइरित्तं तेणं परं सवीसइ रायाइदोमासि ( २ ) पंचमासियं वा, परिहारठाणे पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिमेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया अरो णा, आदि मज्झ अवमाणे सअट्ठे सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेणं परं सवीसइ राइया दो मासी ( ३ ) एव चउमासियं, जाव सवीसइ राइया

अर्थ

करे, तो उस को वीस रात्रि अधिक का प्रायश्चित देवे. अर्थात् छ मास उपरांत वीस रात्रि पर्यंत और तप करावे. और जो वह वक्रता से आलोचना करे, तो उस का आदि मध्य अर्थ सहित हेतु सहित कारण सहित कमी नहीं ज्यादा नहीं. उस छ मास तप के उपरांत ( अलग ही ) दो महिने और वीस राश्री का प्रायश्चित देवे [ २ ] कोई साधु पांच मासिक प्रायश्चित का तप करता हुआ बीच में दो मासिक प्रायश्चित आवे ऐसा दोष स्थापन सेवन कर ( जो कपट रहित ) आलोचना करे तो उस को उप तप उपरांत वीस रात्रि का अधिक प्रायश्चित देवे और जो वह कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदी मध्य अंत अर्थ सहित हेतु सहित कारण सहित कमी नहीं ज्यादा नहीं विचार कर उस तप के उपरांत दो महिने और वीस रात्रि का प्रायश्चित देवे. ॥ [ ३ ] चौमासिक प्रायश्चित का तप करता को वीस रात्रि अधिक दो महिने का प्रायश्चित देवे, [ ४ ] ऐसे ही तीन मासिक प्रायश्चित का तप करता, [ ५ ] ऐसे ही दो मासिक प्रायश्चित का तप करता, और [ ६ ] ऐसे ही एक मासिक

सूत्र

दोमासी ( ४ ) एवं तेमासियं ( ५ ) दो मासियं ( ६ ) मासियंति जाव सवीसइ राइया ॥ ११ ॥ ( १ ) दो मासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अद्दए दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइ राइया आरोवणा आदि मज्झे अवसाणे सअट्ठे सहेउ सकारणं अहिण मइरित्तं तेण परं दसराया तिणिमासी ( २ ) दसराया तिमासिय परिहारठाणं जाव तेणं परं चत्तारि -

अर्थ

प्रायश्चित का तप करता हुआ भी जो बीच मे मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन करे तो उसे बीस रात्रि का अधिक प्रायश्चित देवे. जो कपट सहित आलोचना करे तो प्रथम ही दो महिने और बीस रात्रि का प्रायश्चित देवे ॥ ११ ॥ ( १ ) अब कोइ साधु ऊपर कहा दो महिने और बीस अधिक प्रायश्चित का तप करता हुआ बीच में दो महिने के प्रायश्चित के स्थानक का सेवन करे कपट रहित आलोचना करे तो फिर भी उसे बीस रात्रि का प्रायश्चित देवे और जो वह कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि मध्य अंत अर्थ हेतु कारण सहित न्यूनाधिकता रहित विचार कर पहिले के प्रायश्चित से ( ८० रात्रि ) के उपरांत बीस रात्री अधिक करे अर्थात् सब १०० रात्रि ( तीन महिने और दस रात्रि ) का प्रायश्चित आवे ।

मासी ( ३ ) चउमासियं परिहारठाणं जाव तेण परं सवीसइ राइया चत्तारि मासी [ ४ ] सवीसइ राइया चउमासियं परिहारठाणं जाव तेणंपरं सदसराया पंचमासी [ ५ ] सदसरायं पंचमासियं परिहारठाणं जाव तेणं परं छमासियं ॥ २ ॥ ( १ ) छमासियं परिहारठाणं पठावितए अणगारे अंतरा मासियं परिहारठाणं पडिसेविता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठे

साधु वह तीन महिने और दशदिन का प्रायःश्चित का तप करते पुनः कोइ दो मासिक प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन करलेवे तो उस को वीस रात्री का प्रायःश्चित देवे, तब ( प्रथम के तीन महिने और १० दिन में यह २० दिन मिलाने से ) चार महिने का पूर्ण प्रायःश्चित हुआ ( ३ ) कोइ इस चार मासिक प्रायःश्चित का तप करता बीच में दो मासिक प्रायःश्चित का दोष स्थान सेवन करे उसे चार महिने उपरांत वीसदिन का प्रायःश्चित देवे [ ४ ] जो चार महिने वीसरात्री का तप करता हुआ दो मासिक प्रायःश्चित का दोष स्थान सेवन करे तो उसे उस उपरांत पांच महिने दश रात्रि का प्रायःश्चित देवे [ ५ ] पांच महिने दश रात्रि का तप करता दो मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन करलेवे तो पूरण छ महिने का प्रायःश्चित देवे ॥ १२ ॥ ( १ ) छ मासिक प्रायःश्चित का तप करता साधु बीच में

सूत्र

सहेउं सकारणं अहिण मइरित्तं तेण परं दिवड्डोमासी (७) एवं पंचण्हमासियं मासमाणस्स ( ३ ) चउमासियं ( ४ ) तिमासियं [ ५ ] दोमासियं परिहारट्ठाणं [६] मासियस्स जाव तेण परं दिवड्डोमासी ॥ १३ ॥ (१) दिवड्डमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरामासिय पडिसविता आलोएज्जा, पलिखया आरोवणा आदि

अर्थ

एक महिने का प्रायःश्चित आवे ऐसा दोष स्थान सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उस को पन्द्रे दिन का प्रायःश्चित देवे. और वह जो कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि मध्य अंत का अर्थ हेतु कारण सहित विचार कर दिनसंख्या सहित प्रथम के प्रायःश्चित के उपरांत देह [ १॥ ] महिने का प्रायःश्चित देवे ( २ ) एवं ही दो मासिक ( ३ ) चौमासिक ( ४ ) तीन मासिक ( ५ ) द्विमासिक और ( ६ ) एक मासिक किसी भी प्रकार का प्रायःश्चित उतारने का तप करता हुवा बीच में एक मास का प्रायःश्चित का दोष स्थान सेवन कर उस की कपट रहित आलोचना करे तो उस के तप में पन्द्रह दिन की वृद्धि करे. और जो कपट सहित आलोचना करे तो उस तप से अलग ही एक महिना और पन्द्रे दिन का तप कर प्रायःश्चित देवे ॥ १३ ॥ ( १ ) यदि उस देढ मासिक प्रायःश्चित तप को करता हुवा बीच में एक मासिक तप आवे ऐसा प्रायःश्चित का स्थान सेवन कर कपट रहित आलोचना करे, तो उसे फिर पन्द्रह दिन का प्रायःश्चित देवे और जो वह कपट सहित आलोचना

आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठे सहेउं सकारणं अहिण माइरित्तं तेणं परं स पंचरा इया तिण्णिमासिया ( ३ )स पंचराइ निमासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा-मासियं परिहारठाणं पडिसेविचा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेणं परं सवीसइ राइया तिणिमासी ( ४ ) सवीसराइया तिण्णमासियं परिहारठाण पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिसेविचा आलोएज्जा अहावरा वीसराइया आरोवणा जाव तेणं परं वीसराइया चत्तारिमासी [ ५ ] दसराइया

रहित आलोचना करे तो उस को वीस दिनका प्रायश्चित देवे, जो वह कपटसहित आलोचन करे तो उसको आदि मध्य अंत का प्रमाण कर. उसे तीन महिने पंदरे दिनका प्रायश्चित देवे. ( अढाइ महिने पर वीस दिन अधिक करने से इतना प्रायश्चित होता है ) ( ३ ) वह तीन महिने पांच रात्रि का तप करता हुआ साधु मध्य में एक महिने का प्रायश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे पाक्षिक [ १५ दिन ] का प्रायश्चित देवे जो वह कपट से आलोचना करे तो तीन महिने उपर वीस रात्रि का प्रायश्चित देवे ( ४ ) उस तीन महिने वीस रात्रि का तप करता हुआ मध्य में दो मासिक प्रायश्चित स्थानका सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे वीस रात्रि के प्रायश्चितकी आरोपना करे और जो कपट से करे तो चार महिने ऊपर दस दिन का प्रायश्चित देवे. ( ५ ) चार महिने

चउमासियं परिहारठाण पठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारठाणं पडिसेविता आलोएज्जा, आहवरा पक्खिया आरोवणा आदि मज्झे अवसाणे जाव तेण परं पचण्ण पंचमासियं ( ६ ) पंचराया पंचमासिया परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारठाणं पडिसेवित्ता, आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा, आदि मज्झे अवसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहिणं माइरित्तं तणं परं अद्धछमसी ( ७ ) अद्धछट्ठ मासियं परिहारठाणं पठविए अणगारे अंतरा मासियं

दस दिनका तप करता बीचमें एक महिने का प्रायश्चितका स्थानक सेवनकर कपट रहित आलोवे तो उसे पन्द्रह दिनका प्रायश्चित दे जो कपट युक्त आलोचना करे तो पांच दिन कम पांच महिनेका प्रायश्चित देवे [ ६ ] पांच दिन कम महिने का तप करता हुआ बीच में दो मासिक प्रायश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे बीस रात्रि का प्रायश्चित आरोपे, जो कपट सहित करे तो आदी मध्य अंत को अर्थ हेतु कारण सहित हिनाधिकता रहित तपास कर साढा पांच महिने का प्रायश्चित देवे, पांच दिन कम ( पांच महिने में बीस दिन मिलाने से साढे पांच महिने होते है ) ॥ ७ ॥ साढे पांच महिने का तप करता हुआ साधु बीच में एक महिने का प्रायश्चित का स्थानक सेवन कर कपट रहित आलोचना करे तो उसे पाक्षिक तप देवे, और जो वो कपट सहित आलोचना करे तो उस का आदि

भम्म धूण धारणं चरर ॥ पुजरस अगेग धारणिज्जं सिसपसिरसोव भोजंत्र ॥ २ ॥
इति निसहीऽभयणे वीसमोद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ * * *

रिन शिक्षा धारन करने योग्य शिष्य प्रति शिष्यों के पठन के लिये लिखी है ॥ ३ ॥ इति निशीत सूत्र का वीसवा उद्देशा समाप्तम् ॥ २० ॥ * * *



# इति षड् विंशातितम्

# ॥ निशिथ सूत्र तृतिय छेद समाप्तम् ॥

* वीर संवत् २४४६ जेष्ठकृष्ण ७ चंद्रवार. *

थम्म धूंग धरणं पत्थर ॥ पुजरस अगोग धारणिज्जं सिसपसिरसोव भोजंव ॥ ३ ॥
इति निसहीज्झयणे वीसमोद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥ • • •

हित शिक्षा धारन करने योग्य शिष्य प्रति शिष्यों के पठन के लिये लिखी है ॥ ३ ॥ इति
निशीत सूत्र का बीसवा उद्देशा समाप्तम् ॥ २० ॥ * * •



## इति षट् विंशतितम्

## ॥ निशिथ सूत्र तृतिय छेद समाप्तम् ॥

*वीर संवत् २४४६ जेष्टकृष्ण ७ चंद्रवार. *

काम धुण्ण घाणं तरर ॥ पुंजाम्म भोग धाराणिज्जं तिसगसिरसोव मोअंत ॥ २ ॥
इति निसहिज्झयणे वीसमोद्देसो सम्मत्तो ॥ २० ॥

शिव दिला पावन कारने पोता शिष्य भति शिष्यों के पठन के लिये लिखी है ॥ २ ॥ इति निशीथ सूत्र का वीसवा उद्देशा समाप्तम् ॥ २० ॥



## इति षड् विंशतितम्

## ॥ निशिथ सूत्र तृतिय छेद समाप्तम् ॥

वीर संवत् २४४६ ज्येष्ठ कृष्ण ७ चंद्रवार.